ब्रज साहित्य का एक उपादेय रत्न

श्रीवृहदुत्सव-मणिमाल

श्रीरूपरसिकदेवाचार्यजी महाराज

महात्मा श्री बंशी अलिजी के कृपापात्र शिष्य श्री किशोरी अलि(भट्ट जगन्नाथ)जी कृत-

श्रीरूप रसिक देवाचार्य जी महाराज की

प्रशस्तिः

(१)

रूप अनुपम मोहनी मोहन रसिक सुजान ।
रूप रसिक यह नाम धरि प्रगटे नेह निधान ।।

पद राग भैरोंः—

रूप रसिक से रूप रसिक वर !
दिव्य महाबानी रस सानी प्रगट करन प्रगटे अवनी पर ।।
अति रहस्य रसकी परिपाटी लखिजे इनकी कोहु न सर वर ।
उमड़ि घुमड़ि हिय भाव घटा सों बरषत नितप्रति आनन्द के झर ।।
गौर श्याम के रंग झकोरें कोरे जो आये नारी नर ।
नैननि की सैननि सों 'अलि' कों दरसायो नव कुञ्ज केलि घर ।।

राग सूहो-बिलावल मंगलः—

जै जै रूप रसिक रस रूप बखानियें । निति दम्पति की सहचरि निज मन आनियें ।।
लाड लड़ाय रिझावत बन की रानियें । पावत रीझ अपार हार उर मानियें ।।
मानियें रिझवार की यह निकटवर्तिनि सखी है । लाडिली की कृपा तें सोइ मैं भली बिध लखी है ।।
रहत प्यारी छबि छकी रस पगी ज्यौं मधु मखी है । केलि पंकज मिथुन की निज नैन भृङ्गनि चखी है ।।
जै जै रूप रसिक रस रूपा भूपा सहचरी । हरिप्यारी रंग देवी की है परिकरी ।।
रहत निरन्तर संग रंग रससों भरी । न्यारी नेक न होत एक पल छिन घरी ।।
छिन घरी नहि होत न्यारी द्दष्टि तें इत उत कहूं । महल में जे टहल की शुभ केलि निरखत है तहूं ।।
या तें मया करि जानि अपनी कीजिये ज्यौं संग रहूं । बिहारिनि प्रान समान तजि कौन की सरनो गहूं ।।
जै जै रूप रसिक की रीति रसिकनी जानई । अति अगाध मन बचन सोइ रस सानहीं ।।
निगम अगोचर राधा आराधन लही । सोई निज बानी सों नीकी बिधि कही ।।
कही बानी सुरस सानी ब्रज बिपिन रससों अटी । प्रिया प्रियतम पाइबे की मनों निगिन शुभ बटी ।।
कहनि रहनि एकसी जगमगत जग सों है छटी । सो रूप रसिक कृपालु मोकों देहु नवकुञ्जन तटी ।।
जै जै रूप रसिक रस रीति सिखावन आगरी । सैननि ही दरसावत पिय नव नागरी ।।
को समुझै यह रीति हिये की लागरी । सुकृती कोउ जन लखै भूरि बड़ भागरी ।।
भाग तिनकी जगत में ते प्रगट दरशन पाइ है । रसरीति प्रीति प्रतीति की लहि सुजस मंगल गाइ हैं ।।
धारि हिय में भाव दृढ़ पद कमल शीश नवाइ है । गौरी "किशोरी" के हिये में प्रान सम ते भाइ हैं ।।

* श्रीराधा-सर्वेश्वरो जयति *

श्री भगवन्निम्बार्क महामुनीन्द्राय नमः

श्री बृहद् उत्सव मणिमाल

रचयिताः—

श्रीरूपरसिक देवाचार्यजी महाराज

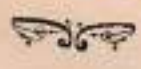

सम्पादकः—

व्रजवल्लभशरण वेदान्ताचार्य पंचतीर्थ

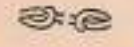

प्रकाशकः—

श्री माधुरीदास

ुति

वसंत पंचमी

२०१८

फरवरी

१९६२

बृहद् उत्सव मणिमाल---

पद-सूची

पद	पृ० सं०	पद	पृष्ठ संख्या	पद	
बसन्त बँधावो (बसन्तोत्सव)	१	रंग रंगीले छबीले	१२	झूलत फूले फूल (फूलडोल)	३२
आज बसन्त बन्यो	''	प्रीतम प्रानप्रिया	१२	देखहु री देखहु	
तन बन बसन्त	३	मेरें को खेल में		संपति दंपति केलिहि	३३
आज सांवरे की		सुनि होरी होरी को		फूले फूले राजत हैं	
देखो देखो शोभा		एरी सखी नवरंग		आज अक्षय (अक्षय तृतीया)	
दोउ नवललाल कैसें		आई हुलसि हियें	१५	बनी छबि चन्दन	३४
आजु हगन भरि देखि		लाडिली रवन संग	१६	सीतल आज उसीर	
नेंक हरें हरें		दोउ लाल रमें	१८	स्याम घन तन चन्दन	
बिहरत बसन्त		रंग महल राय	१९	जल क्रीड़ा क्रीड़ा (जलबिहार)	
रंग राख्यो हो		आज समय नीको	२१	प्यारी पिया मिलि	३५
छिरकत छबि छैल	४	नवल खेल नव		अरस परस मिलि	
हो घनश्याम मरो		मेरी बहियाँ पकरि		सुभग सुकर सरोवर	
मो पर तुम हू		तोसों को खेलें		देखहु री शोभा (रथोत्सव)	
ऐसें खेलो हो दोउ		मारो री मारो		रथ पर राजत	३६
बिहरत आज बसन्त	५	प्यारे हम नाहीं		रथ पर राजनि	
अलि हो मिलि कल		प्यारे तुम अनत	२३	बैठे आज मनोहर	३७
मिथुन कुंवर खेलत		खेलत रंग भर		अहो नेंक चलियें (वर्षाऋतु)	
आज बसन्त शिशिर		प्यारे तुम जैसें		अहो लाल भीजत हैं भीनें	
कहा कहिये कुसुमाकर		लालन भले बनें		बरसत नेह मेह रति	
खेलत खेलत भयो	६	बराजोरी होरी खेलें	२४	भीजि दोउ उरझि	
जो तुम चाहति	७	अनोखे होरी के		शोभा देखि री यह	३८
सो तन बसंत		अनोखे खिलार घर		हमारे माई राधामाधव	
अब कै खेल फिर		खेलें हौलें हौलें		सखी री स्यामा	
यह अति लागत है		आव री रस चांचरि	२५	करो किन कोटि यतन	
जुवराज जुगल खेलत		माते आनन्द के	२६	सदा रहो बरसत रस	३
श्याम घन आये (फागोत्सव)	८	खेलत होरी में गोरी		घनन घनन घन	
रंग होरी सांवरे		लै पुन चोवा को		आज रस रेलनि	
होरी खेलन आने		ऐसे कहा जु खिलार	२७	मदन मदमाति मोर	
ये सुकुमार खिलार		खेलत होरी मरोर		चलो मिलि आज	
होरी जिन खेलो मोसों	९	लोचन लालची ललचोयें		थोरी थोरी बूंदन	
आवो आवो सजन		आज फाग अनुराग		आज अब देखो री	
एरी सखी बरस सरस		आवो री मिलो (डोलोत्सव)	२८	झनक नूपुर की	
हो हो हो हो होरी	१०	चलि देखो री डोल	२९	चलो बलि कदम	
घुरि मुरि खेल	११	आज छवि नैन	३१	पीताम्बर लीजिये मोहि	
नवल किसोर किसोरी		री नव-रंग झकोरनि	३२	कुचावलि चूंनरी रंग	

पद	पृष्ठ सं०
सखी लूहरि गांवें	४१
स्यांम घन आये री	४३
नैन्हीं नैन्ही लागत	
स्यांम घन उमंगि	
नैंक विलोकि री इक	४४
देखौ सखी सुन्दरता	
स्यांम गुन स्यांमा जू	४५
देखौ माई सुन्दरता	
आज मैं देखे रस	
आज छवि स्यांमा स्यांम	४६
घटा उनि बरसानें	
आज सखी मोहन	४७
नैंना प्रकृति गही	
लोचन लालची	
प्रिया जू झूलत (हिण्डोलोत्सव)	
प्रिया जू कों पीरैं स्याम	४८
आज सखी झूलत	
झूलत स्यांमा स्यांम	
रंग हिंडोरना झूलत	
झूलत फूले नवल किसोर	४९
आज या रमकनि की	
नंद कौ नव रंगी लाल	५०
बनें री बनें ऐसी	
सुहाई री आई अति (तीज)	
अद्भुत एक हिंडोरौ माई	५१
पिय हिय झूलति	
दोउ जन झूलत प्रेम	
झूलत प्रेम पुलक तन	५२
परस्पर दांन करत	
हिंडोरें झूलत दोउ	
लाल हम नाहिन चढ़त	५३
पिय कों झूलवन	
लाल उर झुलवत	
हिय मनि पियहि	
दोउ जन झूलत प्रेम	५४
दोउ जन झूलत नैंन	
आज हम देखी	

पद	पृष्ठ सं०
आज पवित्रा को (पवित्रा)	५५
देखि री देखि पवित्रा	
पवित्रा रचे हैं पाट	
आज दिन परम पवित्र	
करो मिलि (रक्षाबन्धन)	५६
रख्या बांधत रंग रली	
परस्पर राखी बांधत	५७
रख्या बांधति विधि	
मंगल साज (श्रीकृष्णजन्म)	
कोउ आज महा मंगल	५८
हौं बलि बलि जाऊं	५९
बजत बधाई आज	
आज सखी आनन्द कौ	६०
आज बृज ओरहि ओभा	
री जशोदे और नहीं	
धन्य धन्य गोकुल	६१
है अब आई लैंन	
महर कें बाजत आज	
बधाई नन्द कै बाजें	६२
भयो आज चीत्यौ मेरे	
सुन्दर सोहनी मन की	६३
आज नंद दरबार	६४
ए वो श्रीवृजराज	६५
एरी आज की एरी	६६
महर कें मन्दिर	
हेलारे आज बधायों	६८
सुनियो रे बाजत	
बोलें सब हे हे हेरी	७०
बधाई दीजिये भयो	
आजि आनन्द भयो	
ब्रह्मलोक श्रीब्रह्मा नारद	७१
सनक सनन्दन सनत	७२
बृजपति पुर ऋषिराज	७४
मंगल में महा मंगल	
आये सब गुनी दुनी	७६
लाला तेरी बरषुरदार	७७
लाला तेरी जीवै राज	

पद	पृष्ठ सं०
महाराज श्री महावाहु	७७
अभिलाष लाख	७८
गाऊं महाराज राज	
प्रभु जी मेंडा दिल चीता	
सबन मिलि आनंद	
राजा तेरे भांड भवन	
महरानें में सादी	७९
सादी हुई महरानें	
दये गज बाज केते जी	
आज महर के आंगनें	
श्रीवृषभांन (श्रीराधाजन्म)	८०
साढा दिल्ह चित्या वे	८२
गोप राज वृषभांत	
रे भैया हेरी, रे	८३
हेलारे आज बधावो	८५
मंदिलरा बाजि बाजि	
दयो अब आनंद ऐसो	८६
आज बृज फूल्यो	८७
धन्य धन्य आज की	
परम मंगल भयो	
आज बधाई हो	८८
वृषभांन कें आज	८९
बधाई माई बाजत	
रङ्ग झर लागी ही	९०
आज बधावो री	
वरषुरदार रहो	९२
सबन मन भायो	
गावत जन्म उछव के	९४
ब्रह्मलोक श्रीब्रह्मा	
सनक सनन्दन सनत्कुमार	९६
जनम सुनत श्रीकुँवरि	९७
नवल किसोरी राधा	
वरसानें वृषभांन जू	
आये सब गुनी दुनी	९९
लली तेरी जीवै राज	
महाराज वल्लव राज के	१००
अभिलाष लाख भांति	

पद	पृष्ठ सं०
गाऊँ महाराज राज	१००
साँई जी मेंडा दिल	
सबन मिलि आनन्द	१०१
राव तेरें भांड भवन	
बरसानें में सादी	
सादी भई बरसानें	
पालनें है महाराज	
श्रीराधाजू भूलें	१०२
श्रीराधाजू भूले पालनें	१०४
लली जू कौ पालनें	१०६
चलौ मिलि देखन (जलपूजन)	
सारंग गोप (रंगदेवी जन्म)	१०७
बधाई बाजत आज	
गोप गन फूले अंग	१०९
आज भई मेरे मन	
धनि धनि आज की	११०
प्रगटी श्रीरंगदेवी सुदेवी	
धनि धनि आज	
प्रगटी ब्रज में प्यारी	१११
चलहु री चलहु	
आज अजिर में निजर	
आज ब्रज बाढ्यौ	११२
हे हेरी रङ्ग सुदेवी	११३
आज प्रगटी श्री	
आनँद मोद बधावनौ	११४
मिलि पूजौ (संध्या-पूजन)	११७
साँझी हो मिलि	११८
रतन सिंहासन(विजयोत्सव)	१२०
आज विजय दसमी	१२१
सरद फूली (शरदोत्सव)	
रास में रसिक नव	१२२
राजत रास रसिक मन	
रसिक कुँवर वर दोउ	१२३
निर्तत रास कमलदल	
नृत्यत नागरी नगधरन	१२४

पद	पृष्ठ सं०
आली री रास में	१२५
निर्तत रास में	
चांदनी बिछाई और	१२६
सरस सुखदाई	
कातिक मास (कार्तिकोत्सव)	
आज कुहूकी (दीपदानोत्सव)	१२७
आज कुहू की सोभा	
आज सुभ दिन	१२८
आज दीपन की	
आज म्हारें दीवाले	
दीपदान करि बैठे	१२९
खेलत जुवा जुगल	
कहत कान्ह (श्रीगोवर्धन-पूजन)	
गिरि पूजा गोपाल	१३०
आछी सोभा बनी	१३१
जै जै गोवर्धन देव	
मो सुरपति सों वैर	
तबै बोलि सुरराज	१३२
श्रवन सुनत ही	
बरसत मेघ अपार	
हो प्रभु क्षमा करौ	१३३
धरयौ गिर धरनी	
अहो मेरे लाड़िले	
आज प्रबोधनि (प्रबोधन)	
जागौ जागौ हो	१३४
भलें जागे हो जगदीस	
करत आरती थार	
बनी तुलसी(तुलसी-विवाह)	१३५
श्रीराधाकृष्ण विवाह (ब्याह०)	
रंगरंगीली हितु (महल)	१३७
बिजनद्वादसी दिन (बिजन)	१३९
मुनि सहचरि प्रति	
आरोगत व्यञ्जन	
जेंवत जुगलकिसोर	१४०
प्रभु कौ जनम करम	

उत्तरार्द्ध एवं परिशिष्ट

पद	पृष्ठ सं०
आज सुमंल (श्रीराम-जन्म)	१४१
प्रगटे राम रघुकुल	१४३
आज बधाई परम	
बजत बधाई आज	
आज राज दशरथ	
नेति नेति वेद जाकों	१४४
आज राज दशरथ जू	
प्रथम सुमिरि श्रीगुरु(वंशा०)	१४५
वे मैं वारनें जांवां	१४८
आनंद अवध बधाई	१५०
माधौ सित (श्रीजानकी-जन्म)	
श्रीमिथुलाधिप कें	१५१
आज मिथुला मंगल	१५३
मिथलापुर बजत	
अब वंशावलि कुँवरि	१५४
महाराज लली पलना	
प्रगटे माधव (श्रीनृसिंह-जन्म)	
हिरनकसिपु पूछें	१५९
मेरो राखन हार	
सुनि जो तू सब	
ऐसो को करै	१६०
बिधिना ऐसी बिधि	
ऐसो तुम ही पैं	
प्रगटे बांवन जन	१६१
पधारे नृप बलि कें	
प्रभु जी मेरौ अङ्ग	१६२
प्रभुजी अब निज	१६३
नृप तू सांचौ	
रुचिर रङ्ग हिंडोरना	
हिंडोरे भूलत हैं	१६४
बंदौं सन्त समूह	१६५
अगुआ कहैं सुनों	
हूं ढाढी सब गोप	१६६
श्रीवृषभान कौ वंश	१६९
ढाढो के सङ्ग ढाढनि	१७०

भूमिका

★

श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के परम भावुक रसिक- साधना-सम्पन्न श्रीरूपरसिकदेवाचार्य जी से कौन अपरिचित होगा। आपने दक्षिण जनपथ के एक दाक्षिणात्य श्रेष्ठ द्विजकुल को अलंकृत किया था। बाल्य-काल से ही श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु एवं उनके धाम (ब्रज वृन्दावन) में आपकी स्वाभाविक निष्ठा थी, अतः किशोर अवस्था पूर्ण होते ही आप श्रीवृन्दावन-मथुरा आगये थे। उस समय रसिक राजराजेश्वर श्रीहरि-व्यासदेवाचार्यजी लीला विस्तार कर चुके थे, किन्तु आपकी परमनिष्ठा के कारण व्यक्त होकर उन्होंने आपको दर्शन और उपदेश दिया। यह साम्प्रदायिक ऐतिह्य परम्परागत प्रचलित है।

आपने आजीवन नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रत को पालन करते हुए-श्रीहरिव्यास यशामृत, कृपा कल्पतरु* नित्यविहार पदावली, लीलाविंशति, बृहदुत्सव-मणि- माल आदि कई ग्रन्थों की रचना की। उनमें कुछ प्रकाशित हो चुके हैं और कई एक अप्रकाशित हैं। कुछ ग्रन्थ अनुपलब्ध भी हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ में बसन्त, होरी आदि वर्ष-भर के उत्सव-महोत्सवों का मनोहर सरस वर्णन किया गया है। इस ग्रन्थ की कई प्रतियां उपलब्ध हुई हैं। उनमें रानीला वाली प्रति जो संवत् १८८६ से पूर्व लिखी गई थी+प्राचीन है। भिन्न-भिन्न प्रतियों में पाठ भेद के अतिरिक्त क्रम-विभेद भी मिलता है।

उपलब्ध सभी प्रतियों के अन्त में मणिगणना का उल्लेख इस प्रकार मिलता है:—

पद बसन्त पचीस बयालिस होरी सुन्दर। डोल च्यारि बाराह एक पद तेरह रघुबर ॥
फूल डोल पद च्यारि च्यारि अक्षय तृतीया पद। चौदह जानकी जन्म सप्त नरहरि के हरषद ॥
जलविहार के च्यारि च्यारि पद रथहू के सुनि। बरषा रितु तेतीस पचीस हिंडोरे के गुनि ॥
च्यारि पवित्रा जानि राखी के च्यारि ही। बतीस बधाई लाल प्रियाजू की उनतीस ही ॥
जल पूजा पद एक पांच पद कहिये बांवन। दस ऊपर पद पांन बधाई रंग सुहावन ॥
ईं सांझी पद च्यारि विजै दसमी के नीके। दस पद रास विलास विसद जस प्यारी पी के ॥
कातिक की पद एक सप्त दीपोत्सव के गुनि। गिरि पूजन पद च्यारि सप्त गिरिधरन हु के सुनि ॥
च्यारि प्रबोधि विचारि एक तुलसी विवाह लहि। राधाकृष्ण विवाह महल मंगल एक एकहि ॥
पद विचारि पुनि च्यारि द्वादशी विजन के वर। एक जु पद सिद्धांत तीन सौ सत्रह ऊपर ॥
दोहा:-बृहदुत्सव मणिमाल यह परम सुमंगल रूप। रूप रसिक उर धरत हीं होत स्वरूप अनूप ॥
ईं सहस्त्र पर नव सुसत पुनि चौरासबे जांनि। बृहदुत्सव मणिमाल की संख्या इतनी मांनि ॥

---

*कृपा कल्पतरु:-नागरी प्रचारणी के नोटों से ज्ञात।

+इस प्रति में एक ही लिपिकार द्वारा सर्वप्रथम ६७ पृष्ठ तक बृहदुत्सव मणिमाल, १०६ पृ० तक ६ पृ० में नित्य विहार पदावली, १२६ पृ० तक २० पृ० में हरिव्यास यशामृत, फिर २ पृ० में फुटकर पद और १५ पृ० में युगल शतक लिखा हुआ है। उसकी अन्तिम पुष्पिका में लिपिकाल सं० १८८६ उल्लखित है—वह पुष्पिका इस प्रकार है:—इति श्रीश्रीभट्टदेवजी कृत भाषा जुगल सत सम्पूर्ण शुभमस्तु संवत् १८८६ मासानांमासोत्तमे मासे चैत्र मासे शुक्ल पक्षे तिथौ सप्तम्यां ७ भृगुवासरे लिखितं हरेकृष्ण पठनार्थ महन्त भगत रामजी पुस्तक लिखितं रानीलामध्ये शुभं भूयात्।

यह मणिगणना रूपरसिकदेवजी की ही रचना है या किसी अन्य की ? क्योंकि उपलब्ध प्रतियों में इस गणना से अधिक पद हैं। कुछ पद ऐसे भी हैं जो दो-दो तीन-तीन बार कुछ अक्षरों के हेर फेर से लिखे हुए हैं और कुछ पद दूसरी छापों के हैं, एवं २-३ पदों में किसी की भी छाप नहीं है। एक बिना छाप वाला होरी का पद तो स्पष्ट रूप से पीछे से किसी का जोड़ा हुआ है। उसमें कई व्यक्तियों के नाम हैं; रूप रसिकदेवजी की भाषा से भी उसकी पृथकता स्पष्ट व्यक्त हो रही है। बिहारीदासजी और वैष्णवदासजी की छापवाले पद भी निश्चय ही लिपिकारों द्वारा बढ़ाये गये हैं और श्रीनन्दनन्दन, श्रीरघुनन्दन एवं श्रीकीर्तिनन्दनी, श्रीजनकनन्दनीजी की बधाइयों में वे दुहराये भी गये हैं। इसीसे पदों की संख्या बढ़ी हुई है। अतः बिना छाप के पद और कई बार दुहराये हुए तथा अन्य कवियों के पद-क्षेपक ही सिद्ध होते हैं। उनको छोड़ कर बसन्त २५, होरी ४१, डोल ४, फूलडोल ४, अक्षयतृतीया ४, जल विहार ४, रथ यात्रा ४, वर्षा ३३, हिंडोरा और तीज २७, पवित्रा ४, रक्षाबन्धन ४, लालजू की बधाई ३६, प्रियाजू की बधाई २७, जल पूजा १, रंगदेवी बधाई १४, सांझी २, विजयोत्सव २, शरद १०, कार्तिक १, दीपोत्सव ७, गोवर्धन पूजा ११, प्रबोधन ४, तुलसी विवाह १, युगल विवाह १, महल मंगल १, विजन द्वादशी ५, सिद्धांत १, इस प्रकार पूर्वार्द्ध में २९० पद रखे हैं।

उत्तरार्द्ध में श्रीराम बधाई १०, श्रीजनकनन्दिनीजी की बधाई ६, नृसिंह जयन्ती ७, वामन जयन्ती ५, इन २८ पदों का संकलन है। इस प्रकार ३१८ पद हो जाते हैं। अन्य कवियों की छाप वाले ७ पद भी परिशिष्ट में रख दिये हैं।

रचना काल:—मिश्रबंधुओं ने श्रीरूपरसिकदेवजी की कविता का समय अनुमानतः १७६० संवत् माना है, किन्तु उसका कोई आधार उन्होंने नहीं बतलाया। सम्प्रदाय की यह निर्विवाद मान्यता है कि श्रीरूपरसिकदेवाचार्य उन श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी के कृपा-पात्र विरक्त शिष्य थे जिनकी व्रजभाषा की उत्कृष्ट रचना महावाणी है। मिश्रबन्धुओं ने उसका रचना काल सम्वत् १५१७ माना है*। अतः महावाणीकारके साक्षात् शिष्य रूपरसिकदेवजी भी उनके ही थे। उन्होंने 'श्रीवृन्दावन माधुरी' के अन्त में उसका रचनाकाल सम्वत् १५८७ बतलाया है, अतः किसी पुष्ट विरोधी प्रमाण के अभाव में १८ वीं शताब्दी उनका समय नहीं माना जा सकता। अठारहवीं शताब्दी के वाणीकारों के उद्धरणों से भी यही पुष्ट होता है कि श्रीरूपरसिकदेवजी उनसे बहुत दिन पूर्व हो चुके थे। श्रीवंशी अलिजी के कृपापात्र शिष्य जगन्नाथ भट्ट, श्रीकिशोरी अलिजी का समय १७८०–१८६० माना जाता है। उन्होंने जो रचनायें की थीं वे खर्रों में लिख ली गई थीं, फिर सम्वत् १८३५ में खेमकरनजी ने उन खर्रों से ही एक पुस्तक लिखी थी। उसमें जहाँ सोलहवीं, सत्रहवीं शती के रसिक वाणीकारों की चर्चा की है, उसी प्रकरण में जो श्रीरूपरसिकदेवाचार्य का उल्लेख किया है वह द्रष्टव्य है:—

'रूप अनूपम मोहनी मोहन रसिक सुजान। रूप रसिक यह नाम धरि प्रगटे नेह निधान ॥…'

आगे इस पद के द्वारा श्रीकिशोरी अलि जी ने स्पष्ट कर दिया है:—

श्रीरूपरसिकदेवजी एक अद्वितीय रसिक थे। दिव्य 'महावाणी' को प्रगट करने के लिये ही उनका अवतार हुआ था। परमगोप्य-रहस्य-रस की परिपाटी के जानकारों में उनकी समता रखनेवाला कोई बिरला ही होगा। जो अधिकारी साधक उनकी शरण में आये उन्हें संकेत से ही उन्होंने कुञ्जकेलि का अनुभव करा दिया था। वस्तुतः वे श्रीप्रिया-प्रियतम की दिव्य सहचरी तथा साक्षात् रसिकेश श्रीमनमोहन ही रूपरसिक रूप से भूतल पर प्रगट हुए थे।

श्रीअलिजी ने श्रीरूपरसिकजी का एक मञ्जुल पद भी रचा है:—

---

* मिश्रबन्धु विनोद प्रथमभाग पृ० २४४ (संख्या ४२)

जै जै रूप रसिक रस रूप बखानिये । निज दम्पति की सहचरी निज मन आनिये ।*

इस पद में श्रीकिशोरीअलिजी ने श्रीरूपरसिकजी को साक्षात् रस-रूप माना है और श्यामा-श्याम की परम प्रिया श्रीरंगदेवी जी के परिकर की ऐसी सहचरी माना है जो नित्य निकुंज से एक क्षण भी पृथक नहीं हो सकतीं। अलिजी ने यह भी मनोरथ प्रकट किया है कि मुझे उन्हीं के चरणों का आश्रय मिले, मैं सदा उन्हीं के सङ्ग रहूँ, उनको छोड़कर और किसकी शरण लूं ? साथ ही साथ यह भी प्रगट कर दिया है कि—श्रीरूपरसिकजी का स्वरूप परिचय मुझे श्रीलाड़िलीलाल की अनुकम्पा से ही हुआ है, उन्हीं की कृपा से ही कभी उनके साक्षात् दर्शन भी मिल सकेंगे। जिन्होंने श्रीरूपरसिकजी के दर्शन किये होंगे वे बड़े भाग्यशाली रहे होंगे।

भागहिन को जगत में ते प्रगट दर्शन पाइ हैं ।

उन्होंने श्रीरूपरसिकजी के दर्शनों का यही उपाय बतलाया है कि दृढ़ भाव से हृदय में उनका ध्यान और नमन करने से ही साधक के हृदय में प्राणों के समान वे प्रगट हो सकते हैं। अर्थात् इन चर्म-चक्षुओं से हम उन्हें नहीं देख सकते।

श्रीरूपरसिकजी में श्रीकिशोरी अलिजी की कितनी श्रद्धा और निष्ठा थी, यह इस पद के मनन करने से स्पष्ट ज्ञात हो जाता है। उनमें इनकी इतनी निष्ठा क्यों थी, इस जिज्ञासा का समाधान श्रीअलिजी के उपर्युक्त पद की इन पंक्तियों से अच्छी प्रकार हो जाता है :—

निगम अगोचर राधा आराधन लह्यो । सोई निज बानी सों नीकी विधि कह्यो ॥
कही बानी सुरस सानी ब्रज विपिन रस सों अटी । प्रिया प्रियतम पाइबे की मनों विधि शुभ वटी ॥
कहनि रहनि एक सी जगमगत जग सों है छटी । तो रूप रसिक कृपातु मोकों देहु नव कुंजनि तटी ॥

श्रीरूपरसिकजी की बानी में निगमागम-अगोचर श्रीप्रियाजी की उपासना मिलती है, और श्रीअलिजी श्रीकिशोरीजी के अनन्य उपासक हैं। उनके गुरुदेव श्रीवंशीअलिजी का भी यही सिद्धान्त था। उन्होंने तो प्रतिज्ञा की है—

जे जे राधा नाम को भजत जगत में जान । ते ते सब हमरे सदा हैंगे प्रान समान ॥
तिन को दासंतन सदा मेरे मन बच आहि । तिनकी तो हौं कहा कहौं जे कुंवरि चरन अवगाहि ॥
श्रीगुरु ललिता रूप मम तिनको नाम रटन्त । पाऊँ सम्पति राधिका वृन्दाविपिन बसन्त ॥
(श्रीवंशीअलिजी की वाणी)

श्रीकिशोरीजी के गुण गान करनेवाले सभी महानुभावों के प्रति उन्होंने इतनी उच्च श्रद्धा प्रगट की है कि भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के अनुयायी उन्हें अपने-अपने सम्प्रदायों के ही अन्तर्गत समझ बैठते हैं।

श्रीकिशोरी अलिजी के उपर्युक्त दोनों पदों से यह भी प्रमाणित होता है कि रूपरसिकदेवजी ने स्वयं भी वाणी की रचना की थी और वे आजीवन विरक्त रूप से रहे—अर्थात् गृहस्थाश्रम को नहीं अपनाया था। उन्होंने अपने गुरुदेव श्रीहरिव्यासदेवाचार्य रचित महावाणी का विशेष प्रचार किया था।

कुछ सज्जन इन्हीं पदों के आधार पर श्रीरूपरसिकजी और श्रीकिशोरीअलिजी को समसामयिक सिद्ध करना चाहते हैं और श्रीरूपरसिकजी को ही महावाणी के रचयिता भी सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। अतः उनके तर्कों पर भी यहाँ विचार करना आवश्यक है। यद्यपि उन सज्जनों ने कई वर्षों पूर्व ही श्रीकिशोरीअलिजी की वाणी का अनुशीलन करके अपनी धारणा निश्चित कर ली थी, किन्तु उसे छिपाये रक्खा। 'भक्तमालांक' के आन्दोलन पर वह गुब्बारा फूटा और लिखित रूप में उन्होंने अपनी खोज की सूचनायें दीं। उस सूचना में वि० संवत् १८३७ आश्विन कृष्णा १२ चन्द्रवार की लिखी हुई वंशीअलि-किशोरअलिजी की प्राचीन वाणी के पृष्ठ ६, ११० और ११४ पर श्रीरूपरसिकजी सम्बन्धी पदों का उल्लेख

*श्रीकिशोरी अलि जी के ये दोनों पद प्रशस्ति रूप में इसी पुस्तक के टाइटिल पृष्ठ २ पर दिये गये हैं।

किया गया था और उस वाणी के मिलने का पता-(गोस्वामी श्रीजुगलकिशोरजी श्रीलाड़िलीजी का मन्दिर जयपुर) बतलाने की भी कृपा की। १६।१।६१ ई० को दैवयोग से जयपुर में उस वाणी के दर्शनों का हमें भी सौभाग्य मिला, किन्तु १८३७ वाली प्रति (बंशी अलिजी की वाणी) में कहीं भी श्रीरूपरसिकजी सम्बन्धी कोई भी पद देखने में नहीं आया। १८३५ पौष शुक्ला ५ बुधवार को लिखी हुई वाणी में वे पद अवश्य मिले, किन्तु ६-११०-११४ पृष्ठों पर न मिलकर वे २२-३२-२३६-२४१ और २५१ पृष्ठों पर मिले। पता नहीं, यह उलटी गंगा कैसे बही ? भूल हुई या इण्डियन साधु (अँग्रेजी पुस्तक पृ० २३) के संदर्भ के अनुवाद में श्रीबालानन्दजी के नाम से जी उड़ाकर भ्रम फैलाने वाले नोटिस की भांति कुछ अहित सोचने की चाल चली।

(२) लाल रयाही से **"श्रीरूपरसिकजी को मंगल लाड़लीदास के मनोरथ सूं प्रगट भयो"** यह जो सूचना दी थी और उस का पृ० १०६ लिखा गया था, उस में भी काफी अन्तर मिला। अव्वल तो वह मंगल १०६ पृष्ठ पर नहीं, २३६ पृष्ठ पर लिखा हुआ है, दूसरे **"लाड़ली दास के मनोरथ सूं"** यह वाक्य वहां पर नहीं है।

(३) श्याम सनेहीजी के पश्चात् पृ० ६ के अन्त में जो श्रीरूपरसिकजी की प्रशस्ति का उल्लेख बतलाया गया था, वह भी पृ० ६ पर न मिलकर पृ० २२ में मिला।

(४) श्रीकिशोरीअलिजी की वाणी के अन्त में जो ४ पत्र पीछे से लगे हुए बतलाये थे, वे भी ४ से बहुत अधिक पत्र मिले, जिनमें भट्ट जगन्नाथ (किशोरी अलि)जी का अन्याऽन्य महानुभावों के साथ जो पत्र व्यवहार हुआ था, उन पत्रों की प्रतिलिपियां हैं।

इस प्रकार उनके द्वारा दी गई सूचनाओं में उपर्युक्त चार भ्रान्तियां पाई गईं। ये भूलें जल्दबाजी में हुई या किसी अन्य कारणवश, अथवा जानबूझ कर ही कोई खेल रचा गया था—कुछ भी हो, उनकी इन भूलों से यह निश्चित होता है कि इस सम्बन्ध में उनके द्वारा और भी कई भूलें हुई होंगी।

यद्यपि उनकी वे अपूर्ण एवं भ्रांति पूर्ण सूचनायें थीं, तथापि अन्वेषकों को एक पथ मिला और भ्रान्तियों के दिग्दर्शन कराने का हमें भी सुअवसर मिल गया। इस सम्बन्ध में विचारणीय बातें ये हैं—

(१) श्रीकिशोरी अलिजी की वाणी में जहां जहां रूपरसिकजी की चर्चा मिलती है वह सब एक ही रूपरसिकजी के सम्बन्ध की है या भिन्न-भिन्न रूपरसिकों के उद्देश्य से उल्लेख हुआ है ?

(२) लाडिलीदास, सरूपचन्द (नारायण) गोपालदास, इन व्यक्तियों के नामों का और श्री विजयगोपालजी के मन्दिर का उल्लेख भी कुछ स्थलों पर रूपरसिकजी के साथ मिलता है। हमारे उन बन्धुओं ने इनके सम्बन्ध में कुछ भी खोज नहीं की। लाड़िलीदास और सरूपचन्द कौन थे, यह पता न लगा कर दोनों व्यक्तियों को भूल से एक ही मान लिया और स्वरूप चन्दजी का ही वैष्णव-परक लाड़िलीदास नाम मानकर उन्हें श्रीरूपरसिकजी का शिष्य समझ लिया।--श्रीविजयगोपालजी का मंदिर कहां पर था, उसे खोजने की तो उन्हें सूझी ही नहीं। वास्तव में उनका उद्देश्य तो यही था कि किसी न किसी प्रकार से कोई आधार बनाकर ब्रजभाषा के उत्कृष्ट काव्य श्रीमहावाणी को श्रीहरिव्यासदेव रचित न मानकर रूपरसिकदेवजी की कृति सिद्ध किया जाय और उन्हें किशोरीअलिजी के सम-सामयिक (१७८०-१८६०) सिद्ध करके महावाणी का रचना काल १६ वीं या अधिक से अधिक १८ वीं शताब्दी का निश्चित किया जाय, इसी प्रकार युगल शतक का १६५२ वि० सं० रचना काल सिद्ध किया जाय ताकि श्रीराधाकृष्ण की मधुर रस-उपासना के प्रवर्तकों में श्रीहितहरिवंश गोस्वामीजी को प्राथमिकता मिल सके। किन्तु उनके वे सभी हेतु भ्रान्त होने के कारण उनके उस उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर सकते।

जयपुर में जहां श्रीवंशीअलीजी की परम्परा का लाडिलीजी का मन्दिर है, वहां से थोड़ी दूरी

पर है। (जौहरी बाजार में श्रीविजयगोपालजी का मंदिर है, जो ग्यारह खंभों वाले मंदिर के नाम से आज कल विशेष ख्यात है। उसके वर्तमान महन्त प्रेमवल्लभ (मनोहर) जी हैं और अर्चकों में जानकीवल्लभजी सब में वयोवृद्ध हैं। उनकी वंश परम्परा इस प्रकार है—

श्रीशुकदेवजी (श्रीकृष्णमिश्रजी के दौहित्र) के सरूपनारायण, उनके लाड़िलीदासजी, फिर उनके देवीदत्तजी हुए। उनके रामचन्द्रजी, किशनचन्द्रजी,लक्ष्मीधरजी ये तीन पुत्र हुए। उन तीनों में लक्ष्मीधरजी के गंगावल्लभजी, सूरजवल्लभजी, और चिम्मनलालजी, ये तीन पुत्र हुए, चिम्मनलालजी, किशनचन्द्रजी के दत्तक रूप में रहे। उनके राधावल्लभजी और उनके प्रेमवल्लभ (मनोहर) जी वर्तमान हैं। गंगावल्लभजी के कल्याणमलजी और दुर्गामलजी दो पुत्र हुए। सूरजवल्लभजी के ज्यानकीवल्लभजी और जमुनावल्लभजी हुए। ये दोनों विद्यमान हैं।

इस वंश परम्परा में साठ वर्ष से भी अधिक आयुवाले श्रीजानकीवल्लभजी जो विद्यमान हैं उनके जन्म से पूर्व ६ पीढ़ियों का २५ वर्ष भी प्रतिपीढ़ी का औसत लगाया जाय तो जानकीवल्लभजी के जन्म से डेढ़ सौ वर्ष पूर्व, सं० १८०० के लगभग, श्रीशुकदेवजी का समय निश्चित होता है। उनके पश्चात् क्रमशः श्रीसरूपनारायणजी और लड़िलीदासजी, श्रीकिशोरीअलिजी के समय में थे और परस्पर में उनका प्रेम-भाव भी रहा है। सरूपनारायणजी और लाड़िलीदासजी पिता पुत्र को एक मान लेना कितनी बड़ी भ्रांति है।

श्रीविजयगोपालजी के मन्दिर के निर्माता दाधीच ब्राह्मण श्रीकृष्णमिश्रजी जयपुर राज्य के एक उच्च पदाधिकारी थे। उन्होंने एक बाग की जमीन लेकर श्रीविजयगोपालजी का मन्दिर बनवाया, और पुत्र न होने के कारण अपने दौहित्र शुकदेवजी को उस मन्दिर का सेवाधिकारी बनाया। श्रीकृष्णमिश्रजी राज्य-काल से सवाई माधोपुर गये थे। उधर से लौट आने के पश्चात् राज्य की ओर से मन्दिर में आजीविका बँधवाने की बात उन्होंने सोच रखी थी, किन्तु दैववशात् उधर ही उनका देहावसान हो गया।

शुकदेवजी के समय मन्दिर में जो पुजारी थे उनका नाम रूपरसिकजी था, किन्तु वह इस वंश परम्परा में नहीं मिलता, और उनकी रचना भी नहीं मिलती। हाँ, इतना अवश्य पता चलता है कि वे साधननिष्ठ सात्विक ब्राह्मण थे। उनके सदाचार से शुकदेवजी और उनके पुत्र-पौत्र सभी उनका मान-सम्मान करते थे।

श्रीकिशोरीअलिजी की वाणी के ऐसे अंशों को देख कर कुछ सज्जनों ने श्रीहरिव्यासदेवजी के शिष्य रूप-रसिकजी और विजयगोपालजी के पुजारी रूपरसिकजी दोनों को एक ही व्यक्ति मान लिया, जैसाकि कुछ लेखकों ने श्रीहरिव्यास और श्रीहरिरामव्यास को भी एक ही मान लिया है।*

कृपा कल्पतरु, आदि ग्रन्थों के रचयिता श्रीरूपरसिकजी ने आजीवन नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया था। सांसारिक व्यवहारों से पृथक् रहते हुए निरन्तर श्रीश्यामाश्याम के गुण गान में ही वे रत रहते थे। उन्होंने कोई शिष्य भी नहीं किया था, अतः आगे उनकी कोई शाखा भी नहीं चली। श्रीकिशोरीअलिजी ने भी कहा है—

कहनि रहनि एक सी जगमगत जग सों छटी।

इन शब्दों में उन्हें परमविरक्त बतलाया है। श्रीविजयगोपालजी के पुजारी रूपरसिकजी गृहस्थ

---

* डा० उमेशमिश्र का 'प्राचीन वैष्णव सम्प्रदाय' शीर्षक लेख (हिन्दुस्तानी पत्रिका) द्रष्टव्य है। उन्होंने श्रीहरिरामव्यास और श्रीहरिव्यासदेव को एक मान करके ही श्रीहरिरामव्यासजी को श्रीभट्टजी का शिष्य सिद्ध किया है। इसी प्रकार ग्रीयर्सन आदि कई पाश्चात्य लेखकों को भ्रम हुआ है।

थे। श्रीकिशोरीअलिजी की वाणी से ही यह प्रमाणित होता है। उनकी वाणी के पृ० २४८ में स्पष्ट लिखा है—श्रीरूपरसिकजी के पुत्र हरिजनदासजी तिनने बधाई प्रगट की—

रंग सौं बाजैं व्रजनाथ घर हेली रंगीली बधाइयां। धनि धनि यह दिन आजु को भइ री सब मन भाइयां ॥*

अन्वेषक महोदय की दृष्टि इन पंक्तियों पर भी अवश्य पड़ी होगी, किन्तु उन्होंने जान बूझकर इसे छिपाने की चेष्टा की। इस पंक्ति को वे उद्धृत करते तो दोनों रूपरसिकों को एक नहीं कह सकते थे।

उपर्युक्त पद के पश्चात् तीन पद और हैं, फिर पृ० २४६ में उल्लखित——श्रीरूपरसिकजी के कृपा-पात्र पुजारी सरूपचन्दजी ने मंगल प्रगट कियो, राग सूहाबिलावल—

जै जै श्री जगन्नाथ नाथ सर्वोपरी। जै जै श्री कति धाम किशोरी संग में ॥

जै जै श्रीअलिवंशी परम प्रशंसी है।

इन तीनों पदों का उद्धरण देकर पृ० २५१ में उल्लखित——"पञ्चाध्यायी सुनि कैं पुजारी सरूप-चन्दजी ने पद प्रगट कीनों—राग देवगिरि——

जै जै श्रीशुकदेव महामुनि रस की वरसा कीनें।

इस पद की भी चर्चा की है, किन्तु पृ० २४८ और २५० के सन्दर्भ की चर्चा नहीं की। इससे स्पष्ट होता है कि अपने उद्देश्य को पूर्ण करने के लिये उन महाशयजी ने दूसरे अन्वेषकों को एक बड़ा भारी धोखा देना चाहा है।

दोनों रूपरसिकों का एकत्व सिद्ध करने का जैसा प्रयास किया गया वह ऊपर दिखाया जा चुका है। इसके अनन्तर उन्होंने श्रीमहावाणी को १६ वीं शताब्दी की रचना सिद्ध करने के लिये जो प्रगट प्रमाण दिया है वह भी उपहासास्पद ही है। उनका कहना है—"श्रीराधावल्लभ सम्प्रदाय के रसिक महानुभाव श्रीसर्वसुखदासजी ने जो सेवक वाणी की टीका की है, उसके सप्तम प्रकरण के छठे छन्द की पुष्टि में उन्होंने उद्धरण दिया है—साखी रूप रसिक——

प्रिया शक्ति अह्लादिनी प्रीतम आनन्द रूप। तन वृन्दावन जगमगं इच्छा शक्ति अनूप ॥

उनकी धारणा है कि सं० १८६७ के लिखे हुए "सर्वसुखदासजी के ग्रन्थ मिलते हैं, और यह साखी महावाणी सिद्धान्त सुख के सोलहवें पद पर मिलती है।"

उनके इस प्रगट प्रमाण की छानबीन के लिये हमने श्रीसर्वसुखदासजीवाली टीका की खोज की, परन्तु वह हमें देखने को नहीं मिली। श्रीराधावल्लभ सम्प्रदाय के विशेषज्ञों से भी पूछताछ की,

---

*इस पद की अन्तिम पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

बाजे बाजें री बहुभते मन भायों देत हैं दान री। लखि अली 'हरिजन' कहा नहैं सुत सुख की छबी वितान री ॥५॥

श्रीकिशोरीअलिजी की वाणी की इस प्रति की अन्तिम पुष्पिका पृ० २६३ पर इस प्रकार है—

दोहा——बानी में जे क्षिप्तक पद, रसिकन संशय देत। ते जानों कुरनायसी नाहीं मेरो हेत ॥

खररा जे पद के भये ते राखे हैं डारि। खेमचन्द पोथी करी लीनी सबै उतारि ॥

सम्वत बाण रामवसुचन्द, पौष पञ्चमी सुदि सुत इन्दु। लिखी खेमकरण रसकन्द, बाँचें सुनें लहै आनन्द ॥

लाड़िलीजी मन्दिर (लाड़िलीजी का खुर्रा) जयपुर में गो० श्रीजुगलकिशोरजी के यह प्रति है। इसका लिपिकाल सूचकजी ने सं० १८३७ बतलाया था किन्तु इस पुष्पिका के आधार से उनकी यह सूचना भी भ्रान्त सिद्ध होती है।

श्रीकिशोरीशरणजी अलि ने बताया कि पद्यमयी सर्वसुखदासजी की टीका में यह उद्धरण हमने नहीं देखा। किन्तु उनके गुरुदेव श्री रतनदासजीवाली टीका (चतुर्थ प्रकरण के चतुर्थ छन्द) में वह उद्धरण मिलता है। अस्तु। सर्वसुखदासजी ने वह उद्धरण दिया भी होगा तो अपने गुरु रतनदासजी का ही अनुसरण किया होगा और उन्होंने किसी के मुख से सुनकर ऐसा उल्लेख किया होगा। निश्चित रूप से कहना होगा कि रतनदासजी को श्रीमहावाणी ग्रन्थ के दर्शन नहीं हो सके थे। यह तो कह ही नहीं सकते कि उस समय श्रीमहावाणी ग्रन्थ-रूप में लिखी हुई न रही हो, क्योंकि—वि० सं० १८५६ में रतनदासजी ने सेवकवाणी की टीका की और उससे पचासों वर्ष पूर्व की लिखी हुई महावाणी की कई एक प्रतियाँ आज भी वृन्दावन में उपलब्ध हैं। वि० सं० १८२३ की लिखी हुई एक प्रति श्रीललितकिशोरी (साह) जी के संग्रह (साहबिहारी मन्दिर) में ही विद्यमान है। उस प्रति में कहीं भी "साखी" नाम नहीं मिलता। पाठ भेद भी है। प्रीतम आनन्द रूप "पाठ नहीं मिलता प्रिय आनन्द स्वरूप" ऐसा पाठ है।

यदि सेवकवाणी के टीकाकार महावाणी ग्रन्थ को देख कर यह उद्धरण देते तो उनके द्वारा ऐसी भूल नहीं होती, क्योंकि उसके प्रत्येक सुख की अन्तिम पुष्पिका में "श्रीहरिव्यासदेवजूकृता महावाणी" स्पष्ट लिखा हुआ है और कहीं भी दोहा छन्द का "साखी" शब्द से निदर्शन नहीं किया। सर्वत्र दोहा शब्द का ही उल्लेख है।

रतनदासजी भावुक सन्त थे। उन्हें तो श्रीराधाकृष्ण को श्रीहित हरिवंशजी का वैभव सिद्ध करना ही अभीष्ट था। यह दोहा है या साखी? हरिव्यासदेवजी का रचा हुआ है या रूपरसिकजी का? इन सब की छानबीन करने का विचार ही उनके चित्त में नहीं उठा होगा। क्योंकि जिस व्यक्ति पर जो धुन सवार हो जाती है, वह उतनी ही परिधि में तल्लीन हो बैठता है। श्रीराधावल्लभ सम्प्रदाय के बहुत से ऐसे भी लेखक हो गये हैं,* जिन्होंने अपने सम्प्रदाय की भी पुरानी रीतियों की परवाह न करके अपनी धुनके अनुसार जैसे चाहा लिखा। दूसरे सम्प्रदायों के ग्रन्थावलोकन की तो बात ही क्या? इसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण ले सकते हैं :—

अन्वेषक श्रीकिशोरी अलिजी ने राधावल्लभीय सम्प्रदाय के साहित्य की एक सूची रूप "साहित्य रत्नावली" नामक पुस्तक लिखी जो सं० २००७ के पौष में प्रकाशित हुई थी। उसके पृ० ३ सं० १६-२२ में केलिमाल आदि (स्वामी श्रीहरिदासजी की रचना) को भी राधावल्लभीय साहित्य में ही संग्रहीत कर लिया है। इधर उसी सम्प्रदाय के कुछ सज्जन श्रीस्वामी हरिदासजी को विष्णु स्वामी सम्प्रदाय के अन्तर्गत परिगणित कराने की सिफारिश ही नहीं, जी तोड़ प्रयास भी कर रहे हैं।

श्रीसुन्दर कुंवरी (कृष्णगढ़ नरेश नागरीदासजी की बहन) ने अपने सभी ग्रन्थों में श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदायाचार्यों की वन्दना की है। और अपने गुरुदेव एवं गुरुस्थान का स्पष्ट नामोल्लेख भी कर दिया है। ऐसी स्थिति में भी श्री अलिजी ने पृ० ७० संख्या ८३७ से ८४६ तक १० ग्रन्थों को राधावल्लभीय साहित्य में ही सम्मिलित कर लिया है। यद्यपि 'अलि' जी उतने शुष्क हृदय प्रतीत नहीं होते। जब उनसे पूछा गया, क्या आपने उन ग्रन्थों को देखा है?" तो स्पष्ट कह डाला—"मैंने नहीं देखे।" सुन्दर कुंवरीजी निम्बार्क सम्प्रदाय की ही शिष्या थी, उनकी रचनायें भी निम्बार्क सम्प्रदाय के साहित्य में ही परिगणित होनी चाहिये। राधावल्लभीय साहित्य रत्नावली में उनका समावेश मेरी भूल से ही हो गया है। उन्होंने यह

---

* भाष्य लिख कर बैरागढ़ बनने का मोह हित हरिवंशजी के बहुत बाद उत्पन्न हुआ, और तभी भाष्य लेखन व्यापार के चक्कर में कुछ परम्परा प्रेमी महानुभाव पड़े। श्रीविजयेन्द्र स्नातक राधावल्लभ सम्प्रदाय सिद्धान्त साहित्य पृ० १३१ उन्होंने "सिद्धान्त" शब्द के सम्बन्ध में भी यही धारणा व्यक्त की है (रा० सं० सि० सा० १२८)

स्वीकार भी कर लिया। तथापि साहित्य रत्नावली के पढ़नेवालों को तो भ्रम ही होगा। सामान्यजनों को उस रहस्य का पता नहीं लग सकेगा।

ठीक यही स्थिति सेवकवाणी के टीकाकारों की रही होगी। उन्हें श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के ग्रन्थ और ग्रन्थकारों का पूर्ण परिचय नहीं था। यदि जानकारी होते हुए लिखा है तो जान बूझ कर भावी लेखकों को उन्होंने भी आधुनिक व्यक्तियों की भाँति भ्रांत बनाने की चेष्टा की है,यही कहना पड़ेगा। तात्पर्य—सर्वसुखदासजी या रतनदासजी के उद्धरण से महावाणी १६ वीं शती की रचना सिद्ध नहीं हो सकती।

जो सज्जन जहाँगीर की बेगम नूरजहाँ के समय में अतर शब्द का आविर्भाव सिद्ध करते हैं और उसका प्रयोग देख कर नूरजहाँ के पश्चात् महावाणी का रचनाकाल निश्चित करना चाहते हैं वह भी विचार विहीनता ही है। आक्षेप की दृष्टि से किसी भी ग्रन्थ के रहस्य का पता नहीं चल सकता। "शब्दा-नामनेकार्थत्वम्" इसे सभी मानते हैं। महावाणी के भी बहुत से शब्द अनेकार्थक हैं यह उसकी तालिका से ही प्रमाणित हो रहा है। अतः उत्साह सुख होरी प्रकरण के ३४ वें पद में प्रयुक्त "अरचे अतर अमोल सों" और ४६ वें पद में प्रयुक्त "अतर लाय तन तर करी" इन 'अतर' और 'तर' शब्दों का अर्थ **विद्वान् आलोचकजी** महावाणी के किसी विशेषज्ञ से पूछ लेते तो उन्हें नूरजहाँवाले इत्र तक अनुगमन करने का कष्ट नहीं होता। अस्तु। रसिकवेद्य अर्थों की चर्चा करने की यहाँ आवश्यकता नहीं। इतना ही कह देना पर्याप्त है कि आक्षेपकजन अतर शब्द को जिस अर्थ में मान रहे हैं, वह अतर शब्द भी उनके अनुमानित समय से प्राचीन है।

फारसी के गुलिस्तां, बुस्तां आदि कई ऐसे ग्रन्थ हैं जिनमें अनेकों स्थलों पर "अत्तार" शब्द का प्रयोग मिलता है। संस्कृत (तद्धित प्रकरण) की भाँति फारसी में भी अत्तार शब्द अतर शब्द से ही बनता है। अतर बेचनेवालों को अत्तार कहते हैं। शेख शादी से पूर्व भी अतर और अत्तार शब्दों का प्रयोग होता था। यदि उनके ग्रन्थों का अनुशीलन करते तो आक्षेप का स्वतः समाधान हो जाता।

श्रीनागरीदासजी, वंशी अलिजी, भगवत रसिकजी आदि की वाणियों में नामोल्लेखन न मिलने के कारण श्रीहरिव्यासदेवजी को उनसे अर्वाचीन बतलाना अपनी बुद्धि का ही दिवाला निकालना है—क्योंकि उनसे भी पूर्ववर्ती श्रीराधावल्लभ सम्प्रदाय के विशिष्ट सन्त-कवि श्रीध्रुवदासजी अपनी भक्त नामावली में—

वर्द्धमान श्रीभट अरु गंगल व्रज वृन्दावन गायो। करि प्रतीति सर्वोपरि जान्यो ताते चित्त लगायो॥

× × × ×

रामानन्द अन्नुद सोभू हरिव्यास अरु छीत। एक एक के नाम तें सब जग होत पुनीत॥

जब स्पष्ट यशोगान कर रहे हैं तब उनसे परवर्तियों की वाणी में नामोल्लेख न मिलने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। किसी की रचना में नामोल्लेख न मिलने से ही किसी का अस्तित्व नहीं मिटता। नाम देना, न देना यह कवि की इच्छा पर निर्भर है। श्रीपरशुरामदेवाचार्य ने यदि अपनीवाणी में श्रीहित-हरिवंशजी का नामोल्लेख नहीं किया तो क्या उनके समय में श्रीहितजी के अस्तित्व में सन्देह किया जाय?

श्रीकिशोरी अलिजी ने "मैं इन रसिकन की बलिहारी" पद में स्पष्ट लिखा है—

श्रीभट श्रीहरिव्यासदेवजू सब करि प्रीतम प्यारी। अगणित जीवन पर करुणा करि किये महल अधिकारी॥*

---

*श्रीकिशोरी अलिजी की वाणी पृ० १४३।४४ यह प्रति १८३५ वाली से पुरानी है इसके १२।७ साइज के १६७ पत्र हैं जिनमें युगल बधाई विनय, होरी, और झूलों के पद हैं और लाड़िलीजी के मन्दिर जयपुर में उन्हीं गो० जुगलकिशोरीजी के पास है।

उन्होंने इस पद में श्रीरामकृष्ण के ४० उपासकों का सुयश गान किया है। श्रीभट्टदेवजी और श्रीहरिव्यासदेवजी ने करुणा करके अगणित (असंख्य) साधकों को महल (निकुंज उपासना) का अधिकारी बना दिया था। यह श्रीकिशोरीअलिजी के उद्गार हैं। उनके गुरुदेव श्रीवंशी अलिजी ने भी संक्षिप्त रूप से संकेत कर दिया है—

जे जे राधा नाम कों भजत जगत में जान। ते ते सब हमरे सदा हैंगे प्रान समान।

श्रीनागरीदासजीने ''मेरे ये ही वेद व्यास'' पद में श्रीभट्टजी का वाणीकारों में उल्लेख किया है और उन से भी पूर्ववर्ती श्रीध्रुवदासजी ने श्रीभट्टदेव और श्रीहरिव्यासदेवजी दोनों का सुयश वर्णन करते हुए यही प्रगट किया है कि उन वाणीकारों में एक एक के नाम से ही समस्त जगत पुनीत हो सकता है।

मिलन्तु चिन्तामणि कोटि कोटयः स्वयं बहिर्दृश्युर्यति वा हरिः।
तथापि वृन्दावनधूलिधूसरं न देहमन्यत्र कदापि यातु मे॥

(वृन्दावन माहात्म्य १७।२३)

श्रीप्रबोधानन्दजी के इस पद का ''रे मन वृन्दाविपिन निहारि'' श्रीभट्टजी के इस पद को हिन्दी-अनुवाद बतलाना कहाँ तक युक्तियुक्त कहा जा सकता है? बहुत से कवियों की रचनाओं में एक दूसरे से सर्वथा अपरिचित होते हुए भी भाषा साम्य और शब्द साम्य देखा जाता है। कबीरजी ने वेदों का अध्ययन किया होगा, यह कोई भी विचारशील व्यक्ति नहीं मान सकता, किन्तु उनकी कई रचनायें ऐसी भी हैं, जिनका भाव वेद मंत्रों से मिलता जुलता है फिर भी वे उनका अनुवाद रूप नहीं पा सकीं। यही बात प्रबोधानन्दजी और श्रीभट्टजी के इन दोनों पदों में समझना चाहिये।

यदि तर्क पर ही बल दिया जाय, तो यह भी कहना अनुचित न होगा कि श्रीप्रबोधानन्दजी ने ही श्रीभट्टजीके उस पद का संस्कृत में अनुवाद कर लिया। संस्कृत का ही हिन्दी अनुवाद होता है, हिन्दी का संस्कृत अनुवाद नहीं होता, ऐसा कोई नियम नहीं है। आज भी कितने ही हिन्दी पदों का संस्कृत-भाषानुवाद मिल रहा है। रामायण आदि का रूसी आदि अन्यान्य भाषाओं में भी अनुवाद हुआ है।

श्रीजयशंकरप्रसादजी की हिन्दी रचना ''कामायनी'' का श्रीभगवानदत्त शास्त्री राकेश ने अभी-अभी संस्कृत पद्यानुवाद किया है, जो जनवाणी प्रिण्टर्स एण्ड पब्लिसर्स प्राइवेट लि० ३६ वाराणसी घोष स्ट्रीट कलकत्ता ७ में मुद्रित भी हो चुका है।* भूगोल आदि और भी कई हिन्दी ग्रन्थों के संस्कृतानुवाद मिलते हैं। अतः श्रीभट्टजी के पद को प्रबोधानन्दजी की उक्ति का अनुवाद सिद्ध करना स्वस्थ मस्तिष्क की उपज नहीं कहा जा सकता। ऐसे तर्क उठानेवालों की बुद्धि का थोड़ा सा परीक्षण किया जाय तो स्पष्ट हो सकता है कि उनका यह अनर्गल प्रलाप आगरा के पागल खाने से ही उद्भूत हुआ है। विचार शून्य ईर्ष्यालु हृदयों से ही ऐसी कुतर्कें उठा करती हैं। उन्हें यह पता नहीं कि श्रीवीरमजी किनके शिष्य थे और श्रीनागा (चतुर चिन्तामणिदेवाचार्य) जी के गुरुदेव का क्या नाम था। फिर भी छाती ठोककर लिख मारना—''भगवान् वीरम (भ० मा० पृ० ५२७) का समय १६ वीं शती है तो श्रीहरिव्यास के शिष्य नहीं हो सकते।

(२) श्रीचतुरो नगन के गुरु कान्हर या करनदेव थे, श्रीपरमानन्द नहीं।

ये दोनों ही आक्षेपात्मक धारणायें उनकी ज्ञान-गरिमा का परिचय दे रही हैं। श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदाय के महापुरुषों की परम्परा का परिचय न होते हुए भी जो व्यक्ति इस प्रकार का अनर्गल प्रलाप

---

*३१ दिसम्बर रविवार सन् १९६१ के दैनिक हिन्दुस्तान (दिल्ली) के पृ० पर साहित्य परिचयस्तम्भ में ५) रु० मूल्य वाली उस पुस्तक का परिचय और समीक्षा दोनों प्रकाशित हुए थे।

करता हो उसकी बुद्धि की कहाँ तक बड़ाई की जाय? किस आधार से उन्होंने श्रीवीरमजी को श्रीहरिव्यासदेवजी का शिष्य और श्रीनागाजी के गुरुदेव का नाम श्रीकन्हरदेव माना है, इसे वे ही सज्जन जानें।

जिस प्रकार सम्प्रदाय के एतिह्य से अनभिज्ञ नागरी प्रचारिणी सभा, काशी के खोज-रिपोर्ट लेखक ने श्रीभट्टजी को निम्बादित्य-शिष्य और श्रीपरशुरामदेवजी को श्रीभट्ट शिष्य लिखा, उसी प्रकार इन आलोचकों ने भूलें की हैं, जो श्रीचतुरोनगनजी के गुरुदेव का नाम कान्हर या करनदेव और श्रीवीरमजी को श्रीहरिव्यासदेवजी का शिष्य लिख डाला। ठीक उसी प्रकार श्रीरतनदासजी एवं श्रीसर्वसुखदासजी ने भूल से महावाणी के दोहे को "साखी रूप रसिक" लिख डाला। इनका प्रमाण देकर श्रीमहावाणी को १६ वीं शताब्दीवाले रूप रसिकजी की रचना सिद्ध नहीं कर सकते।

कृपापात्र शब्द का केवल शिष्य ही अर्थ नहीं होता, क्योंकि शिष्य के अतिरिक्त सेवक आदि व्यक्तियों के लिये भी कृपापात्र शब्द का प्रयोग होता है। भक्तजनों के लिये भी ये "प्रभु के कृपापात्र" हैं ऐसा व्यवहार हो सकता है। यदि ब्राह्मण या कोई गोस्वामी किसी राजा के मुंह लगा हुआ हो तो उसे भी राजा का कृपापात्र कहते हैं।

ऐसी स्थिति में श्रीकिशोरी अलिजी की वाणी में उल्लिखित "कृपापात्र" शब्द से स्वरूपचन्दजी आदि को रूपरसिकजी का शिष्य ही मान लेना युक्ति संगत नहीं कहा जा सकता।

सरूपचन्दजी अच्छे गायक थे और वे रूपरसिकजी के पदों को विशेष गाते थे, इस कारण से उन्हें पूर्ववर्ती रूप रसिकजी का भी कृपा पात्र मानते थे। इसी प्रकार अानाने की संगति लग सकती है। श्रीकिशोरी अलिजी की नामविरुदावली में इसका स्पष्टीकरण मिलता है—उसके २२७ पद्यों के बाद की ये पंक्तियाँ हैं—

> मित्र एक मेरौ रंग भीनौ। जाहि गुपाल आपनौ कीनौ॥
> सरस सरूप चन्द यह नांमा। गांन भजन में अति अभिरांमा॥
> श्रीरूपरसिकजु जिह अपनायो। तिह दम्पति सम्पति मन लायौ॥

जिस प्रकार श्यामसुन्दर श्रीगोपालजी ने भक्ति प्रदान करके सरूपचन्दजी को अपना लिया अर्थात् अपने अभिमुख किया, उसी प्रकार रूपरसिकजी ने अपने काव्य द्वारा उन्हें अपनाया।

इन वाक्यों से यह भी ध्वनित होता है कि जैसे प्रभु ने विजयगोपालजी की प्रतिमा के रूप में सरूपचन्दजी पर अनुग्रह किया उसी प्रकार श्रीरूपरसिकजीने उनके अर्चक रूप में प्रकट होकर सरूपचन्दजी को बोध कराया। सारांश यही निकलता है कि श्रीकिशोरी अलिजी ने जिन रूपरसिकजी की प्रशस्तियाँ लिखी हैं, वे उनके बहुत पूर्ववर्ती थे, उन्होंने उनका दर्शन नहीं किया था। अतः उनके सम सामयिक सरूपचन्दजी के उपदेष्टा रूप रसिक नामक साधक भिन्न थे।

बहुत अच्छा होता यदि हमारे अन्वेषक बन्धुओं की खोज कसौटी पर खरी उतर जाती तो उनका उद्देश्य पूर्ण हो जाता और हम भी सहर्ष उसे स्वीकार करते, किन्तु वहां प्रवेश न हो सका, बात उलटी ही पड़ गई।

हमारा कोई दुराग्रह नहीं है। सचाई के साथ खोज करनेवालों का हम हृदय से आभार मानेंगे।

इस सम्बन्ध में हमें पर्याप्त सामग्री मिली है, और खोज द्वारा बहुत कुछ मिलने की आशा है, किन्तु स्थानाभाव से उसका थोड़ा अंश ही यहाँ दिया जा सका है। आशा है अन्वेषकजनों को इससे भी एक सुमार्ग मिलेगा।

—व्रजवल्लभशरण वेदान्ताचार्य पञ्चतीर्थ

श्रीराधासर्वेश्वरो जयतिः

श्री ६ भगवन्निम्बार्कमहामुनीन्द्राय नमः

श्री वृहद् उत्सव मणिमाल

दोहा

प्रथम सुमिरि श्री गुरु चरन, हरन सकल अघजाल।
तासु कृपा-बल कहत हौं, वृहदुत्सव-मणिमाल ॥१॥
करि आरम्भ वसन्त ते, व्यञ्जन द्वादशि ताउँ।
रूप रसिक या नाम को, सो अब सत्य कहाउँ ॥२॥

वसन्तोत्सव

राग बसन्त (१)

वसंत बँधावौ चालौ व्रज की बाल।
वनि कुंज भवन बैठे दोउ लाल॥
आज महा पंचमी माहकी, मदन महोत्सव कहिये।
सजि सजि सकल चलौ युवती जन, मन वाँछित फल लहिये॥
कनक कलश में उलसि हरित जव, नूत मौर नव नीके।
घसि केसरि घन-सार मलय मिलि, धरि सिर कमनी के॥
वाजा विविध वजावौ गावौ, अबीर गुलाल उड़ावौ।
इहिं विधि रूप-रसिक दम्पति को, जाय वसंत बंधावौ॥

पद (२)

आज वसन्त वन्यौ वृन्दावन, देखेहीं वनि आवै री।
विविध भाँति द्रुम लता फूलि रही, कहत कह्यौ नहिं जावै री॥

सौरभ पुंजमती तिन ऊपर, मधुप-पाँति मँडरांवैं री।
तैसिय कोकिल की कल बोलनि, सुनि श्रवना सचु पावैं री॥
ठौर ठौर निर्मल जल आशय, सम्पति सहित सुहावैं री।
रूप-रसिक यह सोभा निरखत, तन मन नैंन सिरावैं री॥

पद (३)

तन वन बसन्त फूल्यो भाँति भाँति।
जहाँ विहरत विवि अधिकांति कांति॥
प्रमुदित प्रमुदिन गन पाँति पाँति।
फिरें रूप-रसिक रस-माँति माँति॥

पद (४)

आज साँवरे की सुरंग पाग पर हरे जु रंग जव थर हरें।
ता ढिंग सरस रसाल मंजरी पेचनि मिलि हीं अरहरें॥
अति अभिरांम तांम-रस लोचन, कोटि कांम दुति दरहरें।
रूप-रसिक (सब) ब्रज युवतिन को मन, श्री गोवर्द्धन-धर हरें॥४॥

पद (५)

देखौ देखौ शोभा अंब मौर। फबि रह्यौ प्रिया शिर फूल ठौर॥
कहा वरनें छवि या आगे और। लखि रूप-रसिक मन होत बौर॥५॥

पद (६)

दोउ नवललाल कैसें लागें री। वनि बैठे वसन्ती बागें री॥
अंग अंग रति रागें री। लखि रूप-रसिक रस पागें री॥६॥

पद (७)

आजु दृगन भरि देखि सखी री, कुसुमित वन घन कुंज कलोलें।
अति उमगात गात गातन की, कहि न जात मुख बात अतोलें॥
वहु छल चन्द छुरनि छोरनि में, मोरनि मुरनि मची झखझोलें।
रूप-रसिक रति पति सम्पति की, करी कथा कल-पिता कपोलें॥७॥

पद (८)

नेंक हरें हरें हरि खेलियें, ज्यों खेलन को सुख पावो जू।
नागरि जू की नकवेसरि सों, उरझे वर सुरझावो जू॥
गोरे गोरे गंडनि ऊपरि, रदन खण्ड जिन लावो जू।
प्यारी जू के मृदुल रंग सों, अपनो अंग रँगावो जू॥
जांनि परे जोरावरि जो, नेंक उर सो उरहिं अरावो जू॥

पद (९)

विहरत वसंत दोउ नव किशोर। अंग अंग उमंग न भरे थोर॥
वृन्दावन मंजुल कुंज रंजु। तहाँ श्रवत सदा सुख-सहज संजु॥
आनन्द कंद जुग चन्द हेत। छिन छिन प्रति अति रति रंग देत॥
वहु भाँति फूलि फवि रहे फूल। सौरभ सुपुंज यमुना कें कूल॥
मधु-लोभ लगी सोहति सुहांति। मंडराय रहीं मधुपनि की पाँति॥
कलकूजत कोकिल हंस मोर। अति लगत सुहावन श्रवन सोर॥
सो सोभा मुखकछु कही न जाय। देखत ही दृग रहत जु लुभाय॥
तैसीय सहचरी भरी रंग। वर वनी ठनी सोहति जु संग॥
वहु खेल रेल रस सौंज साजि। भरि चोज चहूँ दिशि रहीं राजि॥
कर कंज कनक पिचकारि धारि। केसरि सु नीर कुमकुम जु वारि॥
छिरकत सु परस्पर लालवाल। सनि सनि सुगन्ध सौंधो रसाल॥
वहु वरन वरन वूका गुलाल। उड़ि उठी धूँधि वह सनि विसाल॥
पिय लिय लगाय हिय सौं प्रवीनि। मन भायो सुख दै छाँड़ि दीनि॥
यह दम्पति को मधु-रितु विलास। गांवैं जो पावैं प्रेम रास॥
महा मधुर मधुर ते अति अनूप। रस पांन करौ होय रसिक-रूप॥

पद (१०)

रंग राख्यो हो लड़ैती श्री राधे, पिय संग होरी खेलि खेलि।
धन्य सुहाग भाग धनि पिय को, विहरत भुज गल मेलि मेलि॥

सुन्दर स्यांम तमाल लाल सों, उरझि रही अलबेली बेलि।
सींची सुखद सजल आनँद घन, रूप रसिक रस रेलि रेलि॥

पद (११)

छिरकत छवि छैल छबीले लाल। अंग अँग परस्पर रँग रसाल॥
उपजाय उरनि अभिलाष जाल। चित चाहत बदल्यो वेष बाल॥
दम्पति की सुख संपति विसाल। लखि रूप-रसिक नैननि निहाल॥

पद (१२)

हो घनश्याम भरौ जिन मोतन, चोवा छिरकनि भोरैं हीं।
अपनै रंग मिलायेंई चाहत, सहतनहीं काहू गोरें ही॥
जानति हों पछितावति हौं मन, लखि मो अंगन ओरें ही।
रूप-रसिक विधिना के सारें, अब न होत बरजोरें ही॥

पद (१३)

मो पर तुम हूँ तौ डारत हौ।
कर कंजन भरि भरि पिचकारी, क्यों केसरि की मारति हौ।
अपनी अपनी विरियाँयों बलि जाऊँ, उरमें अनख जु धारत हौ॥
रूप रसिक हो जैसे तैसे औरन कों न विचारत हो॥

पद (१४)

ऐसें खेलौ हो दोउ मिलि बसन्त। जाहि देखि लहैं आनंद अनंत॥
जैसें खेले नवल निकुंज माँझ। सब देखत हीं वादिन की सोंझ॥
उर में अभिलाष बढ्यौ है आज। जुरि आयो है सब ही समाज॥
महा रहसि रंग रस रेलि रेलि। करिये मन वंछित कलित केलि॥
हम रहिहें सबहीं चुप चुपात। किहुँ बातन करि खरकै न पात॥
अब जो जो चहियें रमन रिद्धि। पहिलें हीं करि राखी हैं सिद्धि॥
बहु विधि सुरंग रंग सनि सुगंध। भरि भाजन साजन सुख समंध॥

वन्दन गुलाल चन्दन कपूर। केसरि अबीर वर कुसुम चूर॥
वलि रूप-रसिक जन मन उमाहु। निज नैंन निरखि लूटैं सुलाहु॥

पद (१५)

विहरत आज वसन्त विमल वन, तरनि सु तनया तीरे।
अति उमंग अंग अंग भरे रंग, संग सखिन की भीरे॥
नव केशर करपूर अगर सत, उड़त गुलाल अबीरे।
बढ़ी विपुल कल केलि रेलि रस, निरखि होत दृग सीरे॥
भरत भरावत अरस परस, सचु पावत सुभग सरीरे।
रूप-रसिक जन जानत जोई, निपट निहारत नीरे॥

पद (१६)

अलि हो मिलि कल केलि केलें। आउ सबै हम भेलि भेलें।
अंग अंग रंग झेलि झेलें। रूप-रसिक रस पेलि पेलें॥

पद (१७)

मिथुन कुंवर खेलत बसंत। अंग रंग भरे कैसे लसंत॥
लखि अति रोचन लोचन फसंत। जहाँ रूप-रसिक रस चस चसंत॥

पद (१८)

आज बसन्त विपिन में अलि मिलि चलहु विलोकन जइयें री।
झूलि फूलि रही ललित लता संकुलित निरखि सुख पइयें री॥
कोकिल कीर कलाप अलापनि, सुनि धुनि श्रवनन छइयें री।
अति अनूप जहाँ जुग स्वरूप कौं, रसिक रूप लख लइयें री॥

पद (१९)

कहा कहिये कुसुमाकर की सोभ! जाहि देखत हीं दृग रहत लोभ॥
रहे फूलि फूलि जहाँ सुरंग फूल। छवि पावत साखा परसि मूल॥
मधु लुब्ध मधुपगन करत गुंज। कूजत कोकिल कल पिकन पुंज॥
रायबेलि मोतिया रायबोल। मद मदन-वान सेवति सहेलि॥

मिलि मल्ल मालती सोंन जाय । सुचि सरस सपष्ट सुगन्ध राय ॥
केतकी केवरन कल कनीर । बहु भाँति भाँति सौरभ सुनीर ॥
सो सोभा मुख कछु कहि न जाय । जहाँ लता माधुरी रही छाय ॥
रस रूप मञ्जरी कुञ्जकुंद । चम्पक वर वकुल गुलाव दुंद ॥
चमेली पाडर नाग चंप । नव नित्य नई सुख-मई संप ॥
पुनि पारिजात तरु नारिकेरि । कचनार रही रिधि वारि फेरि ॥
रम्भा रसाल तालरु तमाल । गत सोक असोक कदम्ब साल ॥
झुकि झुकि जु रहे यमुना कें तीर । श्रव श्रवत सदा सुख सुधा सीर ॥
रवे अमल कमल कुल झूलि झूलि । दंपति सुख देखन फूलि फूलि ॥
जटि परम रम्य तटि पुष्प राग । अटि सहज सुमन झरि झरि पराग ॥
जहाँ पिय प्यारी खेलत बसंत । दिवि कोटि कांम रति को हसंत ॥
तैसिय सहचरी अति सुदेस । गोरें मुख छुटि छुटि रहे केस ॥
रस रंगन अंग भरात जात । फिर भरत भाँवते भावगात ॥
केसरि कुम-कुम करपूर आदि । सनि सरस सुगंध साखा जवादि ॥
बहु उड़त गुलाल अबीर रंग । बाजें डफ ताल मृदंग संग ॥
केउ निर्त करति नव गति जु लाय । तिन्हैं रीझि देत दम्पति बुलाय ॥
अरगजें मरगजी फूलमाल । भई पहरि पुलक अँग अंग बाल ॥
या रस में जिन कौ मन रसात । तिनकी कछु कहि नहिं आत बात ॥
नित रूप रसिक ह्वै रमत जोय । जांनियें जनम जग धन्य सोइ ॥

पद (२०)

खेलत खेलत भयो और खेल । मन जा परस्यो रस रंग रेल ॥
जिय जानि गई पिय पाज पेल । समुझावत श्याम हीं ले अकेल ॥
वलि रूप रसिक यह कौन बेल । डारत हौ आँखिन तें फुलेल ॥

पद (२१)

जो तुम चाहति हौ पिय तौ मिलि केलिये जू नव कुंज सदन में।
देखत ही सब के मन भरौ रंग लाय, कुरंग सुअंग वदन में॥
कौन सुभाव लखावत बलि मावत, हौ न अमात मदन में।
रूप रसिक रहैंगी कोउ लखि के, सखी अँगुरी देय रदन में॥

पद (२२)

तो तन बसंत मो मन बसंत। अब और कहौं कैसो बसंत॥
जानति हैं जो ती जो बसंत। निति रूप रसिक निरखत बसंत॥

पद (२३)

अब कै खेल फिर खेलौ खेलौ खेलौ फिर खेलौ जू।
अति अरिवरि करि हरि वर तें हरि होय गयो भेल सेलौ जू॥
न्यारौई न्यारौई निजरि परै ज्यौं, निज प्रभाव को पेलौ जू।
रूप-रसिक हम हूँ अभिलाषे, या रसिकई कौ रेलौ जू॥

पद (२४)

यह अति लागत है अब नीकौ कंत कामिनी कौ बसन्त।
अरसि परसि विहरौ बलि ऐसेंई, जाहि देखि दुःख नसंत॥
सहज सौंज सुखदायक सब दिन, दम्पति दुति जु लसंत।
रूप-रसिक जन के मन कौ महा, घन रस वन वरसन्त॥

पद (२५)

जुवराज जुगल खेलत वसंत। वंशीवट यमुना तट इकंत॥
कमनीय कुंज मृदु महारंजु। सजि लई सहज सुख मई संजु॥
वरवनक वनी चहुँ ओर वाल। मिलि मच्यो परस्पर रंग जाल॥
छिरकें छिरकावें छवि सों गात। नेह नीर भरे अम्बर चुचात॥
वहु वरन वरन बूका गुलाल। करि कौतुक अति वाढ़्यो विशाल॥

बाजें मृदंग डफतार ताल। गावें सुधंग सुरगीत गाल॥
रह्यो राग रंग अनुराग छाय। सो सुख मुख करि कछु कह्यौ न जाय॥
नव रंग रँगीले नव किशोर। अँग अँग उमंग न भरे थोर॥
बलि रूप रसिक जन प्रान पाल। हियें बसौ अनुदिना दोऊलाल॥

अथ फागोत्सव

राग काफी (२६)

स्याँम घन आये री आये। करौ मन भाये री भाये॥
बड़े भाग तें पाये हैं री रसिया रसिक रसाल।
सुख आसन पधराय कें पहिरावौ कमल की माल॥
अति सुन्दर वर सोहने मन मोहन–रूप सुजान।
पलकनि की करौ आरती अरु न्यौछावर करौ प्रान॥

पद (२७)

रंगहोरी होरी सांवरे स्वरूप सौं।
मेलि मेलि गरवहियाँ केलिये, रसिक भाँवते भूप सौं॥
मन मानत सुख लेहैं ढरि ढरि, भरि भरि अंग अनूप सौं।
उर अभिलाष पुरें विहरें बलि, हिलि मिलि मोहन रूप सौं॥

पद (२८)

होरी खेलन जांने न जानें।
एहो जिन मन करौ गुमराम बन जांनें।
ऐसी रंग रेली अलबेली कौं, भरत औरे विधि भाव न जांनें॥
सीखि लेहु पहिलें काहू पें, तब करियेहु उपाव न जांनें।
रूप-रसिक यह रीति अटपटी, बिन जांनें न बनावन जांनें॥

पद (२९)

ये सुकुमार खिलार कहावत, होरी खेलन जांनत ये जू।
उमँगि उमँगि रँग भरत निठुर ह्वै, नेंक हार नहिं आनत एजू॥

अपनी सी औरन में अटकरि, बर-जोरी करि बांनत एजू।
मृदु मूरति मन हरन कुंवरि सौं, खेल अटपटे ठांनत एजू॥
जांनि परी सब आजु कुंवरई, कहत न बनत बखांनत एजू।
रूप रसिक लैहौ रुख जब हीं, पैहौ सुप मन मांनत एजू॥

पद (३०)

होरी जिन खेलौ मोसों।
भरि पिचकारी मेरे मुख पर डारी, अकरि केलि जिन केलौ मोसों॥
लाल गुलाल परी लोयन में, ललन मिलन जिन मेलौ मोसों।
रूप रसिक कहें रस न रहे अब, भरि भेलनि जिन भेलौ मोसों॥

पद (३१)

आवो आवो सजन खेलें होरियाँ।
बड़े भाग आये इहि औसर, या ब्रज बन की खोरियाँ॥
तुम जिन सोच करौ मन मोहन, हम सांवर ये गोरियाँ।
यह तौ कला हमारें करहें, दैहें रंग चहोरियाँ॥
चोवा चन्दन बूका बन्दन, अबीर भरे भरि भोरियाँ।
खेल मचै रस रेल पेल कौ, नवल किसोर किसोरियाँ॥
मन साधा पूरन करि देहैं, ए राधा गुन भोरियाँ।
रूप रसिक उन तें न रहै कछु, बलि जेहैं अलि तोरियाँ॥

पद (३२)

एरी सखी बरस सरस घन घुंमड़ि उमडि यों फागुन राज सिंगार विराजत दरस करावन नित्य किशोर। प्रेम भरी अँखिया अनुराग छकी छवि छाक छवीली छिन छिन हैं दोऊ चित के चोर॥ भाल बिंदु नग रंग गुलाल कौ श्रुति कुंडल नासा नक बेसरि अलक झलक परी भौंह मरोर। अधर बिम्ब आरक्त मधुर रसना

दशनावलि लाली भिनि भिनि उपमा कहिवे कौ मति मोर ॥
फूल गुलाब माल लालन के हृदय सरोवर कुचन बीचि रवि छवि ऊपर डारौं तिनु तोर। सुरंग हवासी वसन सुरागे रति-पागे लागे तन फवि फवि अलसांने दोउ जागे भोर ॥ जुगल रूप सखी लखि सोभा लै वलिहारी वारत तन मन वसौ हियें नित साँवर गौर। लीला ललित सुहाई सव सुखदाई भाई सहज सवाई रूप रसिक चितवौ मेरी ओर ॥

पद (३३)

हो हो हो हो होरी खेलहीं हो एरी आली नवरंग नवलकिसोर।
मदन सदन के आँगन में री जोवन मद कैं जोर ॥
पीतरंग पिचकारी भरि भरि कुटिल कटाछिन धारि।
छिरकत छविसों छैल छवीले, निज निज तनहिं निहारि ॥
उज्ज्वल हँसनि अवीर उड़ावनि, वर गुलाल अनुराग।
उमंगि उमंगि आनन्द में दोऊ, रमत हैं फूल को फाग ॥
तनसुख वागे वनि जु रहे तन, सनि सनि सुमन सनेह।
सोंधें संगम सहज में दिपति दुहुँन की देह ॥
हो हो होरी बोलहीं मुख, नेति नेति नव बाल।
नूपुरकंकन किंकनी धुनि वाजे वजत रसाल ॥
दुरि मुरि भरनि वचांवनि विचरनि हिलिमिलि मिलिहिलि हेत।
भींजि भींजि रसरीझि रीझि कौ, फगुवा देत रु लेत ॥
अद्भुत होरी को यहै री कौतुक कहत वनैंन।
रूप रसिक जो जांनहीं, जो देखत भरि भरि नैंन ॥

पद (३४)

दुरिमुरि खेल कहा यह खेलत, खरे रहौ नेंक सन्मुख दोऊ।
हमहूं निरखि छकैं छवि कैसेक, छैल कहावत निज मुख दोऊ॥
अलि वलि अभिलाषत हैं सही, होत बनें नहिं सन्मुख दोऊ।
रूप-रसिक पैहौ परपदई, रुपे रहें पद रन-मुख दोऊ॥

पद (३५)

नवल किसोर किसोरी जू होरी खेलहीं।
चहल पहल मधि महल अहल रस रेलहीं॥
सजि सजि सहचरि सौंज सबै रस रीति सौं।
आय मिली मन भांवन पांवन प्रीति सौं॥
जानि जुगल सनमांनि आपनी जो सोई।
लई सैंन सनकारि सहेली सो सोई॥
कह्यौ कमल मुख देखि दुरख सुख साज की।
खबर परैगी आज तिहारे काज की॥
जो आज्ञा कहि अली रली अँग अँग में।
जुगल कुंवरवर जोर जुराये जंग में॥
बाजा विविध बजाय गाय उमगाय कैं।
बरसत मानों मेघ महाझर लाय कैं॥
भरि भरि कर पिचकारि सुकेसरि ओद सों।
छिरकत छवि सों छैल परस्पर मोद सों॥
चन्दन चूर कपूर सुगंधनि भीर सों।
रह्यौ छाय नभ लाल गुलाल अबीर सों॥
बहु विधि बूकन मार मची रँग रँग की।
सुधि न परैं पर वर को काके संग की॥

अरगज कीचकें बीच रगोबग डोलहीं।
दै दै दोऊ करतार हो हो होरी बोलहीं॥
बड़े बहस रनधीर सरीर न सुधि कछू।
सकति नहीं सुख बरन करन में बुधि कछू॥
लैकर चौवा लाल लगायो बाल कैं।
बाल लगायौ गुलाल लालके गाल कैं॥
सनि कुंकुम घनसार सुढार सुढंगसों।
स्यामहिं किये अस्याम अपार उमंग सों॥
दाय पाय पिय लई घेरि हरि कामिनी।
अपने रंगमिलाय लई गज गामिनी॥
गौर स्यांम भये स्याम गौर तन सोहनों।
अति अद्भुत अभिराम मदन मन मोहनों॥
यह रस-बोरी होरी जुगल स्वरूप की।
करन सदा आनन्द हरन दुख धूप की॥
सकल सुकृति कौ सुफल लहैं जो गावहीं।
रूप-रसिक जन मांहि रसिकता पांवहीं॥

पद (३६)

रंग रँगीले छबीले लाल कौ रूप निहारौ री।
ऐसी अलबेली सोभा पर तन मन वारौ री॥
कहत सबै घनश्याम याहि यह किहिं ठां कारौ री।
नीकें कैं लखि लेहु लगत है जगत उज्यारौ री॥
मन कौ भ्रम श्रम दूर करौ भ्रम नाहिं तिहारौ री।
(रूप) रसिक प्रिया लायक सुखदायक उर में धारौ री॥

पद (३७)

प्रीतम प्रानप्रिया प्रति विनवत, जिय हुडियाई होरी खेलें ।
ज्यों हारें ज्यों हीं ज्यों हारें, साखि हितू सहचरि की लै लें ॥
चोवाचन्दन बूका बन्दन, अबिर गुलाल मुदित मन मेलें ।
सरस सुगंध अरगजा कुंमकुंम, भरि पिचकारि परस्पर पेलें ॥
यह जु खेल अलबेलि अहो कल, केलि सहेलि झिली रस झेलें ।
रूप रसिक रस रंग तरंग मिली विमली मद माचि मचेलें ॥

पद (३८)

मेरें को खेल में पाये चतुर खिलार ।
अंग अंग रंग भरि लीनी, हूं करि लीनी उर हार ॥
निसि वासर कल नाहिं परे पल, विनमो विमल विहार ।
रूप रसिक रस रेल पेल के, खेलन में मचै मार ॥

पद (३९)

सुनि होरी होरी कौ सुख मुख, कहि कहि कौंन कहांवहिं री अब ।
कमल कुंज कौतुक लखि लखि चखि चखि हीय सिरावहिं री अब ॥
मेरें तो जीवनि यह जिय की, और न उर महिं आवहिं री अब ।
रूपरसिक अनुराग वाग महिं, नित उठि फाग मचावहिं री अब ॥

पद (४०)

एरी सखी नवरंग नवल किशोर, खेलत फूले फूलरी रंग होरी ।
एरी सखी अरस परस रस ढोर, सुधा सरोवर कूलरी रँग होरी ॥
सोहत सहज सिंगार रँग भीने अँग अंगरी ।
अद्भुत अमल उदार कहत होति मति पंगरी ॥
वाढ़त रस की रेलि, तकितकि दोउ तन ओर री ।
छवि पावत झुकि झेलि, झक झोरनि झक झोर री ॥

दुरि मुरि भरत भरात, पुनि बचात पट ओटरी।
रगमगात उमगात, पेलि पेलि रस पोट री॥
प्रिया प्रबल रनधीर, मुचि तिनहीं तनको हिरी।
सिथिलित होय सरीर, रहे लाल मुख जोहि री॥
तन मन रहि न सम्हार अकबक रहें अचेत री।
अगदराज की धार सींचिरु किये सचेत री॥
पुनि गुलाल की मूठि मसरी भाँवती भाल री।
परि–रंभनि दै तूठि, लियो अंक भरि लाल री॥
हो हो कहि सहचारि, हरषी तन मन माँझ री।
गावत होरी गारि, सजि मृदंग डफ झाँझरी॥
बाढ़्यो विविध विनोद, करि कौतुक चहुँ कोदरी।
सुख दपटत भरि गोद, मनन समावत मोद री॥
विलसत फूल विलास, नव नागर नव नागरी।
चसे प्रेम रस चास, गुन आगर गुन आगरी॥
मची कमल कुलमार, मदन खेत संकेत री।
दोऊ परम उदार, उमगि चले तजि सेत री॥
मौलिसिरी चम्बेलि, चम्पक कुब्जक कुंद री।
जाति जुही परि झेलि सदा सुहागिल सुन्दरी॥
बरन बसंती बेलि पाडरि, परन निवारि री।
सुही सेवती पेलि सुसम, कुसुमरनि रारि री॥
इहिं विधि युगल स्वरूप, सदा सहज सुख दैंन री।
बसौ भाँवते भूप, रूप रसिक उर ऐंन री॥

राग विहागरौ (४१)

आई हुलसि हियें हुरियारनि ।
कुंजविहारी सौं खेलन होरी मिलि मधि नवल विहारिनि ॥
धरत चरन चुप वरन वरन, उप करन करन में साजें ।
लिये लाल कों अछन आय तिय, दाय पाय किये काजें ॥
झूम०–रहे चकित चित चाहि कें चखि प्रांन प्रिया तन ओरी जू ।
समझि सैन में स्वामिनी कह्यो, डरत कहा हरि होरी जू ॥
अबबोलौ हरि हरि होरियाँ ।
जब हितु सहचरि अपनी जोजिहिं, कह्यो कहा अब कीजे ।
ये आई मिलि उमहिं उदधि लौं, आदर किंहिं विधि दीजे ॥
झूम०–ह्वै निशंक विहरौव जू हम भीर तिहारें भरिहें जू ।
जथासक्ति उनमान के करजोरी सबसौं करिहें जू ॥अब०॥
पुलकि लाल भरि लै गुलाल, ततकाल सम्हरि भये ठाढ़े ।
रुपे सुभट रनधीर जुपे जुट चटक चौगुनी चाढ़े ॥
झूम०–अरस परस रँग बरषहीं सरसहिं अंग अंग अपारा जू ।
मची मार रस ढार की बहसनि बढ़ि बहसनि धारा जू ॥अब०॥
बहु विधि चन्दन चूर कपूरन, करिपूरन नभ छायौ ।
लाल गुलाल अबीर अगरवर, बदन चंद दुरायौ ॥
झूम०–दशहूँ दिशि चक चूँधरि उड़ि, धूरि धूँधरी उठी जू ।
सुधि न परैं को कौंन की तौऊ न पांवैं पूठी जू ॥अब०॥
बहु विधि सुरंग रंग बूकनगन, ढवि सौं ढूकि चलावैं ।
लागत अचूक अमल अंगन पर, उपमां कहत न आवैं ॥
झूम०–रही अकबकी जकी सी रसछकी, त्रिया तन तरनी जू ।
आज अहो इनिमें कोउ यह, आई अपूरव अरुनी जू ॥अब०॥

कहत प्रियाजू भली होहु मोन जियें में जानी।
आज कहा करि हैं हमरोजिनि, सदा हारि मन मांनी ॥
झूम०–सँभरि सँभरि सहचरि सबै, घन घुमड़ि उमँड़ि यों आई जू।
कुंम-कुंम केशरि नीर की, झुँम झुँम के झरी लगाई जू ॥अब०॥
सोर बोर भई ओर ओर की, जोर जोर की जोही।
हारि हरि कें रही सबै धन, वारि वारि कैं सोही ॥
झूम०–इतनेंई जुगलकिसोर की, इक निपट नेहनी वाला जू।
मन इच्छा अनुसारिनी जिनि कीनों आनि विचाला जू ॥अब०॥
सुख स्वरूप अलि कह्यो अहोवलि रंग रह्यौ बहु भारी।
तुम दोऊ जीते पुनि जीते, हम हारी पुनि हारी ॥
झूम०–फगुवा मांगें कौंन पैं तुम तौ, दोऊ जीति जनाई जू।
हमहीं फगुवा देत हैं, अबलेहु लियो जो जाई जू ॥अब०॥
तनक विरमि बैठो बलि हिलिमिलि, हम आरती सजोवें।
निरखि निरखि शोभा सनमुख की, मन को दुख श्रम खोवें ॥
झूम०–बाजा विविध बजाय कें, मुख हो हो होलें बोलें जू।
मिलि मांनसी मंजूष के महा रतन अमोलक खोलें जू ॥अब०॥
एक एक ते अधिक अधक जे, कहे कौंन पैं जाहीं।
जाय समेट्यौ तौ बस मेट्यौ भेटौ भरि भरि बाहीं ॥
इहिं विधि अद्भुत रीति सो, यह हुरिपानि हरि होरी जू।
रूप रसिक उर में बसौ, अनुदिना अनुपम जोरी जू ॥

पद (४२)

लाडिली रवन संग रंग होरी खेलें।
अतन तरन बहु जतन सकेलें ॥टेक॥

सहज सुभाव रंग रंगी सहचारी।
सजि सजि सौंज सबै खेल मच्यौ भारी॥
झूम०–अवधि अवधि सुख की महा जहां जुगल स्वरूप विहारें जू।
बडभागनि जे फागमें उर भरि अनुराग निहारें जू॥
रस रंग भरे दोऊ लाडिले।
लाल कलै लाल बाल लाल लाल कीलै बाला,
उरन उमग रंग बाढ्यौ है बिसाला।
झूम०–रंग महल रस चौक में रसरंग कुलाहल छायो जू।
रस रंगनि दुहूं ओर तें कलजल जंत्रन झर लायो जू॥ रसरंग०
अबीर गुलाल बूकावंदन उड़ावें;
होहो होरी होरी हो हो वचन सुनावें।
झूम०–चोवा चंदन कुंमकुंमा केसरि करपूर मिलाये जू।
भरि भरि पिचका पेलहीं रस रेलिहि रेलि सुहाये जू॥रसरंग०
भीजि भीजि बसन लसन तन लागे।
रगवगे अंग अंग सगवगे बागे॥
झूम०–अलबेले आनंद-मय अरु अहलादनि अलबेली जू।
चढि चढि चौंपनि चौगुनें मिलि करत मनोरथ केली जू॥रस०॥
छबिसौं छबीली छैल छल बल करिकैं।
प्रीतमकौं दौरि प्यारी लीनें अंक भरिकैं॥
झूम०–परस सरस पुलकावली प्रति अंगनि अंग प्रकाश जू।
निधि पाई सब सिद्धि की अधिकाई उदधि सुधासी जू॥रस०॥
नीलांबर पीतांबर गहि गांठि जोरी,
तारी दै दै गावै गारी मिलि सब गोरी।

झूम०—एक हि रंग बोरे दोऊ तन गोरे स्यांम दिखावत जू।
रूप-रह-चटे में लगे ये सबके नैन रहावत जू॥ रस०॥
बाजन साजन सुर सकल सुहाये।
डफकी टंकोर सुनि मदन सुहाये॥
झूम०—राग रंग चहलें परी सहचरी रहस रस राती जू।
लै लै फगुवा लागकें दई सौंपि आपनी थाती जू॥रस०॥
अद्भुत अनूप सुख बाढ्यौ है विसाला।
जुगल स्वरूप रूप रसिक रसाला॥
झूम०—कहत बनैं नहिं बैनते यह सुख कौ सिंधु अगाधा जू।
रूप-रसिक उर में बसो यह हरन अमंगल बाधा जू॥रस०॥

राग धनाश्री झू० पद (४३)

दोउ लाल रमें रसरंगरियां।
होलें होलें बहोलें। हम्बे हम्बे यों बोलें॥
रसरंग महल रस चौक में, रसरंगनि केलि कलोलें जू।
रसरंग रचे अंग अंग में, उर भरे उमंग अतोलें जू॥
रसरंजु मंजु महारजित की कर-कंज पिचकियां सोहें जू।
रस बहस बढ़े चोजन चढ़े, छिरकें छवि अछक छकोहें जू॥
रस सार सुढार सुढंग सों, ढरि ढरत भरत अंग अंगे जू।
रस रंगतरंगनि तर भये, करि लये अतर तिरभंगे जू॥
रसरेलि झेलि रंग रगवगौ, सगवगौ कियौ सरबंगे जू।
नहिं जांन परें को कौंन हैं, मिलि भये एकही रंगे जू॥
रसकेंजु सरस-पनकी सबै, सुबनाय बड़ाई ठानै जू।
जिहि मिले रंग भयो राचनौं, विदु सांचहिं माच बखानै जू॥

रस रह्यो रंग अंग अंग में, रंग हरयो भरयो भरपूरें जू।
रसरंगसुरंग जु रंग ह्वै, अनुराग्यो भागनि भूरें जू॥
रंग गवर अंग रस में रस्यो,लसि बस्यो विवस वस बासें जू।
रसरंग रह्यौ मिलि गहगह्यौ, नहिं जात कह्यौ ए आसें जू॥
सुखजांनत हैं रसरंगहीं हिय जांनत कैं ए नैंना जू।
वलि रूपरसिक या रूप की छवि कही जात नहिं वैंना जू॥

राग ग्रासा सिन्धु पद (४४)

रंग महल राय आंगन में पिय प्यारी रमें रस होरी हो।
अद्भुत रूप अनूप अलौकिक बनी मनोहर जोरी हो ॥टेक॥
तैसीय रंगरेली अलबेली संग सहेली सुहाई हो,
सकल खेल की सौंजनि सजि सजि सिमिटि एक ठां आई हो।१
झूम०—सहज रंगीले महल में सहज रंगीली जोरी जू।
सहज रंगीली सहचरी ए विलसांवें रस होरी जू॥
वलि जाऊं जुगल किशोर की ॥२॥
वाजा विविध वजावत गावत झूमकरा कल वोलें हो।
विचि विचि हो हो होलें उघटत उमगी अंग अतोलें हों॥३॥
झूम०—चन्द्रकांति मनि चह वचें केसरि कौ नीर भरायौ जू।
विविध सुगंध मिलाय कें तन मन में मोद वढ़ायो जू॥वलि०४
देखी दंपति सुख संपति सखि सैंननि में सनकारी हो।
ह्वै मधि नायक अप अपनिन में खेल मचायो भारी हो॥५॥
झूम०—कर कंचन की पिचकरी अरु भरी नेह रंग भारी जू।
छलसों आनि अचानकें प्यारी पिय ऊपर डारी जू॥वलि०६
वरसत रंग रंग-धार अपार परस्पर मार मचाई हो।

.....

झूम०–विधिकृति संसृति में अहो अब या उपमां कों कोहैं जू।
घन दामिनि रति कांमकी ए कोटिक कला बिमोहैं जू॥बलि०
बाल कोऊ भरि थाल अबीर गुलालन जाल उड़ावें हो॥
बदन चंद मनु बंदन बुरके इहिं छिन यों छवि पावें हो॥
झूम०–प्रकृति पुरुष तें जो परें सचिदानंद सरूपा जू।
आदि मध्य अवसान में ए रमत एक रस रूपा जू॥बलि०॥
प्रिया सैन समुझाय सहचरी कह्यौ करें मन भाई हो।
पीतांबर घनस्यांम पिया कौ छलसों लेहु छिनाई हो॥
झूम०–मन अनुसारनि सहचरी ए सदा सहज सुखदाई जू।
अलछित अंजन दै दृगैं अलि चलियन देति दिखाई जू॥बलि०
कियौ कह्यौ जैसैं छल करि कैं पीतांबर गहि लीनो हो।
अपनी जो सिरमौरि स्वामिनी ताहि निवेदन कीनो हो॥
झूम०–रीझि दई उर तें प्रिया पिय संग मरगजी माला जू।
पहरि पुलक भई अंग में अति बाढ्यौ रंग रसाला जू॥बलि०
कह्यौ स्यांम अपनी सहचरि सों इनि तौ ऐसिय कीनी हो।
तुमसौं होत करौ तुम तैसिय बहुविधि छल बल बीनी हो॥
झूम०–ए प्रानेस्वरि प्रीतमां हम सब इनहीं तें जीवें जू।
इनिकी कृपा कटाच्छ तें या अंमृत रस कौं पीवें जू॥बलि०॥
हमरौ छल बल कछु हु न लागै सुनौं सिरोमनि राई हो।
और उपाय नहीं अब तुमकौं नहिं करिबें सो आई हो॥
झूम०–यह तौ उचित हि रीति हैं विपरीति न मानों कोई जू।
ह्वै आई है आदि तें कहा नहिं जांनत तुम जोई जू॥बलि०॥
प्रिया कहैं लीजे पीतांबर तनक हाथ यों कीजे हो।
यामें कछू जोर नहिं आवैं समें जांनि सुख लीजे हो॥

झूम०–इतनी सुनि मृदु बैनतें सैननि में हा हा खाई जू।
रूपरसिक प्रिया दौरिकैं प्रीतम कें उर लपटाई जू ॥बलि०॥

राग आसावरी पद (४५)

आज समय नीको सखी लागत, दोऊ लाल खेलें होरी री।
तैसिय अंग अंग रँग भीनी, संग लिये सब गोरी री॥
अपने अपने टोल गोल सजि, सौंज सकल सुखकारी री।
कुमकुम केसरि चन्दन रोरी, भरि भरि कर पिचकारी री॥
रंग रंग रस-धारनि मारत, उमसि उमसि दुहुँ ओरी री।
अति अनुराग भाग रस भीनी, करलीनें सर बोरी री॥
झकझोरनि मोरनि मुख ठिठवनि, भौंह मरोरनि सरसें री।
दृग नचवनि बंक कटाछिन आनँद घन ज्यों बरसें री॥
पिकबैंनी मृगनैंनी निधरक आनि हिये लपटावें री।
रसिक कुँवर को त्यों त्यों सजनी, लीला अति जिय भावें री॥
गहिकर फेंट मँगावत फगुवा, मेवा मन मन माने री।
बसन विभूषन रुचि अपअपने, लह्यौ सबनि सनमानें री॥
इहि विधि यह अद्भुत सुख लूटत, कह्यौ जात नहिं बैंना री।
लसौ बसौ अलबेलि रेलिरस, रूप-रसिक उर ऐंना री॥

पद (४६)

नवल खेल नव रंग किशोरी, नवल लाल खेलें होरी री।
नवरंग केसरि घोरि सखी सब भरि भरि लांई कमोरी री॥
लई सैंन सनकारि सहेलिन करि करि अपनी कोरी री।
उठे सुभट रनजीत कुँवरवर, मार मची दुहूं ओरी री॥
फगुवा मांगत लाग आपनी, मिलि मिलि के सब गोरी री।
रूपरसिक अभिलाषत हैं यह, नित प्रति विलसौ जोरी री॥

पद (४७)

मेरी बहियाँ पकरि झकझोरी, निठुर ह्वै कैं ऐसैं खेलैं होरी।
निठुर कहा निठुराई यहै, प्यारो सीखत हैं बरजोरी॥
नव जोवन इतरीलौ छबीलौ, रँगीलौ गुन गरबीलो।
चटक भरयौ चटकीलौ रसीलौ, अड़ीलौ सौ हियें बसीलौ॥
फागुन अगम जनावत री मोहिं, अति रस भरयौ विहारी।
तू है मेरी परम हितू तातें, कहति हौं सोंह तिहारी॥
सैंननहीं के बैंननहीं सों विनवत रूप रसी कौ।
सब सुख सागर नागर नित्य किशोर कुँवर बरनी कौ॥

राग सारंग (४८)

तोसों को खेलें विनि खेलें ही खेलन लागौ रे।
तूतौ वही काल्हि वारौ, आँखिन में गुलाल डारि भागौ रे॥
उनमत ज्यों आवत उरझ्यौ ही अवलोकत नहिं आगौ रे।
रूपरसिक अनुरागें तोसों, ताही सों अनुरागौ रे॥

पद (४९)

मारौ री मारौ याहि गहि गुलाल, गालन पै लै।
फिरन कढ़ कबहूँ या मुख तैं, बढ़ि बातें बालन पै लै॥
अररायो आवत उमड़्यौ ही घुमड़्यो घर घालन पै लै।
रूप रसिक रीझि हैं जब हीं जिय, जुवतन के जालन पै लै॥

राग सारंग मलार (५०)

प्यारे हम नाहीं खेलत होरी।
हो हो करत अरत ही आवत, दिखरावत बरजोरी॥
नये खिलार लाड़िले मुख पर, लै लपटावत रोरी।
रूप रसिकई जांनि परी अब, देखत हैं सब गोरी॥

पद (५१)

प्यारे तुम अनत जाय खेलो होरी, हम नहिं खेलत होरी ॥
आये आप चुचात रंग में, भरे गुलालन झोरी।
मीड़त नैन अरुन छवि राजत, दुरत न सौरभ चोरी ॥
नांहिन प्रिया सखीन सँग में रमत रंग में बोरी।
रूप-रसिक पिय सों हँसि चितई, लई अंक भरि गोरी ॥

पद (५२)

खेलत रंग भरे रस होरी।
कुंज महल दम्पति सुखरासी, साँवरे स्यांम स्वामिनी गोरी ॥
भरत परस्पर अंक गुलालनि, नैननि पिचकई भरि भरि छोरी।
दशन अबीर रसन मृदुबानी, नूपुर धुनि बाजत घन घोरी ॥
टूटत माल मनों सुर बरषत, सुमन सुखद हरषत सब ओरी।
रूप रसिक रस फगुवा पावत, हँसनि मिलनि रिझवनि मुख जोरी ॥

पद (५३)

प्यारे तुम जैसें खेलत हौ तैसें कैसें मन मानैं मेरौ होरी।
चोवा चन्दन और अरगजा, केसरि गागरि ढोरी ॥
अबीर गुलाल उड़ाय रहे मोहिं, मानि महामति-भोरी।
खेल्योई चाहत हौ तुम खेल तौ खेल की रीति न थोरी ॥
रीझि रहौगे रँगीले जबै ह्याँ तौ रूप रसिक रस बोरी ॥

पद (५४)

लालन भले बनें अंजन जुत अँखियाँ मोहें मन रंजने।
आउ उरें न डरौ लै पोवैं, पट सों प्रीति-पनै ॥
रूप-रसिक हौ तुम हम हू हैं, रूप रसिक रसनें ॥

राग कालिंगरा (५५)

बराजोरी होरी खेलैं इन्हें समुझावन कोरी।
घूँघट खोल कपोलन ऊपर लै लैं लगावत रोरी॥
चाहत हैं चित में कछु आजहिं लीजिये री भर झोरी।
खेल तो होत है खेल की रीति सौं, यो किये पावत थोरी॥
काहू की कान करैं न डरैं जिय छैल भयो है नयो री।
रूप रसिक सुधा रस कौं, चसकौं मन भावत ओरी॥

पद (५६)

अनोखे होरी के खिलारी।
भींजत चीर लाल मोतन कौं जिन डारौं पिचकारी॥
कह्यो सुन्यो नहिं मानत काहुकौं, हो कोऊ बड़े अनारी।
रूप रसिक कहा इतरावत, आवत हैं मुख गारी॥

पद (५७)

अनोखे खिलार घर जान दे।
कबकी हौं आई मेरी दया सुनत न काहू की कान दे॥
हा हा करैं तौऊ हटत न तनकउं समझाये समझान दे।
रूप रसिक न मानैं एकहुँ, भले सिषये गुरु ज्ञान दे॥

राग सोरठ (५८)

बोलैं हौलैं २ हौलैं २ डालैं रँग-भीने दोऊ लाल।
संग रंग भीनो नव-जुवतिन कौ जाल॥
खोरि खोरि भरत फिरत करत रंग रौरि।
सहचरि अनुसरत सुरुप दुरुप दौरि दौरि॥
अहल अमल महल मध्य चहल पहल केलि।
विविध वर सुगंधनि की मची रेलि पेलि॥

रज कपूर पूर चूर चन्दन की चाल।
उड़ि गुलाल धूंधरि नभ भई धरनि लाल॥
बाजे डफ ताल वीन वांसुरी मृदंग।
अमृत कुंडली उपंग महुवर मुखचंग॥
भरैं मोद चहुँ कोद सुन्दरी सुगात।
चर्चरी में चाँचरि मचाई रंग रात॥
रंग रह्यो जो कह्यो कापैं यह जाय।
जुगल सुख स्वरूप जामें रहैं लुभाय॥
होरी रंग बोरी स्यामँ गोरी की सुदेश।
रूप-रसिक निरखि भयो आनँद असेस॥

पद (५६)

अधोरी रस चांचरि खेलें, अति रस चाचरि खेलही पिय प्यारी आजें।
अंगनि अंग उमंग सोंमिलि सहज समाजें॥
मिलि सहल समाजें,हो हो हो हो अतिरस चाँचरि खेलें।
गावत होरी की केलि बाजें बहु भाँतिन बाजें॥
ताल मृदङ्ग उपंग चंग मधुर सुर गाजें।
महुवरि ढोलकि ढोल सारंगी अरु सहनाई॥
मंगल भेरि निसान संख सुर संच मिलाई।
अपनें अपनें झुंड सों मिलि नाचत नीकी॥
नव-नव केलि बढ़ाई मन मोदन ही की।
उठे लाड़िली लाल खेल की धूम मचाई॥
एक ओर भये लाल प्रिया इक ओर बनाई।
चोवा चन्दन अबीर गुलाल की मार सुहाई॥
अरगज केशरि नीर की रँग झरी लगाई।

भेल सेल भये गोल दोउ हारत नहिं कोई ॥
करत परस्पर मार शब्द हो हो हो होई ।
घेरि लिये घनस्यांम प्रिया मुख हारि मनाई ॥
नैंननि नैन मिलाय, सैंननि में हा हा खाई ।
मिले लाड़िली लाल चले नव कुंजहिं केलन ॥
दरवर सेती दौरि रची सुख सेज सहेलन ।
या सुख को जो जानहीं गम्भीर जे आसें ॥
रूप-रसिक रस केलि के खुस खेल खवासें ।
हो हो हो हो हो अति रस चाँचरि खेले ॥

राग सोरठ (६०)

माते आनन्द के होरी खेलि खेलि दोउ छैल ।
बाहाँ जोटी कियें आवत रस पीयें मंजु महल की गैल ॥
अंगनि अंग उमंग भरे अलबेले अलक-लड़ैल ।
रूप-रसिक सुख सुरत समोये सोये सेज सचैल ॥

राग बिभास (६१)

खेलत होरी में गोरी के, सीस पैं ढोरी है श्याम सनेह की शीशी ।
ह्वै कें सगोवग स्यांम के अंग सों स्यामजू ऐ कैं करी अपनीसी ॥
रूप-रसिक सबै सहचरि, रही उनिहारि निहारि जकी सी ।
आजुकें फाग अँही अनुराग सों लाग रहौ बल दे उन खीसी ॥

पद (६२)

लै पुन चोवा को ऐ पुन पीय करै पुनि चाहत मोहिं करोहीं ।
मो तन रंग न रावरे अंगहिं सो न सहयो परै हीमें परोहीं ॥
होत कहा पछिताव किये अब तौ नहिं फेरे फिरें सबरोहीं ।
रूप-रसिक किये विधि तैसै अहो न करौ अब असहय अरो हीं ॥

पद (६३)

ऐसे कहा जु खिलार भये महा भौंर हीं लाये हो होरी की ढोरी।
नींद कहूँ निशि आई कि ना अतुराई सों उठि आये एहीं ओरी॥
खेलत तौ सब ही कोउ है तुम कोउ अनोखिय खोर निखोरी।
रूपरसिक रसासव में छकि डोलत हौ डहके बर जोरी॥

पद (६४)

खेलत होरी मरोर सों गोरी, यों गोरी सों होरी मरोर सों खेलौ।
रेखत हैं रंग यों अलबेलियों, अलबेलिय सों रंग रेलौ॥
जानत हौ पैं जनावत हैं हमें, आवत हैं भ्रम सों सरपेलौ।
रूपरसिक हिय हरषें निरखें, भरि भरि नैंननि नेह नवेलौ॥

पद (६५)

लोचन ललची ललचोयें रहत उमहत ये अति होरी के।
लहत न पल उपरम अनुपम, अस भये बस रस बोरी के॥
ओर ते छोर भरे ई रहे तउ आतुर इहिं ओरी के।
रूपरसिक वितावत यों छिन, गावत गुन गोरी के॥

(पद) ६६

आज फाग अनुराग भरेन नागर नवल निकुंज विहारी।
सिथिलित वसन गुलाल सगोवग रंगे हैं रगोवग रंग महारी॥
उमग्यो है रति रंग धार अपार छुटे पिचकारि कटाच्छ अन्यारी।
रूप चहल में परे अहल दोउ सुख लूटत सनमुख सहचारी॥
जोवन जोर मरोर महामत्त अटकि रहे अटकनि मतवारी।
रूपरसिक अभिलाप लाखगुन, अद्भुत केलि की रीति निहारी॥

डोलोत्सव

राग गौरी (६७)

आवो री मिलौ सहेलियाँ हरि जू कौ निरख हिंडोल री।
वर कनक रचि चौकी बनी, तामें मानिक लगे अमोल री॥
कुसुमावलि बहु भाँति चहूं दिसि फबी फूल सुभाय री।
सौरभ सुरंजन मंजु गुंजत, मधुप-पुंज लुभाय री॥
मृदु बजत ताल मृदंग ध्वनि, बीना मधुर-सुर झीनरी।
जैसें ही गावत नागरी नव-तरुनि परम प्रवीन री॥
केसरि सुकुम-कुम अरगजा, उड़वत गुलाल अबीर री।
बहसनि बिहँसि डारैं सबै, रसरंग रमत सुधीर री॥
नाना जु विधि कौतुक करैं, बहु विधि के वेष बनाय री।
मनहर परस्पर हँसत सुंदर, सुखद सब सुख पाय री॥
दम्पति जु झूलत रंग भरि, सहचरिन सब सुख दीन री।
चाहति सु सब मिलि एकटक, मनु चित्र चित्रित कीन री॥
दोउ न्याय मोहन मोहनी दृग, जोहनी रस जाल री।
तन पीत पट गुंजावली, उर लस रही बन माल री॥
सिर क्रीट श्रुति कुंडल लसे, गज मुक्त सोहत नाक री।
मनु सुकल-अलि बस चम्पकलि रस लेत निपट निसंक री॥
कर कनक कंकन बनक के, पहुँची सुमुँदरी हाथ री।
नखन गन दुति झलकैं मनहुँ दल कमल के नग साथ री॥
कटि कछें काछनि अरुन तापैं पीत पट छबि देत री।
घन स्यांम सोभा सकल सजि मनु उमह्यौ तड़ित समेत री॥
सोभा प्रिया जू की को कहै, उजियारी रूप रसाल री।
बिन कलंक मानों मयंक, अर्द्ध सपर्द्धदा रुचि भाल री॥

बनी भौंह धनु पंकज नयन, मनु उड़कि अलि ये अधीर री।
सुक नासिकाधर बिम्ब फल, तिहिं चखनि आयो कीर री॥
सुभ्र सु कपोलनि मनि झलक श्रुति सुमन जटित जराय री।
दियें चिबुक स्यांम दिठौंन मनु अलि छौंन रह्यौ ललचाय री॥
कलकंठ सुघट सुपोतिमनि-जुत दांम विविध विधाय री।
कुच कलश पर छवि देत मनु दिछ्यासुघट सुखदाय री॥
भूषन सुभूषित भुज बनें, बहु भाँति वर छवि देत री।
कटि किंकिनी नूपुर सुपायनु, अँग अँग सुख हेत री॥
मन हरनि बांनिक विविन की, वरवरनि जात न बैंन री।
बलि रूप रसिक निहारि नैननि, धारियें उर ऐंन री॥

पद (६८)

चलि देखौं री डोल सुहाई। पिय प्यारी झूलन आई॥
वृन्दावन सहज सुहायौ। नव कुंजमहल छवि छायौ॥
जहाँ कनक सिंहासन राजैं। मखतूली डोरनि साजैं॥
हरि राधे निरखें जाई। घन दामिनि की छवि पाई॥
एरी कर पंकज छवि कोरी। दोउ कीनें बांहाँ जोरी॥
पिय कंठ भुजा गहि मेली। कुच परसें सरसें हेली॥
प्यारी नैंन कटाछि चलावैं। पिय दौरि कंठ लपटावैं॥
सुख सागर भरयो अपारा। नव नागर वर सुकुँवारा॥
पिय सीस किरीट सु सोहैं। कुँडल वनमाला जोहैं॥
भुज भूषन कंकन छाजैं। मुंदरी नग जटित विराजैं॥
कर पंकज दल उनहारी। नखमनि दुति शोभा भारी॥
उर सोहत मोतिन माला। नगमनि लखि हृदय विसाला॥
कटि पीत पिछौरी बाँधें। उपरेंना सोहत काँधें॥

काछें कछनी अरुन सुहाई । किंकिनि कटि अति छवि छाई ॥
पद नूपुर कनक विराजें । सब अंग मदन छवि लाजें ॥
प्यारी चन्द वदन उजियारी । लसि सीस अलक निसिकारी ॥
दृग मृग उपमांनि लजावें । सुक नाशा अति छवि पावें ॥
धर विम्ब लुब्ध मनु आये । नहिं परसत जनु डहकाये ॥
श्रुति कल कपोल छवि छाजें । अति सुन्दर चिबुक विराजें ॥
सुभ ग्रीवा स्याम सुपोती । मनि मुक्ता हार सुजोती ॥
कुच कनक कलस छवि धारें । भुज छवि मृनाल गहि वारें ॥
पल्लव कर पद छवि होई । मन हरत जोति नख सोई ॥
कटि छीन उदर मधि रेखा । मनु धरयौ सिंह नर वेषा ॥
दोउ उरूजघन पद जोहें । उपमा कहिवे कों कोहें ॥
तन वसन कनक मन सोहें । छवि जगमगात अति होहें ॥
तन वसन कनक मन सोहें । छवि जगमगात अति होहें ॥
सब अंगविभूषित राजें । रमकें झमकें घन लाजें ॥
जहाँ सखी सहचरी गावें । वहु बाजा विविध बजावें ॥
मुखि निर्तति नटी सुहाई । जुत ताल तांन सुखदाई ॥
जहाँ उड़त गुलाल अबीरा । चोवा चन्दन केसरि नीरा ॥
छवि देखि देव मुनि हरषें । नभ कुसुम कनक मय बरषें ॥
महा गाँन निसांन बजावें । सुर दम्पति को रिझवावें ॥
महा आंनँद होत वधाई । सब थकित भये सुख पाई ॥
जहाँ चलत सुगन्ध समीरा । सीतल सुखरासी धीरा ॥
दोउ झूलत फूलत प्यारे । पल चहत न तन भये न्यारे ॥
अलि यह सुख निरखें नैंना । सोई रूपरसिक सुख दैंना ॥

राग विहागरो (६६)

आज छवि नैंन निहारौ री।
झूलनि डोल अमल अनुकूलनि लै उर धारौ री॥
सोहत सुन्दर खम्भ मनोहर, लगत अचम्भ निहारि।
ललित माधुरी वलित कलित दुति देति सहेति मयारि॥
मुरवनि मुरनि मनोरथ पुरवनि डांडी सुभग सुढार।
परम प्रभा पटली अटली, पर पुलकि चढ़े सुकुँवार॥
झूमि झूमि झमकनि दिवि दमकनि, रमकनि रस सरसात।
झटकि झटकि झट चटकि चटकि चट लटकि लटकि लटकात॥
उमँग अंग अल अनंग रंग रल बलकत बलकल बैंन।
झलकत झलमल विमल वक्षस्थल लखि कलमल रति मैंन॥
मचकि मचनि में लचनि अंक आतंक उपावत ओप।
देखत दृग निमेष न लागत, पगि जु रहे पग रोप॥
विसद केलि अलबेलि रेलि रस झेलि झेलि दोउ लाल।
परम पोष पागे अनुरागे, अरस परस अँकमाल॥
झोटा देति अली अनुवर्तिनि सन्मुख रुप सचुपाय।
प्रेम मगन तन मन धन वारति सुधि बुधि सब विसराय॥
छिरकत छींट छबीली छवि सों सरस सुगंध सँवारि।
अबीर गुलाल उपरि बुरकावहिं अति विचित्र सहचारि॥
कियो चारु पिछवार फागु को राग रंग रस रीति।
बरनत बैन बनैं न यहै सुख रसमय रहसि पुनीति॥
विलसत इहि विधि झूल फूल में जुगल सुरूप अनूप।
रूप-रसिक उर बसौ सदा दोउ रसिक भाँवते भूप॥

पद (७०)

री नव-रंग झकोरनि झूलनि नैंन निहारि।
डोल अमोल अमल अवनी पर रची रहसि रस ढारि॥
गौर स्यांम अभिराम अंग छवि कवि को कहै उचारि।
सहज मनोहर सोभा लखि चख डारौं रति पति वारि॥
मुदित मचावति जात परस्पर करत बात रुचिकारि।
रसिक सुरूप सखी अवलोकति तृपति न लहति लगारि॥

फूल डोल

राग कल्यान (७१)

झूलत फूले फूल डोल पर नवल युगल पिय प्यारी।
अरस परस अंसन भुज दीनै नेह नवीन विहारी॥
नख सिख भूषन सोहति सुन्दरि मोहत मन सुकुँवारी।
श्री रँग देवी चँवर ढुरावति झोटा देत ललितारी॥
अप अपनी सब सौंज लिये कर ठाढ़ी सब सहचारी।
नृत्य करें गावें रु बजावें मधुर मधुर सुर सारी॥
मृदु मुसक्याय बुलाय सैंन सों दियो जुहार उतारी॥
रूपरसिक रीझवार लाड़िली सखियन कों सुखकारी।

पद (७२)

देखहुरी देखहु दम्पति की झूलनि फूलनि डोल की।
अंग अंग उमगात बात बतरात जात मृदु बोल की॥
फूल बसन भूषन भूषित तन सोभा सजत अतोल की।
उर अनुकूलनि फूल बढ़ावत सहचरि फूली गोल की॥
निरखि निरखि फूले खग मृग दृग लगी टगटगी डोल की।
रूपर-सिक जन मगन भये मन पाई निधि अनमोल की॥

पद (७३)

संपति दंपति केलिहि की, अलबेली रही रस झेलि महारी।
मंजुल फूलनि फूल फवी, सु छवि कवि पें कहि जाति कहा री॥
सौरभ-मत्त मधुव्रत पुंज सु गुंजहिं कुंज निकुंज अहारी।
रूप रसिक जू हैं धनि जो इनि लोइनि तें लखि लेति लहारी॥

राग बिहागरो (७४)

फूले फूले राजत हैं फूलन की डोल पर,
फूले फूले फूल की माला उर पहिरें।
फूलन के भूषन बसन फूले फूलन के,
फूले फूले फूलनि की छूटैं छवि छहरें॥
फूली प्यारी कहैं बात फूल से झरत जात,
फूले पिय रीझि भीजें अंग रंग गहरें।
फूले फूले देखि रूप-रसिक प्रवीन दोऊ,
फूले नैंन मीन परे माधुरी कें दहरें॥

अक्षय तृतीया

राग सारंग (७५)

आज अक्षय तृतिया तिथि आई।
करहु तयार चारु घसि चन्दन, जग बन्दन तन चर चौजाई॥
शीतल शीतल भोग सँवारौ, डारौ मधि घन सार इलाई।
सिखरनि भात सतू आदिक सब नाना भाँति रचौ रचनाई॥
सीतल मेवा सरस मिठाई मोदक सहित महा मन भाई।
भोग धरें प्यारी पिय आगें, आरोगें अति ही रुचि पाई॥
लै सीतल सरवत अँचवावो उपजावौ सुख सीतलताई।
सीतल सारँग राग सुनावौ सीतल गति बाजे बजवाई॥

आदि जुगादि चली आवति है यह उत्सव की रीति सदाई।
रूप-रसिक जन जानत हैं जे ते या रस में मगन रहाई॥

पद (७६)

बनी छवि-चन्दन की चरचनी।
स्यांमा स्यांम अंग पर सजनी रंग बढावत घनी॥
चन्दन लसन बसन भूषन तन कान्ति न जाति गनी।
चन्दन चारु सिंहासन चहुँ दिसि चंदन सोंज बनी॥
चन्दन हीं चन्दन कौ लेपन राख्यौ रचि रमनी।
रूप-रसिक अवलोकि होत हैं सीतल सरब जनी॥

पद (७७)

सीतल आज उसीर भवन श्री राधारवन रंग बरसावें।
सीतल अंग सिंगार किये सब सखियन के हिय जिय सियरावें॥
सीतल नैंन सैंन में बातनि सीतल बैंननि कहें कहावें।
रूप रसिक बड़भागनि सहचरि सदा निरन्तर दर्शन पावें॥

पद (७८)

स्याम घन तन चन्दन छवि देत।
देखहु री देखहु अति अद्भुत, चितैं चुराये लेत॥
मनहुँ मंजु मनि नील सैल पर खिली चांदनी सेत।
किधौं भीतर ते बाहिर प्रगट्यो प्रान प्रिया के हेत॥
नहिं समान पटतर दीवे कूँ उपमां आन अचेत।
रूप-रसिक रस उपजांवन मनु मीन केत कौ खेत॥

जल विहारोत्सव

पद (७९)

जल क्रीड़ा व्रीड़ा तजि करें।
युगल किसोर जोर चहुँ ओरनि गोरिन के गन मन हरें॥

छिरकत जात गात छल छन्द करि अति आनँद उर में भरें।
रूप-रसिक रस वहस बढ़े दोउ मनहुँ मेघ दांमिनि अरें ॥

पद (८०)

प्यारी पिया मिलि कें अलि जूथ सँवारि विहार करें जमुनां में।
न्हावत जात परस्पर यों पुलकावत गात न मात मनां में ॥
लै कबहूँ कर सम्पुट में जल छींट चलावत जीति जनांमें।
ए इततें वरसें सरसें पुनि रंग उमंग भरे सजनां में ॥
केलि मची रस रेलि सची न बची कोउ हेलि सुपेलिपनां में ॥
रूप रसिक सुख सोई जु जांनत जोई जु जी अपनांमें ॥

राग कल्यान (८१)

अरस परस मिलि कंत कामिनी कमल कुलन कल मार मचाई।
मृदुल मनोहर सुरंग रंग के अंग अंगन प्रति परसहिं जाई ॥
झेलहिं पेलहिं पुलकि दोऊ जन तन मन मोद बढ़्यौ अधिकाई।
रूप-रसिक बड़भागनि सहचरि देखत दृगन निमेष न लाई ॥

पद (८२)

सुभग सुरूप सरोवर में मिलि करत केलि कल कुंज विहारी।
अरस परस वरसत वहसनि वढ़ि विपुल पुलक मन मोद महारी ॥
उछरत छींट सचैंन दैंन उर मांनहुँ छूटत मैंन फुहारी।
रूप रसिक जन जानत जेऊ, जिनि यह शोभा नैंन निहारी ॥

रथोत्सव

राग सारंग (८३)

देखहु री शोभा या रथ की।
विविध भाँति जग जोति जगमगी नग मोतिन के गथ की ॥
कंचन साज सुरंग तुरंगम, चंचल चलनि सुपथ की।
अति छवि जाल जरी परदनि पर झालर औप अकथ की ॥

ता परि बनि बैठे सजि सम्पति, दम्पति रति मनमथ की।
चले रले रस पुंज कुंज मग, लै सहचरि निज सथ की॥
मास असाढ़ शुक्ल पख पावन, आंवनि दुतियातिथि की।
रूप रसिक जन की मन भावन, और वहाँ वन व्यथ की॥

पद (८४)

रथ पर राजत जुगल किसोर।
नंद नँदन वृषभान नंदिनी सोभा साँवर गोर॥
भूषन वसन सुरंग रंग अंग अंग उमंग न थोर।
तैसीय सहचरि मन मोहत बनीठनी चहुँ ओर॥
हांकति हितू हरष हिय में धरि लियें हाथ में डारे।
रुख अनुसार सुगति चित चावति चलवावति चतुघोर॥
कोऊ सखी चमर छत्र कर, लियें रचित पर मोर।
चले रले रस रंग महल मग, जगमग जोवन जोर॥
नाना केलि कला कौतूहल, छाय रह्यो नहिं छोर।
रूप-रसिक निरखत हरषत हियें, किये दृग चन्द चकोर॥

पद (८५)

रथ पर राजनि मिथुन कुंवर की।
देखहु री देखहु अति अद्भुत, सोभा स्यांम गवर की॥
विस्वविमोहनि मोहनि मूरति, सूरति सब सुख सर की।
चैन दैन मन नैनन की मनु, रची सुविधि निज कर की॥
तैसोई रथ महा मनोहर, उपमा मनमथ घर की।
भयो अचल तें सचल आनि अब, जानि सुरुचि विवि वर की॥
चहुँ ओरनि झालरि की झूमनि, लूमनि मोतिन लर की।
जगमग करत साज सब सुन्दर, सोभा परदन पर की॥

इहिं विधि वनिठनि चले रंग रलि, लै संग अली परिकर की।
रूप-रसिक जन मन सुखदायक, विहरनि रस विसतर की ॥

पद (८६)

बैठे आज मनोहर रथ पर प्रान प्रिया सग रंग बढावैं।
करत जात मृदुवात परस्पर, सो सुख मुख सखि कहत न आवैं ॥
रीझत भीजत मौज मनोजनि चोजनि सनि सनि अति सचुपावैं।
रूप-रसिक जन सम्पति दम्पति, देखत हीं नहिं नैंन अघावैं ॥

वर्षाऋतु विहारोत्सव

राग मलार (८७)

अहो नैंक चलियें तो चलिये नातर भीजेंगें आयो मेह रीझेंगे
लहरिया में लहरि लीजेंगे। तव रूपर-सिक कहा कीजेंगे ॥

पद (८८)

अहो लाल भीजत हैं झीने अंग वर में करि लेहु कम्बर खोही।
बड़ी बड़ी बून्दनि बरषत है वन जतन करौ किन कोही ॥
कदम ओट तजि चलिये कुंज में जो मिलि चाहत मोही।
रूप-रसिक घन गरजत उनि उनि पुनि पुनि देत वटोही ॥

पद (८९)

बरत नेह मेह रति वन में, भीजति दम्पति देह।
आह वदत पिक मोर कहुँक हुँ कार रोष मुख ससक पपीहा लेह॥
उमगि २ अनुराग सघन वन, बुन्दन तोषत तेह।
रूप रसिक जनकी जीवनि यह, वरस्योई करउ अछेह ॥

पद (९०)

भीजि दोउ उरझि रहे अंग अंग।
सुरझि सकत न क्यों हूँ सखी री गौर स्याँम रँग रंग ॥

तन तन मन मन नैंन नैंन अरु वैंन वैंन ढँग ढंग ।
रूप रसिक सुख निरखत हरषत रहिये री सँग संग ॥

पद (९१)

सोभा देखि री यह आय ।
सुभग स्यांम सु अवनि ऊपर, गोर-घन रह्यो छाय ॥
महा मन की मोहिनी रस, जोहनी झरलाय ।
सरस सुरसा रेल पेली, उमग अपनें भाय ॥
हँसनि में दुति दशन दमकनि, दांमिनी दरसाय ।
रूप रसिकन तोष पोषत, वितन वन बरसाय ॥

पद (९२)

हमारे माई राधा माधव ध्येय ।
काहू बात की कमी न राखें, जो चाहैं सो देय ॥
रजधानी वृन्दावन जैसी, निगमागम की ज्ञेय ।
अनायासहीं रूप रसिक जन, पावत सब सुख सेय ॥

पद (९३)

सखी री स्यांमा स्यांम स्वरूप ।
देखत ही मिटि जाय दृगन तन, जनम जनम की धूप ॥
सदा सनातन इक रस जोरी, उपमा कौंन अनूप ।
रूपरसिक जन के सुखदायक, दोऊ भाँवते भूप ॥

पद (९४)

करौ किन कोटि यतन जो कोई ।
या जोरी के पटतर कौं कोउ, है न व हुवौ न होई ॥
एक रंग रस वयस प्रान मन, कहन मात्र तन दोई ।
जांनत हैं इनकी अति गति यह, रूप रसिक जन जोई ॥

पद (९५)

सदा रहौ बरसत रस कौ मेह ।
गौर स्यांम घन घुमड़ि घुमड़ि दोऊ, करि करि तन में तेह ॥
सरसित होय सकल बन सम्पति, नित बाढ़ै नव नेह ।
रूप-रसिक जन के मन कौ महा सब सुख साधन येह ॥

पद (९६)

घनन घनन घन गरजत घोर घोरि,
विद्युतनि डोरि तामें कुहुकनि मोर की ।
तैसीय पीपी कहनि पपीहनि की नीकी धुनि,
सुनि सुख सनी चहचनी चहु ओर की ॥
रचि विचि बँगला विराजे दोउ लाल गोरी,
अति ही रसाल जोरी युगल किशोर की ।
अद्भुत अनूप रूप रसिक निहारि नैंन ।
पावत हैं चैंन दैंन आनँद न थोर की ॥

पद (९७)

आज रस रेलनि केलि मची ।
उतैं मेह इत नेह नवल दोउ, ढोरति छोरि ढची ॥
अंग अंग सरस भये बरसन में, तऊ नहिं करत कची ।
रूप-रसिक उमँगेई दीसत, कोऊ असि खचनि खची ॥

पद (९८)

मदन मदमांते मोर नचैं ।
देखि देखि घन ओर मुदित मन, सुगति सुधंग सचैं ॥
अलग लाग कुल विद्या कोविद, कोउन काल बचैं ।
रहसि रंग अँग अंग भेद में, रूप रसिक रस रचैं ॥

पद (९९)

चलौ मिलि आज लखैं कौतुक री कुंज कुटी की ओर।
घुमँड़ि घटा छवि छटा डोरि में, बोलत मोरी मोर॥
कोमल कल कोकिला अलापत, सुनि पंछिन को सोर।
रूप रसिक यह अलभ लाभ सुख, पैहैं नांहिंन थोर॥

पद (१००)

थोरी थोरी बूंदन भीजत, वन में बतरस लागे लाल।
अम्बर अंग सुरंग सगवगे, रगवगे रंग रसाल॥
अंचर ओट करत सहचरि मिलि छकी निरखि छवि जाल।
रूप रसिक रस राचे दोऊ, देय रहे अँकमाल॥

पद (१०१)

आज अब देखौ री देखौ, या उन्युंनि की ऊँमि।
अति अभिरांम स्यांम घन ऊपर गौर घटा रहि घूंमि॥
मधुर मधुर गाजनि में राजनि, चपला परसि पुहूंमि।
देखत ही अनिमेप रहत दृग, रूप रसिक रस झूँमि॥

पद (१०२)

झनक नूपुर की सुनि श्रवनांनि।
अति रस मगन होत मन पिय को लेत भाग धनि मांनि॥
रोम रोम रति रंग रगमगत, लगत जबैं पग पांनि।
रूप रसिक कछु कहत न आवैं, या विरहनि की बानि॥

पद (१०३)

चलौ वलि कदम कुंज के ओट।
यह देखौ घन छाय रह्यौ बन, करि तन चहुँ दिशि कोट।
अब न संभरि हैं तब कहा करि हैं, परि हैं पानी पोट।
रूप रसिक हैजैहैं इहिं छिन, अंग अंग सगवग रोट॥

पद (१०४)

पीताम्बर लीजिये मोहि उढाय।
भीजत है मेरी सुरँग चुनरिया, काहे को करत कुढ़ाय॥
जौ लौं चलैं कदमतर तौ लौं, समुझहुँ सजन सुढाय।
रूप रसिक होय करत न कोऊ, इहिं विधि रंग रुढ़ाय॥

पद (१०५)

चुचावति चूंनरी रंग नीर।
देखन को अभिलाष दृगन कौं, तो नव तन कें तीर॥
क्यौंहीं क्यों वरिषा ऋतु आई, सरसाई सुख सीर।
ताहू में तुम रूप रसिक चलि, चहत बचाये चीर॥

राग लूहरि (१०६)

सखी लूहरि गांवें हे लाड़िली लाल की।
लखि नैंन सिरावें हे, छवि छवि-जाल की॥
सखी मुकुट विराजें हे चन्द्रिका सोहनी।
दुति अधिक सुसाजें हे मन की मोहनी॥
सखी तिलक सुहाये हे चिलकत भाल पैं।
कुण्डल छवि छाये हे श्रवन सुढाल पैं॥
सखी ललित सुलोचन हे सोच विमोचनें।
अति मन के रोचन हे समर सकोचनें॥
सखि भौंहें सोहें हे मनमथ धनुष कहा।
निरखत उर पोहें हे मनहर मंजु महा॥
सखि नासा मोती हे जगमग जोति जगें।
अति ओप उद्योती हे देखि दृग पलन लगें॥
सखी अधर अरुनई हे रही अनुराग सौं।
मधि दशन दमकई हे पगी पीक पाग सौं॥

सखी कहत ना आवै हे सोभा कपोलन की।
चित वित्त चुरावैं हे आभा अमोलन की॥
सखी अलकें झलकें हे सरस सनेह सनी।
उर ऊपर रलकें हे आय सुहाय अनी॥
सखी कंचुकी राजें हे कसोंभी बाल कें।
अति हीं छवि छाजें हे कंचुक लाल कें॥
सखी मोतिन माला हे उर स्थल रलकि रही।
....
मणि मंजुल जाला हे बाजू बंध बनें।
पहुँची सौ ढाला हे पहुँचनि सोजु ठनें॥
सखी कंकन सोहें हे जटित जराय के।
अति मन कों मोहें हे तन सुखदाय के॥
सखी सोहत लहँगा हे कटि तटि सों कस्यौ।
अति मोल सुमहंगा हे पटुका ललित लस्यौ॥
सखी रचित रतन की हे खचित छुद्रावली।
उदगार अतन की हे सु परम प्रभावली॥
सखी नूंपुर राजें हे रव रुन झुन करैं।
सुनि कल हंस लाजें हे निरखत नेंन ढरें॥
सखी चाल सुहाई हे गजगति गंजनी।
अति ही सुखदाई हे मन की रंजनी॥
सखी सोहत सुन्दर हे सुरंगी चीर धरें।
दोउ रसिक पुरन्दर हे भुज वर दीयें गरें॥
सखी मृदु मुख हाँसी हे हरनी हीय की।
सब सुख की रासी हे प्यारी पीय की॥

सखी भागन आई हे ऋतु वरषा भली।
जा माहिं पुराई हे सब मन की रली॥
सखी जुगल किसोरी हे जोरी अनूप की।
रति रस में बोरी हे रसिक सरूप की॥
सखी स्यांम गवर तन हे अवर न भूपरें।
वलि रूप रसिक जन हे या छवि ऊपरें॥

पद (१०७)

स्यांम घन आये री माई।
मेटत ताप वितन के तन की निर्तत केकि सुहाई॥
अँग अँग भूषन रुनु झुनुकत, मनों झिलि दादुर रट लाई।
मुसकत वदन दसन दुति दमकत, विदुति दमक दरसाई॥
गरजत प्रेम नेह झर बरसत, हिय सर भरत झिलाई।
अँकुरित मन लखि वचन पात धरि फूल सहन छवि छाई॥
सुफल परस्पर होत सखी री, वहु विधि नव निधि पाई।
रूप रसिक आनन्द भंडारें, उनति रही नहि काई॥

पद (१०८)

नैन्ही नैन्ही लागत बूंदें सुहाई।
सघन कुंज के आँगन ठाढ़े, वढ़े वितन अधिकाई॥
अम्बर अँगनि अंग लटांने, स्याँमा स्याँम सुखदाई।
रूप रसिक रति रस में भीने, निरखि हियो हुलसाई॥

पद (१०९)

स्यांम घन उमँगि उमँगि इत आवैं।
क्रीट मुकुट कुंडल पीतांवर, मनु दामिनि दरसावें॥

मोतिन माल लसत उर ऊपर मनु बग पंक्ति लखावैं।
मुरली गरज मनोहर धुनि सुनि, श्रवन मोर सचुपावैं॥
हम पर कृपा करी हरि माँनों, नीर नेह भर लांवैं।
रूप रसिक यह सोभा निरखत, तन मन नैंन सिरावैं॥

राग (११०)

नेंक बिलोकि री इक बार।
जो तू प्रीति करन की गाहक, मोहन है रिझवार॥
महा रूप की राशि नागरी, नागर नंद-कुमार।
हाव भाव लीला ललचौंही, लालन नवल विहार॥
मोहि भरोसो स्याँम सुंदर कौ, करि राख्यो निरधार।
नेंक एक पल जो अभिलाषैं, रूप रसिक बलिहार॥

पद (१११)

देखौ सखी सुंदरता के सागर।
स्यामाँ स्याँम सकल सुखदायक, दोऊ रूप उजागर॥
उपटत अंग अंग की सोभा, मांनहुँ उठत तरंग।
नैंन कमल भ्रू-लता पात जुग, रुचि कपोल श्रुति संग॥
नासा दीप विराजत मुकता, मनों यहैं कल हंस।
विद्रुम लता अधर दुति लाजत, मधुर वचन मधु अंश॥
कम्बु सुकंठ भुयंगम भुज तट, मीन सुपल्लव पांनि।
वह वंसी वह वीन बजावत, चपल चलनि अधिकांनि॥
नखमनि मनों खांनि तैं निकसे, राखे सुघर सुधारि।
श्रीवत्स भ्रमर कलस उर अंमृत वड़वा वितन विचारि॥
राजी रोम उदर लघु जलचर, कटि तटि नांभि गँभीर।
मनों रतन काढ़न को लुब्धिनु, रवनी भूमि चित धीर॥

जघन सुविपुल लसत मनु परवत उरू रंभ जुग-खंभ।
जंघ विटप पद पदम राग मनु नखमनि दुति गुन अंभ॥
स्यांम गौर वर वरन सुहावन सुधा क्षीर सर दोउ।
मिले मनों अनुराग हियें सजि सजन परस्पर सोउ॥
सहजहि चारि पदारथ पावत, यह छवि नैंन निहारि।
रूप-रसिक तिनकी कहा कहिये, ते राखत उर धारि॥

पद (११२)

स्यांम गुन स्यांमाजू बिसतारयो।
एकही छिन की लीला गावत, विधि संभू पचि हारयो॥
बांनी थकी गाय जस निर्मल, अवर कौन कवि गांवैं।
जो कछु कहैं सोई करि पांवन, कृष्ण रूप दरसांवैं॥
जो क्रीड़ा वृन्दावन कीनी, राधे सुन्दर स्याँम।
रूप-रसिक रसिकनि की जीवनि एक वस्तु द्वै नाम॥

पद (११३)

देखौ माई सुन्दरता की सीवां।
जमुना तीर कदम की छहियाँ, दै ठाढ़े भुज ग्रीवां॥
वह वंसी वह मधुर मधुर सुर, गावत राग उचारी।
वह मोहन सब व्रज को सजनी वह मोहनी महारी॥
दुरी कुंज दै ओट सखी री धन्य पहर पलधारी।
रूप-सिक वह स्याँम सुन्दर वह राधे रूप भरी॥

पद (११४)

आज मैं देखे रस मतवारे।
अरत परस्पर मातें गज लों टरनत नेकहुँ टारे॥

घूंघट अगड़ रुके नहिं सजनी रहे न न्यारे न्यारे ।
मिले लथो बथ कुसुम सेज पर चुवत सुमद आधारे ॥
लाज महावत निकट न आवत अंकुस लगत कहारे ।
रूप रसिक दोऊ प्रेम सुरस भरि भिरत न कोऊ हारे ॥

पद (११५)

आज छवि स्याँमा स्याँम निहारे ।
वरषत प्रेम लाय झर निसि दिन, गरजत नेह नियारे ॥
मुकता वग-पंकति दादुर धुनि नूपुर चलनि सुढ़ारे ।
केकी चित्र पपीहा कांची त्रिवली चहत सुनारे ॥
नाभि सरोवर भरत न उपटें, अंग पुलक तृन वारे ।
विकसत पद्म मंद मृदु मुसकनि, निरखहिं नैंन सुखारे ॥
रूप रसिक सब जीवनि जिय की जिनि यह रूप निहारे ॥

पद (११६)

घटा उनि बरसानें तें आई ।
गोरी स्यांम अवनि सरसन कों, नंदगांव दरसाई ॥
बीच एक संकेत सघन वन ओल्हर तापर छाई ।
स्यांमा स्यांम स्यांम स्यांमा घन रितु पावस रुचिपाई ॥
काँची धुनि चातक दादुर मनों नूपुर पिक चुपकाई ।
गरजि गरजि बरसत मुकतागन विथुरें बूंद सुहाई ॥
छूटी लट मनों भुयंग भवन तजि पवन लहत पुरवाई ।
जेंगन जोति जगमगे नगमनि पट लटकनि दुरि जाई ॥
बरषत प्रेम पुलक तृन अंकुर नेह बेलि सरसाई ।
रूप रसिक दंपति सुखरासी भरि हिय सर उपटाई ॥

पद (११७)

आज सखी मोहन रूप निहारयो।
जिहिं जिहिं ठौर लग्यो मन मेरो, सोई सोजु विचारयौ॥
पूरब भाग भलौ री सजनी, प्रथम नैंन दरसाई।
मिलि गिलि रह्यौ लोंन पांनी ज्यों सहजही तहाँ समाई॥
सब अँग सुभग स्यौंम सुन्दर के कहि धों कौन निहारें।
रूप-रसिक मन एक सु अटक्यौ अब कहि कौंन विचारें॥

पद (११८)

नैंना प्रकृनि गही यह न्यारी।
जाचत जे लै स्यौंम स्वरूपहिं, बन बन विकल महारी॥
अटकें नेंक रहें न सखी री सीख देय सब हारी।
रूप-रसिक दरसें मन मोहन तब ही होय सुखारी॥

पद (११९)

लोचन लालची महारी।
लोक लाज कुल कानि सबै तजि चितवत लाल बिहारी॥
तन बाजार हाट अंग अंगनि सौदा करत न हारी।
भरत अहो-निस हृदय भंडारनि देत न एक लगा री॥
नफा बहुत आवत है तो पै अधिक अधिक अधिकारी।
रूप रसिक रस लोभ लपेटे अड़े बड़े व्योपारी॥

अथ हिण्डोलोत्सव

राग मलार (१२०)

प्रिया जू झूलत फूल मई।
फूल हिंडोरें फूली फूली अनुकूली अधिकाई॥
प्रीतम प्रांन झुलावत प्रफुलित सोभा निरखि नई।
रूप रसिक रस लंपट दोऊ मनत नहीं तृपतई॥

पद (१२१)

प्रिया जू कों धीरें स्याम झुलावें ।
रसिक छबीली की छबि देखन कबहूँ अधिक चलावें ॥
तिरछी भौंह बंक गति नैंना सीबी करि सहरावें ।
त्यों त्यों प्यारो परम पदारथ मानों नौ निधि पावें ॥
धीरें बजत मृदंग आदि सब धीरें ही सुर गावें ।
रूप रसिक छबि निरखि जुगल की छिन-छिन हिय हुलसावें

पद (१२२)

आज सखी झूलत हिंडोरें देखे ।
कबहुँक प्यारी कबहुँक प्यारो दोऊ प्रीति बिसेखे ॥
कोमल कर को परस पाय कें मदन बान कर लीन्हें ।
धरें अंक पीवत मधुरामृत सहज सुरत सुख दीन्हें ॥
मंद मंद सौं चलत हिंडोरा प्रेम बिबस भये दोऊ ।
रूप रसिक लखि बिसर गये सब सुधि बुधि रही न कोऊ॥

पद (१२३)

झूलत स्यामा स्याँम हिंडोरें ।
कर गहि डांडी मुदित मचावत दै दै झौंन झकोरें ॥
राग मलार जमावति किंकनि घनन घनन घन घोरें ।
मृदु मुसिक्यांन दमक दांमनिसी चमकि जात चहुँ ओरें ॥
बरसत रस आनंद आह धुनि बोलत मोरी मोरें ।
रूप रसिक सच पावत अलि जन उर अनुराग न थोरें ॥

पद (१२४)

रंग हिंडोरना झूलत मिथुन किसोर ।
चित के चौरनां सोहें सांवरे गोर ॥

सोहैं सांवरे गोर, चित के चोर मिथुन किसोर।
झूलें रंग हिंडोर झुलवें श्री हितू थोरें थोर ॥१॥
कापैं जात कह्यौ आनंद लह्यौ महि महि डहडह्यौ।
तनवन फूलि रह्यौ तनवन जु महिमहि डहडह्यौ आनंद लह्यौ ॥
कापैं जात कह्यौ हैं सो सुख मन गह्यौ चाखि चहयौ ॥२॥
नूपुर बाजही कल हंस लाजही सब सुख साज ही पियरति राजहीं।
पिय रति राजहीं, सब सुख साजहीं हंस लाजही।
मधुर नूपुर बाजही अति बने छबि बाजहीं ॥३॥
हंसि लपटात गरें, देखत द्रिग ढरें, रूप रसिक रस ढरें।
मन को हरें रूप रसिक रस ढरें, देखत दृग ढरें।
करें कौतुक कौतुकी दोउ हँसि लपटात गरें ॥४॥

पद (१२५)

झूलत फूले नवल किसोर।
रंग भरे अँग अंग रंगीले रंग हिंडोरे रंग रँगीली।
नव निकुँज के द्वार कदमतर करि करि निपट निहोरें ॥
जैसोई रंग रँगीलो बन घन सननन सननन पवन झकोरें।
तैसोई रूप रसिक रस बरषत हरषत दें दै प्रान अकोरें ॥

पद (१२६)

आज या रमकनि की बलि जाँउ।
पिय कें संग सुरंग हिंडोरें निरखत द्रिगन अघाँउ ॥
उलटि रही वेनी उर ऊपर हार उलटि भुज मूल।
छबि पावत मानों सुर बरसत झर तमाल तें फूल ॥१॥
सिथिलित बसन अध खुले नैंनन मचकनि अधिक डरात।
मानों सुरत नवल बाला पिय नांहि करत अकुलात ॥२॥

ज्यों ज्यों पिय हिय गड़ी नवेली नैंन सैंन मचलात।
त्यों-त्यों रूप रसिक पिय के उर अति आनँद न समात ॥३॥

राग मारू (१२७)

नंद कौ नव रंगी लाल झूलत रंग हिंडोरें आज।
सांवरौ सुकुमार स्यामाँ लाड़िली तन गोरें॥
जर-कसी तन वागो सोहे सीस सुनहरी चीरा।
तुररा ढिंग रतन पेच किलंगी जटित हीरा ॥१॥
पांन भरे दसन दमकें चमकें नासा मोती।
रदन छदन अरुन बरन जगमगें जग जोती ॥२॥
मृदु मृदु मुसिक्यात जात भुजा अंस दीनें।
कोटि-कोटि रति मनोज होति जोति छीनें ॥३॥
सुर नर मुनि गन भये सुख अपार अपारें।
रूप-रसिक निरखि सोभा तन मन धन वारें ॥४॥

गद (१२८)

बनें री बनें ऐसौ झूलिबो तेरेंई पंहियाँ।
नवल निकुंज कदम की छहियाँ॥
रतन जटित डांडी कर गहियां अद्भुत बहियाँ।
मुदित मचावत मन महियां सचपावत संहियाँ ॥१॥
उरझि उरझि फिरि फिरि सुरझहियां सुरझि उरझहियाँ,
रूप-रसिक कछू परतन कहियाँ हिय वसि रहियाँ ॥२॥

अथ तीज

राग मलार (१२९)

सुहाई री आई अति भाई मन भांवन सांवन तीज।
झूलत रंग हिंडोरें दोऊ अंग रहसि रंग भीज॥

हरित भूमि पर घूँमि घटा रही चहूँ दिसि चमकत बीज।
रूप-रसिक तैसिय अलि झुलवत छवि रस छाक छकीज॥

पद (१३०)

अद्भुत एक हिंडोरो माई।
प्रेम डोरि पटुली पन सोभित झूलत दोऊ सुख पाई॥
मरुआ मूल सुरंग रस डांडी गुन गन लूब लगाई।
हृदय विकास प्रकास बीजुरी नवल नेह झरलाई॥१॥
गावत प्रांन रोम रग बीना अंग निर्तत सुखदाई।
रूप रसिक बलि बलि झूलनि पर लसौ हियें सुख आई॥

पद (१३१)

पिय हिय झूलति है निति प्यारी।
रूप रसाल विसाल नैंन गुन नेंक न होत सुन्यारी॥
डांडी भुज पटली हिय पंकज लूंब सुगुन गन भारी।
ओल्हरि स्यांम घटा घन बरसत प्रेम बूँद सुखकारी॥१॥
विद्युत सी दमकें उर अंतर दुरि दुरि दुरि दमकारी।
नेह डोरि ऐंचत हलवें कर सब अंग सखी सुवारी॥२॥
हौं बलि गई निरखि हिय सोभा श्री स्यांमा सुकुंवारी।
रूप रसिक दंपति हिति भरि भरि अद्भुत केलि निहारी॥३॥

राग (१३२)

दोउ जन झूलत प्रेम हिंडोरें।
स्यांमा स्यांम सहज सुख संपति हिय ही लेत हिलोरें॥
भृकुटी भौंह ललाट तिलक कच चलनि कटाच्छ झकोरें।
बानी सुखदानी मृदु मुसकनि ललकनि मलकनि धोरें॥१॥
जहां जहां चलि जात परसपर नेह डोरि कर बोरें।
तहां तहां चित फिरत संग ही मांनों लेत झुलोरें॥२॥

भीजे अंग स्वेदकन झलकन पुलक अंग तृन तोरैं।
रीझे अंग अंग सखियन के रूप-रसिक रस बोरैं ॥३॥

पद (१३३)

झूलत प्रेम पुलक तन आई।
परसत अंग निरखि तीछन टग रोंम रोंम सुखपाई।
गदगद बचन द्रिगन जल झलकत श्रमकन सलिल जनांई।
रीझि रही आली लखि छवि पर दै झूलत गर बांही ॥१॥
छिन-छिन बदन बिलोकत पिय कौं सलज बहुरि दुरि जाई।
रूप-रसिक पिय रसिक सिरोमनि रहे ललच ललचांई ॥२॥

पद (१३४)

परस्पर दांन करत दोउ झूलें।
तन मन प्रान समर्प्यौ मोहन प्यारो अरपि समूलें ॥
परसत स्वेद सलिल कुस रोंमहिं पुलकनि आनँद तूलें।
प्यारें दियौ सुहाग लाडिली सरबस दै मन फूलें ॥१॥
तीज परब सौंवन की उत्तम तिथि पाई अनुकूलें।
रूप-रसिक दोउ स्यांमा स्यांम ही लेत न बहुरि अडूलें ॥२॥

पद (१३५)

हिंडोरें झूलत दोउ सुखदाई।
कुंज महल एकान्त रहस्थल झोटा देत झुलाई ॥
ज्यौं ज्यौं लजित सकुचि तन राखति त्यों त्यों अति अधिकाई।
सीवी करि अकुलाति चकित चित जाति हियें लपटाई ॥१॥
गढ़ी सांवरे कें उर गोरी सोभा लगत सुहाई।
निरखि निरखि तृन तोरि डारि अलि रूप रसिक बलि जाई ॥

पद (१३६)

लाल हम नाहिंन चढ़त हिंडोरें।
उठि बैठौ बलि जाऊँ विहारनि बैठे स्याँम निहोरें॥
तुमहिं मचांनि अधिक मन भांवत जोवन मद के जोरें।
नांहीं तुम जो कहति जिंही विधि लै है धीर भुलोरें॥१॥
तबैं प्रिया प्रीतम उर लपटी घन दांमिनि छवि भोरें।
रूप-रसिक दंपति सुख संपति सदा बसो उर मोरें॥२॥

पद (१३७)

पिय कों झूलवन लागी प्यारी।
कोमल बांह चलाय सकति नहिं अति सुंदर सुकुंवारी॥
करि बहु जोर झुलोरा दीनों उर कटि लचकति न्यारी।
श्रमकन वदन रदन डसि अधरन लट छुटि देत छटारी॥१॥
रीझि पिया भरि अंक हिंडोरें लई चढाय जिय ज्यारी।
रूप-रसिक यह सोभा निरखत तन मन करि वलिहारी॥२॥

पद (१३८)

लाल उर झुलवत झूलत प्यारी।
जिंहीं जिंहीं चलि जात हिंडोरें तिंहिं तिंहीं लगि तारी॥
मचकनि कटि लचकनि द्रिग चितवनि झुझुक डरनि सितकारी।
बोलनि मधुर मधुर मृदु मुसकनि ललकि लटकि लपटारी॥१॥
मन महिं गडी कढति कहु कैसैं कोमल ललित लतारी।
रूप-रसिक हियें बसौ सदा यह सब गुन रूप उज्यारी॥२॥

पद (१३९)

हिय मनि पियहिं झुलावति प्यारी।
महा मदन मृदु मोहनि मूरति अंग अंग प्रति सारी॥

पीतांवर कंचन छवि पावत नग दमकें चंद्रिकारी ।
बनमाला गुन बौहौ रंग पोई लर उर माल निहारी ॥१॥
हाव भाव कर अंग चलत ज्यौं चलत पदिक छवि भारी ।
बसी सु रूप-रसिक मन में महा प्रमुदित परम प्रभारी ॥२॥

पद (१४०)

दोउ जन झूलत प्रेम हिंडोरें ।
जहां जहां चलि जात तहां ही मन संग लेत झुलोरें ॥
चपल नैंन चाहत अंग अंग छवि ऐंचि नेह कें डोरें ।
एकत ही मिलि रहे परस्पर स्यांम तिया तन गोरें ॥१॥
बिछुरत कहा बिछोरें सजनी चीर चोल रंग बोरें ।
रूप-रसिक हियें बसौ सदा दोउ स्यांमा स्यांम किसोरें ॥२॥

पद (१४१)

दोउ जन झूलत नैंन हिंडोरें ।
चलत कटाछि चपल चहुँ ओरनि मानहुँ लेत झुलोरें ॥
प्रति बिंबत मूरति दंपति की स्यांम बरन तन गोरें ।
अंजन रेख नील पट सोभित जरी लाल रंग डोरें ॥१॥
डांडी तिलक पटुलिया भृकुटी लर बेसरि झलझोरें ।
रूप-रसिक राधे मोहन छवि निरखत प्रांन अकोरें ॥२॥

पद (१४२)

आज हम देखी दिव्य पररी ।
चढी हिंडोरें झूलत मांनों व्योम विमान धरी ॥
अंग अंग भूषन रुन झुनकत कंचन नगनि जरी ।
किधौं सरव सोभा की सोभा अवनि आनि उतरी ॥१॥
मांगत वर सब मिली सहचरी पाई पुन्य घरी ।
रूप-रसिक अभिलास पुरायौ आंनंद बेलि फरी ॥२॥

अथ पवित्रा

राग मलार (१४३)

आज पवित्रा को दिन माई ।
सुकल पक्ष पावन सांवन की एकादसि तिथि आई ॥
करहु तयार तार कंचन रचि, विचि मनि विरचि सुहाई ।
पिय प्यारी उर लै पहिरावौ पावौ निधि मन भाई ॥१॥
विविध भाँति मेवा अरु मिश्री अति रोचक अधिकाई ।
भरि भरि थार चारु चौकी पर पधरावौ उमगाई ॥२॥
अरस परस आरोगत दोऊ तन मन मोद बढ़ाई ।
निरखि निरखि सोभा सुख संपति मांनौं भाग बड़ाई ॥२॥
बरसौं बरस प्रांन धन को हित करनों उचित सदाई ।
रूप-रसिक जन कें यह पन हैं औरन सौं न बसाई ॥४॥

पद (१४४)

देखि री देखि पवित्रा पहिरैं कैसी सोभा देत ।
अति अभिरांम स्यांम स्यांमा तन सबकौ मन हरि लेत ॥
उपमा कहन होत जिय उमहन जनुं सुंदरता सेत ।
रूप-रसिक जन निरखन कें हित रचि राखी झखि केत ॥

पद (१४५)

पवित्रा रचे हैं पाट पच रंग ।
अति सुंदर सोहें मन मोहें पिय प्यारी के अंग ॥
तैसिय बन माला बिलुलत उर मुक्तावलि कें संग ।
रूप-रसिक यह सोभा देखत बाढत अतिहि उमंग ॥

पद (१४६)

आज दिन परम पवित्र सुहायो ।
परम पवित्र मास सांवन यह पुन्य पवित्रहिं पायो ॥

परम पवित्र रचाय पवित्रा प्रीतम उर पहिरावौ।
नांनां भांति भोग सामग्री रचि रचि भोग लगावो ॥१॥
उमँगि अंग अनुराग बढावौ राग रंग रस भीजौ।
धूप दीप आरती सजौ सब रीति सु उत्सव कीजौ ॥२॥
नव किसोर छवि नैंन निहारौ वारौ तन मन सबरी।
परम पवित्र होय आपनपौ या अनुक्रम तैं सबरी ॥३॥
या दिन की महिमां अति अद्भुत गरग मुनी मुखगाई।
रूप-रसिक जन जांनति हैं कै जानति हैं जसु माई ॥४॥

रक्षा बन्धन

राग मलार (१४७)

करो मिलि रक्षा बन्धन री आज बड़ौ त्यौहार।
पिय प्यारी की कुसल मनावौ ज्यौं पावौ सुख सार ॥
सुभग रतन मुकतन विचि विरचौ सचौ सुदेस सुढ़ार।
जथा जोग्य सब सौंज साजि बर लै कर कंचन थार ॥१॥
चलौ अंग रस रंग बढ़ावत गावत मंगल चार।
रतन सिंघासन ऊपर दोऊ, बैठे सजि सिंगार ॥२॥
अरस परस अंक माल दियें हियें भरि उमंग अपार।
जाय करन जुग बांधौ रख्या धरि आगैं उपहार ॥३॥
यह सुख सांवन सुदि पून्यों मन भांवन परम उदार।
रूप-रसिक रसिकन कैं सर्वस जीवन प्रांन अधार ॥४॥

पद (१४८)

रख्या बांधत रंग रली।
जुगल किसोर सुकर कमल सौं अति अलबेलि अली ॥

सनमुख रुख लै निगमागम के उचरत मंत्र भली।
रूप रसिक यह सोभा निरखत छवि रस छाक छकी॥

पद (१४९)

परस्पर राखी बांधत दोऊ,।
स्यांमा स्यांम स्यांम स्यांमा कर कह्यौ न परै सुख सोऊ॥
मधुर मधुर मुख बैंन उचारत रहसि रंग रस भोऊ।
सुनि सुनि पुनि पुनि प्रमुदित तन मन रूप रसिक जन जोऊ॥

पद (१५०)

रख्या बांधति विधि सों बाल।
जुगल कुंवर मन हरन करन सों पगी प्रेम रस जाल॥
पढि पढि मंत्र सुनावति सहचरि उचरि सु वचन रसाल।
पुलकत जात गात दोऊ सुनि सुनि नवल लाड़िलीलाल॥१॥
बौहौ पकवान मिठाई मेवा भरयौ धरयौ लै थाल।
आरोगत पुनि देत सबनि कौं निजकर नैंन विसाल॥२॥
कहत न बनि आवै सुख मुख तें उपज्यौ जो इहिं काल।
रूप-रसिक जन जानत जोई जिनकें निति यह चाल॥३॥

अथ श्रीकृष्ण जन्मोत्सव

राग जैतसिरी (१५१)

मंगल साज समाज सबें सखी आज भलौ दिन आयौ री।
रांनी जसुमत धोटा जायौ सुंदर स्यांम सुहायौ री॥
आठैं अरु बुधवार रोहिनी अधरति थार बजायौ री।
सुनि हरषे करषे मन सबके आनंद उर न समायौ री॥१॥
नंद भवन में मिलि नर नारिनु कौलाहल जु मचायौ री।
कान परी सुनियें न कहूँ ब्रज कौतुक यों अरसायौ री॥२॥

बोलत हेरी फेरी दै दै गोरस अंबर छायौ री।
मनहुँ दुतिय भादौं मधि भादौं दधिकादौं झर लायौ री ॥३॥
भूरि भाग्य या बृज गोकुल कौ मोपै परत न गायौ री।
रूप-रसिक धनि ब्रजरांनी जिंहि परमेसुर सुत जायौ री ॥४॥

पद (१५२)

कोऊ आज महा मंगल कौ मंगल गोकुल पुर में आयौ री।
ब्रजरांनी की कूंखि सिरांनी सुखदांनी सुत जायौ री ॥
घर-घर बगर-बगर में सजनी समगर साज सुहायौ री।
एक एक तें अगर-बगर सब नगर महा छबि छायौ री ॥१॥
धुजा पताका बन्दन माला कलस स्थंभ रुपायौ री।
तोरन बिसद बितांन साथिया मोतिन चौक पुरायौ री ॥२॥
कोरनि कोरनि केरि कलपतरु हेरि हियौ हरसायौ री।
कहत न बनत बदन तें बांनी इहि छिन यों दरसायौ री ॥३॥
अमर समर से डोलत बर नर नारि निकर सरसायौ री।
मात न गात उमंग रंग ररे रस बारिद बरसायौ री ॥४॥
कही हुती आगैं रिषि नारद सुनत गोप समुदायौ री।
सोई अब-प्रगट निहारी नैंननि बैंननि जात न गायौ री ॥५॥
गयो अमंगल छिप्र छार जल भयौ सकल मन भायौ री।
पयौ सुफल मन वंछित श्रीब्रजराज आज अधिकायो री ॥६॥
जित तित दिखियत हैं सब कोदहि मोदहिं मोद बढायौ री।
कहुँ जै जै कहुँ दै दै लै लै, कोलाहल कल लायो री ॥७॥
परम सुकृत को पुंज उदय भयो, तन मन तिमिर नसायो री।
रूप-रसिक प्रभु के जनमत हीं सब जन सब कछु पायो री ॥८॥

पद (१५४)

हौं बलि बलि जाँऊ रूप रसाल। जै जै श्रीनित्य विहारी लाल॥
श्रीजसुमति जाये हैं पूत। को समुझै सखी इनके सूत॥
दास अनन्य भजन रस हेत। इच्छा विग्रह धरि धरि लेत॥
फूले नंद आनंद अपार। तन मन कछू रही न सँभार॥
प्रगटे बृज मधि पूरन चन्द। भये सबनि उर तिमिर निकन्द॥
सजि सजि सुन्दरि सुभग सिंगार। लै लै सुकुर सुरन के थार॥
भई वर भीर अजिर में आंनि। श्रीरोहिनि लीनी सनमांनि॥
आनि जुरे ग्वारनि के ठाट। सिर पर धरें दूध दधि मांट॥
नाचत गावत करत सुकेलि। अरस परस रस रंगहि रेलि॥
सिमिटी सकल सवासनि टोल। भरि भरि उरन उमंग अतोल॥
गावत सरस बँधाये वेस। सुनि श्रवननि सुख लगत असेष॥
जथा जोग्य जसुमति बृजराज। पुरये सब मन वांछित काज॥
जनमत ही जग मंगल मूल। सब बृज फूल्यौ सो वन फूल॥
धनि धनि नंद जसोमति माय। धनि धनि दिन अधरेंन सुहाय॥
धनि-धनि रूप-रसिक जन जोय। जिनकें हित नित यह सुख होय॥

राग काफी (१५५)

बजत बधाई आज गोकुल राय कें।
आनँद सकल समाज रह्यो सुख छाय कें॥
बनि-बनि ठनि २ गोप सखागन, अगनित गनेंहिं न जाँई।
कोउ कुवेर कोउ इन्द्र रुद्र विधि, हूं ते अधिक निकाई॥
मंगल कलस सजैं बृज सुन्दरि, जूथ जूथ जुरि आई।
नांचत गावत करत कुतूहल, फूली अंगन मांई॥

मांनों सुरगन की पटरानी, तजि निज भवन सिधाई ।
भूषन वसन रूप छवि देखत, मुनि मन रहे लुभाई ॥
अति आनंद भयो तिहुँ पुर में, वरनत भाग वडाई ।
रूप-रसिक प्रभु कें जनमत हीं, घर घर नौ निधि पाई॥

पद (१५६)

आज सखी आनंद कौ फल पायौ ।
नंद महर घर वजत वधाई, जसुमत धोटा जायौ ॥
गरग कहें यह तृभुवन नायक, सो वेदन में गायौ ।
यह भूभार उतारन कारन, सव सुख वृज में आयौ ॥
गांवहिंगे हरिजन वहु कीरति, करि हैं सव मन भायौ ।
रूप-रसिक कौ सरवस सजनी, कांन्हर नाम कहायौ ॥

पद (१५७)

आज वृज औरहि ओभा देत ।
जित देखौं तित औरहिं औरें, नौ निधि भरे निकेत ॥
सवोंपरि सुरपुर सुनियत हैं, लव उपमां कौं लेत ।
कियौ किधों कमला निज आलय, अपनी समृधि समेत॥
धनि धनि नंद जसोमति मैया, पुन्य पुंज कौ खेत ।
प्रगटे आनि अवनि पर दोऊ, रूप-रसिक जन हेत ॥

पद (१५८)

री जसोदे और नहीं कछु जांचों ।
दरसन देखि तिहारे सुत कौ, मगन होय मैं नाचों ॥
जो तुम देहु विभो तृभुवन कौ, तौ किहिं काज हमारें ।
लैहौं आज वधाई ऐसी, उमँगों अंग अपारें ॥
ढाढी ह्वै कें यही कांमनां, में मिलि मतौ कियौ ।
रूप रसिक होइ आज रिझांऊँ तौ मो सफल जियौ ॥

राग काफी (१५६)

धन्य धन्य गोकुल के धनी।
तेरी बनत आज या बृज में, हम सबहिन की बनी॥
धनि-धनि महारांनी श्रीजसुमत, धनि धनि अध रजनी।
धनि-धनि भादों मास असित पच्छ बुध आठैं रोहिनी॥
धनि-धनि सुभ संजोग सकल जामें जन में जग जीवनी।
धनि धनि रूप-रसिक जिनकें हित, अद्भुत लीला ठनी॥

राग कांनरो (१६०)

हूँ अब आई लेंन बधाई, नंद जू तेरे द्वार।
तोसौ आज कौन तृभुवन में, दातारन सिरदार॥
तुव प्रताप परिपूरन मेरे, हैंगे भवन भंडार।
देहु कछू ऐसो मन मांन्यों, ब्रजपति परम उदार॥
मैं मन वच निहचै व्रत लीनों, श्रवन सुनत भरतार।
सो नहिं किये अन्यथा ह्वै हैं, जब लगि जीव करार॥
देखत रहौं स्यांम सुंदर मुख लिये निकट परिवार।
रूप-रसिक रसिकाई ह्वै हैं, तुमही तें प्रतिपाल॥

राग बिहागरो (१६१)

महर कें बाजत आज बधाई।
रांनी जसुमति कूखि कल्पतरु, प्रगटे कुंवर कन्हाई॥
श्रवन सुनत सब चले नगर नर नारि हियें हुलसाई।
आनँद सिंधु मगन मन मंगल, भीर भवन अधिकाई॥
बंदीजन बिरदावत गावत, पावत निधि मन भाई।
नाना बसन रतन मुकता मनि, सिमिटे कौन पें जाई॥
दिसा प्रसन्न भई सबही सब दिखियत सोभा लगत सुहाई।
ब्रजपुर की संपति सुरपुर ह्वै, गोपुर लों दरसाई॥

घर-घर तोरन धुजा पताका, वंदन माल बनाई।
कदली कलस लसत कोरनि प्रति, रचनां रुचिर रचाई॥
फूली फूली फिरत सवासनि, उमँगन अंग समाई।
बोलत सरस बधाये मिलि मिलि मन अभिलाष पुराई॥
अद्भुत सुख बाढयो या बृज में को कहि सकें बड़ाई।
दांन मांन सनमांन सबनि कौं, दयौ जथा रुचि राई॥
अति उदार बृजराज मुदित मन, दिये भंडार मुकलाई।
जो भांवें सो लै लै जावहु, सबसों कही सुनाई॥
कोउ ऊनौं न रह्यो इंहिं औसर, बर बरिषा बरसाई।
रूप-रसिक कों दई कृपा करि सदा रूप रसिकाई॥

राग सोरठ (१६२)

बधाई नंद कै बाजैं।
बाजैं बाजैं घन ज्यों गाजैं, एक संच साजैं॥
सकल मनोरथ भये सबनि के, उनति रही नहिं आजैं।
प्रगट्यो लाल मनोहर मूरति, रूप रसिक काजैं॥

राग मारू (१६३)

भयो आज चीत्यौ मेरे मन कौ।
कुंवर बधाई सुनि हूँ आयौ, प्रतिपारौ या पन कौ॥
महाराज बृजराज जू कें आगें कौ सुर राज।
जिहिं ग्रह प्रगट्यो आय कें अहो तृभुवन कौ सिरताज॥
महा पद्मादिक निद्धि नवों अरु अणिमादिक अठ सिद्धि।
रमा सहित घर घर जु बसी अब तुव सुत जन्म प्रसिद्धि॥
वेद भेद पावत नहिं जाकौ, नेति-नेति कहि देत।
सो लाला जसुमति जायो यह, भक्त जनन के हेत॥

सनकसनंदन जपत जाहि निति, सिव से सजत समाधि।
भूरि भाग तोसे जु विनां जिहिं, सकें न कोऊ लाधि॥
अनंत कोटि ब्रहमंडन को वर, कहियत जो करतार।
बालक होय अहो यह आयो, बृज में करन विहार॥
कर ऊँचो करके जु कहत हौं, सुनो सकल सिरदार।
यह पांऊं जाऊं न कहूँ अब तजि तेरौं दरवार॥
तुव प्रताप श्रीनंदराजजू, नांहिन टोटौ धन कौ।
रूप-रसिक मन यही कामना, अभिलाषी दरसन कौ॥

राग मलार (१६४)

सुंदर सोहनी मन की मोहनी,
सुख संदोहनी, आठें रोहनी॥
रोहनि आठें अर्द्ध निसि वदि, बुद्ध विरियां वेसि।
मास भादों सकल सुभ, संयोग सुघरि सुदेसि॥
धनि ब्रजराज जू, पुरवन काज जू।
जिह ग्रह आज जू, मंगल साज जू॥
साज जू मंगल मिलि परस्पर, करत कौतुक केलि।
कहन उपमां कवनि कवि छवि, बढी अति अलबेलि॥
बलि जसु माय की, आनँद दाय की।
सुख उपजाय की कूखि सुहाय की॥
सुहाय की कूखि, आय तृभुवन राय मूरति बसी।
अवनि में रवनी न कोऊ ऐसी कवनि जसुमति जसी॥
आवौ अली अली, गावौ रली रली।
बाधा टली टली, साधा फली फली॥

फली फली साध सबनि कें जिय हुती जो जोई।
रूप-रसिकन कारनें हरि करत कृति सो सोई॥

राग बृहरि (१६५)

आज नंद दरवार बजत मंदिलरा माई।
सकल लोक प्रति पालक बालक प्रगट्यो आई॥
घर-घर मंगल भयो अमंगल गयौ विलाई।
कह्यौ कुलाहल छाय कह्यौ कछु कहत न जाई॥
अतिई ओपे ओप गोप गोपी समुदाई।
सिमिटि सु आये भीर भवन में भई अधिकाई॥
नांचत गावत करत कुतूहल लोग लुगाई।
छिरकत हरदी दूध दही की कीच मचाई॥
मागध बंदी सूत भाट द्वारें विरदाई।
द्विज वर वेद उचार करत मन हरत महाई॥
फूलि फूलि वृजराज देत शिशु काज बधाई।
मणि गण मुक्ता हीर सबनि की आस पुराई॥
वरनत वृजपति अरु जसुमति की भाग बड़ाई।
वारत तन मन प्रांन मुदित मन में न समाई॥
धनि धनि भादों मास पहर पल धन्य सुहाई।
धनि धनि रोहनि अर्द्ध निसा आठें सुखदाई॥
धनि बुध वासर सुघरी, धन्य पक्षि असित सदाई।
जामधि यह आनंद उदित वृजचंद कन्हाई॥
धन्य धन्य वृज देस धन्य गोकुल कुलराई।
धन्य धन्य यह ठौर धन्य ठाकुर ठकुराई॥

आज भये हम धन्य सकल सिधि की निधि पाई।
सब पंचन में रूप-रसिक जन छाप कहाई॥

पद (१६६)

ए वौ श्रीबृजराज कें आज बाजत बाजनें।
अब भयो मन बांछित काज बाजत बाजनें॥
कृष्णपक्षि बुध अष्टमी तिथि मधि निसि भादों मास।
सब संजोग सुभ रोहनी ऋषि पुजई मन की आस॥
निगम नेति जस गावहीं, शिव सेस न पांवहिं पार।
सो जसुमति की कुक्षि में, लियौ कृष्ण कुँवर अवतार॥
घर घर ब्रजपुर घोष में भयौ अतिसय जै जैकार।
जित तित वीथिनि देखिये, महा माच्यौ मंगलचार॥
द्वारन द्वारन सोहहीं धीर धुज पताक तरु केरि।
अनगन साज सुराजहीं, बहु बाजहिं दुंदुभी भेरि॥
सोभा बृजपति भौंन की सम होंन आज नहिं कोय।
अष्ट सिद्धि नौ निधि की कहा, जहां जनमे जगपति जोय॥
जाचक जन आये जिते, तिते होय गये दातार।
लेउ लेउ सब कहैं कोउ मिलै न लेउनहार॥
द्विज-वर वेद उचारहीं, विरदावत मागध सूत।
भाग वड़ाई कौ कहैं, जाकै आयौ ऐसौ पूत॥
अति ही ओपे ओप सों, सब गोपी गोप गन ग्वाल।
अंग उमंग न मांवहीं, उपजावहिं रंग रसाल॥
गावति गीति सुढाल सों, मिलि सकल सुवासनि टोल।
सुनत श्रवन रस राग के, अति लागत मीठे बोल॥

कोउ तिय अतिई उतावली, दृग देखन हित अकुलाय।
प्रमुदित पुहुँची जाय कें जहाँ पौढी जसुमति माय॥
निरखि लाल मुख चंद कों उर बाढयौ अति आनंद।
वचन कहति भई भेद सों, भलें आयें जू नँद नंद॥
पुनि पाय लागी मायकें, अनुरागी बाल अनूप।
काहू विधि काची नहीं, यह साची रसिक स्वरूप॥
ऐसौ उत्सव आज कौ, जैसो होनहार एक और।
कोउ दिनां में होयगो, कोउ जांनें कैसी ठौर॥
गरग परासर गोतमी, अरु दुरवा ऋषिराय।
वे सब ही कहि देंहिगे, किन पूछौ उनि सों जाय॥
जानत हैं भली भाँति, सों वे निगमागम कौ अर्थ।
उनसों नांहि कछू दुरी, वे सबही समझि समर्थ॥
धनि महारांनी रायजू, धनि धन्य सकल वृज आज।
रूप-रसिक जन धन्य हैं जिनिकें हित यह सुख साज॥

पद (१६७)

एरी आज की एरी आज की भई रंग रंगी अध राजनियां।
जसुमति सी कोउ बडभागिनि हो, जिहिं जायो कुंवर सिरताजनियां॥
आंनंद भयो दुख दूरि गयो, वदयौ सबको सुख साजनियां।
मन साधा सरी सब बाधा टरी विधि ऐसी करी पुर काजनियां॥
वलि रूप-रसिक जन कों जग में जु बडी सुगरी वन वाजनियां॥

राग विहागरो (१६८)

महर कें मंदिर वाजहीं मंदिलरा रंग सों आज।
रांनी जसुमति जायो है पूत पुरांवनों काज॥
चलहु विलंब न कीजिये लीजिये री लखि नैंन।
लाल सलोंनों सोहनों सबहीं कों सुख दैंन॥

मंगल साज समाज सौं गावत मंगल गीत।
कल कंठनि सौं मिलि रवनी गवनी परम पुनीत॥
पहुँची जाय अजिर में आनँद उर न समाय।
श्रीरोहिनी सौं भेटि कें परी महरि जू के पाँय॥
निरखि लाल मुख चंद्रमा, फूली कुमुदनि बाल।
अंग उमंग न मांवहीं, निरखत नैंन बिसाल॥
नाचत गावत गोपिका, बाहरि गोपति गोप।
ग्वाल बाल सब संग लियैं, पावत अति ही ओप॥
दधि घृत हरदी दूध सौं, बरसत बर भर झूमि।
मनहुँ भूमि पर आय कैं, घुमड़े हैं घन घूमि॥
फेरी दै दै गांवहीं, हेरी दै गरबांहि।
तन मन मगन भये सबै, सुधि बुधि सब बिसरांहि॥
रस रंग रेलनि केलि कौ, कौतुक बरन्यो न जाय।
श्री बृजपति जसुमाय कौ, भाग उदै भयो आय॥
भाट ठाट बिरदांवही, मागध बंदि सुहाइ।
श्रवन परी सुनियैं नहीं, रह्यो कुलाहल छाइ॥
धनि धनि ब्रज मंडल महा धनि धनि गोकुल गांव।
देख्यो सुन्यो नहीं कहूँ जो सुख अब इहिं ठांव॥
कुसुमावलि बरषांवही, चढि सुर विमल विमान।
जै जै सब्द उचारहीं, करि हरि मंगल गांन॥
जग जीवन जनमत अबैं, भई सबनि मन फूल।
रूप-रसिक जन सुख लह्यो, बिमुखन के उर सूल॥

राग सोरठ (१६६)

हेलारे आज बधायो व्रजराज कैं जसुमति जायौ है पूत।
हेलारे कह्यो न परत मुख तैं कछू, भयो आनंद अभूत॥
हेलारे मिलि मिलि सकल सवासिनी, आई गावत गीति।
हेलारे नाचत गावत गुन भरी, ररी विविधि रस रीति॥
हेलारे नन्दालय निरखत भई, प्रमुदित परम उदार।
हेलारे मनिमय भूषन अंग के, लागी देन उतार॥
हेलारे लेत लेत मंगन थके, देत न थाके गोप।
हेलारे जै बोलत बृजराज की, बाढे अति ही ओप॥
हेलारे दधि घृत हलदी दूध सों ओपत अंग अनूप।
हेलारे मनमथ रहत लजाय कैं, देखत जिनको रूप॥
हेलारे ठौर ठौर पै देखिये धुज पताक फहरात।
हेलारे डगर डगर सब नगर की, सोभा कहिय न जात॥
हेलारे हमहुँ नचैं सब संग में, निकट नन्दजू के जाय।
हेलारे यह सुख लेहु उमंग सों, रूप-रसिक कहाय॥

पद (१७०)

सुनियो रे बाजत आज गह गहे महरांनैं की ओर।
सुनियो रे जनियतु हैं जसुदा जन्यो, सुखदा रसिक चकोर॥
सुनियोरे वे देखौ दीखत भले, तूंग धुजा फहराय।
सुनियोरे चाहत हे सोई लही चलौ वेगही धाय॥
सुनियोरे घर घर की बनतांनि सों, ऊँचे चढि कहि देहु।
सुनियोरे सौंज बधाये की सकल, साजि-साजि सब लेहु॥
सुनियोरे दूध दही के माट भरि, करि हरदी को भेल।
सुनियोरे लै पहुँचौ तुम जाय कै, करहु रंग की रेल॥

सुनियो रे कहियौ श्रीवृजराज सों, आवत रावर राज।
सुनियो रे आज नचावैं नंद कौं, हिलि मिलि सकल समाज॥
सुनियो रे वै आवत द्वै दौरते, गोकुल के से गोप।
सुनियो रे चलत भये वृषभान जू, बाढे चौगुनी ओप॥
सुनियो रे सोभा या छिन की कछु, कहि नहिं आवत वैन।
सुनियो रे मनहुँ अमितवपु धारि कैं, नंद सदन गये मैंन॥
सुनियो रे मिलत भये दोउ दौरि कैं रावर गोकुल राज।
सुनियो रे सुमन सुरंगित सोंहने वरषत सकल समाज॥
सुनियो रे दधि लपटावत नंद कैं ललित कपोलन भांन।
सुनियो रे माँट दुरायो सीस तैं रावरपति सुखदांन॥
सुनियो रे तवहीं ग्वालनी महल तें निकसि गहे वृषभाँन।
सुनियो रे गोप एक कीरति करी तहाँ गठ जोरी आन॥
सुनियो रे तिनहिं नचावत लै गयी श्रीजसुमति कैं पास।
सुनियो रे कहत भई जसु नेग दै, ये आये करि आस॥
सुनियो रे श्रीजसुमति ऐसैं कही, लाल तिहारी गोद।
सुनियो रे छदम उघारि हँसी सवै, वाढयौ अति मन मोद॥
सुनियो रे अंग उमंगन मांवहीं नाचत दै करतार।
सुनियो रे कीरति भांन मिलाइ कैं गांवन लागी गारि॥
सुनियो रे तवहीं भाँन हँसि भवन तें, निकट नंद के जाय।
सुनियो रे मंगन सकल चुकावहीं रोम रोम उमगाय॥
सुनियो रे रूप-रसिक चित चांहती निसां करी कहि पांनि।
सुनियौ रे परिकर जुत मो सदन में सदा रहौ सुखदांनि॥

राग काफी (१७१)

बोलें सब हे हे हेरी ग्वाल ।
रानी जसोमति जायो हैं सुत सुंदर नैंन विसाल ॥
अर्द्धनिसा ब्रजराज कें मंदिर बाजो मनोहर थाल ।
सकल अमंगल भाजि गये सुनि, श्रौनन सब्द रसाल ॥
आवौ री आवौ गावौ मंगल मोद बढावौ बाल ।
निज निज नैंनन को फल पावो, निरखत स्यांम तमाल ॥
आंनन सोहत हैं अरविंद सो चंद सौ सोहत भाल ।
मंदहि मंद हँसें मन मोहत, माधुरी मूरति लाल ॥
अंगन अंग सुहांवनौ लागत रंग भरयो छवि जाल ।
पोषन रूप रसिकन कौ कुल गोकुल को प्रतिपाल ॥

राग काफी (१७२)

बधाई दीजिये भयो नंद महा आनंद ।
पूरब पुन्यन कौ फल, पायौ आयो तिमिर निकंद ॥
जीवन प्रांन सकल मन भायौ, जायौ जसु ब्रजचंद ।
सब ब्रज जन उमह्यौ सागर ज्यौं, परसि प्रकास अमंद ॥
नैंन चकोर किये हिये सीतल, चाखि सुधा सुख कंद ।
भू वनलता अन्न उपध्यादिक, पोषे वृंदन वृंद ॥
महिमां भाग तिहारे की ऐसी, बरनें कौंन कविंद ।
रोज सरोज अरिन अनुकूलकूँ, मोद प्रमोद सुछंद ॥
रूप-रसिक जन कौ मन रंज, विदारन दारन द्वंद ॥

राग कनड़ी (१७३)

आजि अनंद भयो अति नंद जू जसुमति जायौ लाल गुपाल ।
सुंदर स्यांम सलोंनी मूरति निरखत नैंना होत निहाल ॥

कोटिक कांम सुधांम कलित अति, कृष्ण कमल दल कोमल अंग।
देखत रूप अनूप होत दृग चक-चौंधी चित की गति पंग॥
सीस सुकेस सुहात सलोंनें, भाल विसाल सु नैंन सुढार।
उन्नत नासा अधर सुरंगी, चिबुक चारु सब सुख को सार॥
कोटिक रवि मुख छवि पर वारूँ, नैंननि पर खंजन बलिहार।
कोटिक कीर कंदूरी लज्जित, होत सुनासा अधर निहारि॥
श्रवन सुहांवन कलित कपोलनि, गोलनि बोलनि सुखद सुहात।
कंबु कंठ उर उदर उदित अति, नाभि गँभीर सु कटि ललकात॥
बाहु विसाल करनि अँगुरी नख, नगन झलक जगमगत अपार।
जंघ नितंबनि पिंडुरी सोहें, चरन कमल कोमल मन हार॥
अँगुरिनि नखद्युति रंग सुरंगनि, निरखत नैंना रहत जु ठौंर।
पद तर लाली रंग रसाली, होत निहाली मति गति बौर॥
संख चक्र जव पदम ध्वजादिक, पदतर सोहत सरस सलोंन।
ऐसो रूप सुन्यो नहिं देख्यौ, सो लेख्यौ, लोचननि सुठौंर॥
महा परम सुख आनँद बाढयौ, देहु बधाई महर महीप।
रूप-रसिक कों पद परसावौ, कुंवर मनोहर भांन उदीप॥

ब्रह्मा जू को आगमन

पद (१७४)

ब्रह्मलोक श्रीब्रह्मा नारद, शिव सनकादिक राजें जू।
सुनत बधाई नन्द महर घर, प्रगटे कुंवर सु आजै जू॥
नित्य किसोर कुँवर वर नागर, स्वामी अपनें आये जू।
अगम अगोचर ध्यान न आवैं, सो प्रगटे सुखदाये जू॥
दरसन हित अति आनँद बाढयो, उमगन अंग समाये जू।
पहलें श्रीब्रह्मा जू धाये, बेगहीं हंस चलाये जू॥

गोप सभा गोकुलपति राजैं, औचक ही तहाँ आये जू।
देखत ही दृग सनमुख ह्वै कैं, आरति कर पधराये जू॥
अरघ पाद्य पद वंदन करिकैं, धनि धनि भाग मनाये जू
विनती करत अहो करुनामय, किये सनाथ सुहाये जू॥
धनि बृज भूप महा वडभागी, तो सम और न जग में जू।
जाकौ ध्यांन धरत हम सबही, ताहू तैं अति अगमें जू॥
सो हम स्वांमी अन्तरजामी, प्रगट भये तो घर में जू।
दरसन कें हित आये हैं हम, पद परसावौ परमें जू॥
अहो तात यह बात कहा है, जो है सो सब तुमतें जू।
तुमरे चरन प्रताप लहत हैं, जो वड़ बस्तु सबन में जू॥
जात करम अरु नाम धरन विधि कीजे स्वस्ति सुवंचन जू।
करौ कृपा करि या बालक कौ निरभें निरमल कंचन जू॥
सुनि कैं महा मगन धुनि कीनी, सांमवेद सुख करता जू।
सोधि महूरत नाम धरयौ श्रीकृष्ण कुंवर जग भरता जू॥
औरहु नाम अनंत अपारा वेद पुरानन गायो जू।
या सम तीन लोक में ये ही, औरन कहीं बताये जू॥
दया दृष्टि बालक पर देखो, अभय हस्त सिर धरिये जू।
भीतर भवन पधारि कृपा निधि, परम कृपा अब करिये जू॥
निज मंदिर अंदर पद धारे, कुँवर दरस तहाँ कीनों जू।
अद्भुत रूप अनूप अलौकिक नंननि भरि भरि लीनों जू॥
कोटिक रवि दुति तन की सोभा, मृदु मुसकनि मन भाई जू।
भाल विसाल रसाल नासिका, नैंन अधर छवि छाई जू॥
चिबुक चारु अरु कंठ कपोलनि करन फूल से सोहें जू।
कर पद हृदय कमल कल राजत, पीत बसन मन मोहैं जू॥

सोभा सरस निरखि परमेष्टी, परम इष्ट जिय जान्यौं जू।
प्रेम मगन आनंद भरे उर, धन्य अपनपौ मान्यौं जू॥
अवलोकत छवि चरन कंवल वर, निज मन माहिं बसाये जू।
रूप-रसिक यह रूप नैंन भरि, तन मन नैंन सिराये जू॥

श्रीसनकादिकन को आगमन

पद (१७५)

सनक सनन्दन सनत कुमार सनातन ऋषिवर परम सुजान।
आदि अनादि सदा सुखदाई, विष्णु भक्ति करि विष्णु समान॥
कुंवर चरन दरसन कैं काजैं आये बृजपति भवन प्रवीन।
गोप-सभा गोकुलपति राजें, दरस दियो तहाँ हरिपद लीन॥
करि नीराजन माँनि भाग्य बड़, पधराये आसन सुखदाय।
चरन वंदि सुख कंद रिषिन के, करत वीनती अति हुलसाय॥
अहु कृपाल करुनानिधि मुनिवर, आज भयौं हूं परम सनाथ।
यह दरसन देवन कौ दुर्ल्लभ, सो पायो मैं मिलि सब साथ॥
अहो महर बडभाग तुम्हारौ, तो समान भू पर नहिं कोई।
तीन लोक के स्वामी जो ये, तेरें उर प्रगटे अब सोई॥
जाकौ ध्यान धरत निति ब्रह्मा, शिव नारद हम सब हरिदास।
भक्तन हेत प्रगट भये जग में, संतन की पुरवन मन आस॥
दरस करावौ सब सुख पावौ, दरसावौ फल परम उदार।
भीतर पदधारौ बलिहारी, करौ सनाथ सकल परिवार॥
सुनत वचन श्री सनक आदि मुनि करि प्रवेस दरसे सुकुँवार।
निरखि २ छवि कोटिक रवि ससि, वारि वारि लीनी बलिवार॥
महा मुदित भये रूप निरखि मुनि नित्य करत उर अति उमगाय।
तांन मांन गति गांनहिं भूले, फूले नैंन माधुरी पाय॥

रूप रसिक रसिकन की जीवनि, कृष्ण कुँवर छवि हिये बसाय ।
छिन २ लाड़ लड़ावत भावत, देखत देखत हू न अघाय ॥

श्री नारद जू को आगमन

पद (१७६)

बृजपति पुर ऋषिराज पधारे ।
जनम सुनत श्रीकृष्ण कुंवर वर, दर्शन हित उमगे अति भारे ॥
अरघ पाद्य आरति बृजपति करि, करि मंगल मंदिर पधराये ।
भये सनाथ कहत कर जोरैं, महा परम पद दरसन पाये ॥
धन्य धन्य बृजराज आज तुम, कृष्ण कुँवर जग मंडन जाये ।
नित्य किसोर नित्य सुख दायक, नित्य धाम तें भू प्रगटाये ॥
मेरे सरबस सबके स्वांमी, भक्तन हित अद्भुत बपु धारयो ।
धन्य धरा धनि जीव जक्त के, जिनि यह रूप अनूप निहारयौ ॥
दरसन पद परसन कैं काजैं, ब्रह्म धाम तें हम चलि आये ।
दरस करावौ नवल लाल कौ, करहु मनोरथ मन के भाये ॥
कह बृजपति रिषिराज सिरोमनि निज प्रताप पद यह फल पायो ।
देखौ कुँवर कृपा करि हेरौ, निरभै करि कीजै मन भायौ ॥
भीतर भवन पांव अब धरिये, अभै हस्त बालक पर धारौ ।
करहु अनुग्रह जांनि आपनौं, करुना-सिंधु कृपाल उदारौ ॥
महामगन मन श्रीनारद मुनि, निज मंदिर अंदर जु पधारे ।
निरखत नैंन मनोहर मूरति कोटि काम छवि पर बलिहारे ॥
सुंदर सरस कमल दल लोचन, दुख मोचन रोचन सुख सागर ।
कोमल केस सुवेस सीस पर भाल बिसाल रसाल उजागर ॥
नासा नैंन ऐंन अति आनँद, अधर अरुन अनुराग सुरंगी ।
कलित कपोल श्रवन मनि सोहत चारु चिबुक मन हरत अनंगी ॥

मृदु-मृदु हसनि लसनि आनन की, मुनिवर उर आनंद की दैनी।
कंबु कंठ उर उदित मनोहर, नाभि कमल कर पद चित चैनी॥
अँग अँग निरखि हरषि रिषि उमहे, नाचत गावत प्रेम परारी।
नैननि में मूरति मन हरनी, नित्य करत रँग रूप भरारी॥

* चौपाई *

प्रेम मगन श्रीनारद गावैं। स्यांम सलौंनी मूरति भावैं॥
उन नैननि में लाड़ लड़ावैं। मुख सों बोलनि नाहिं सुहावैं॥
मगन भये नित्यत गति भारी। तांन मांन तन की न संभारी॥
अंग २ लखि लै बलिहारी। नैननि सों सैननि सुखकारी॥
पद-बास कियौ निज गोकुल पुर में कहत भाग बड़ यह फल पायौ॥
रूप-रसिक मूरति मन मोहन हिय में धारि लह्यो मन भायौ॥

श्री शिवजी को आगमन

पद (१७७)

मंगल में महा मंगल की निधि, सब सिधि श्रीशिव आप पधारे।
गवरि संग अरधंग उदित तन, कोटिक रवि की छवि दुति धारे॥
जटा मुकुट छवि अद्भुत राजत, नंदीस्वर आरुढित सोहैं।
कृपा दृष्टि चितवत सब पुर पर, अति आनंदित मन को मोहैं॥
कहत कुंवर दरसन कैं कारन, सुखद धाम तैं हमहूँ धाये।
ध्यांन धरत जोगेस्वर जिनकौ, सो मम स्वामी नंद-घर आयौ॥
सुनत उठे ब्रजराज साजि कैं, आरति करि अति आनँद पायौ।
करि दंडवत पद वंदन करि कै धन्य धन्य निज भाग मनायौ॥
धनि वृज भूप अनूप आज तुम तोसम भूपर अवर न कोई।
अनंत अलेख अपार अपरमित मेरी जोवनि जग की जोई॥
सोई तुव घर जसुमति कैं उर प्रगट्यो कुँवर कृपाल रूप निधि।
दरस करावौ यह रस पावौ, मेरैं ऐही हैं जु सरब सिधि॥

अहु अहु स्वांमी अंतरजामी, निज प्रताप पद यह फल पायौ।
दया दृष्टि देखौ छवि पेखौ, करौ सबै सुख जो उर आयौ॥

* चौपाई *

निज मंदिर श्री शंकर धाये। कुँवर निरखि अति ही सुख पाये॥
निरखत नैंननि नैंन सिराये। अंग अंग छवि उर में लाये॥
स्यांम सुभग सिर केस सुहांवन। भाल सुलोचन मति मन भांवन।
अधर अरुन सब सुख उपजावन। ठोडी निरखि अनंग लजावन॥
श्रवनन सुवरन मंडित मोती। लटकत कलित कपोल उदोती॥
मुलकनि किलकनि जगमग जोती। निरखत छवि अति आनँद होती॥
हृदय कंठ उर नाभि उदारन। करत नैंन छिन छिन बलिहारनि॥
जंघा पिंडुरी पद पदनि निहारनि। सोभा की सोभा लै वारनि॥
बाहु पहुँचि कर कमल उदारा। अँगुरी नख अनुराग सुढारा॥
निरखि २ सुख बढयो अपारा। आनँद उमग्यो वार न पारा।

पद--प्रेम मगन तन मन न सम्हारत नित्य करत गावत गति भूले।
किलकत हँसत हँसावत आवत आनन्दित अति उर में फूले॥
नैंननि मांहि मनोहर मूरति, उर सुख पूरति रंग बढ़ांवैं।
थेई थेई गमि उपजावत गावत, महा प्रेम मन मगन लडावैं॥
श्रीकृष्ण कुँवर छवि निरखि लई उर वृजपुर तजि अब अंत न जैहूं
रूप-रसिक रस-भीनी मूरति, सूरति नैंननि नित्य लखै हूँ॥

गुनी जन आगमन

पद (१७८)

आये सब गुनी दुनी के जेते जी।
अहलादियां सादियां गावैं, सुख सरसावैं केते जी॥

भाँड भाट वंदीजन चारन कहत न आवें ते ते जी।
मंगन भरे उमंगन नाचें, परे प्रेम के खेते जी॥
हय गज हेम जवाहर मुक्ता देत दान नहिं लेते जी।
रूप-रसिक रसिकनि की जीवनि, कुँवर दरस के हेते जी॥

पद (१७९)

लाला तेरो वरषुरदार रहंदा जी।
जिनको जनम होत गोकुल सुख, मुख नहिं जात कहंदा जी॥
महाराज मंगन के भागों, आंनंद सिंधु वहंदा जी।
रूप-रसिक दीदार करावो, और न कछु चहंदा जी॥

पद (१८०)

लाला तेरो जी वं राज महाराजा जी।
हुआ हमारे भागों सेती लहैं दान गज बाजा जी॥
कोटि कोटि जनमन के दारिद, नाम लेत ही भाजा जी।
रूप-रसिक सुख करन हरन दुख राखि लई हम लाजा जी॥

पद (१८१)

महाराज श्री महा बाहु के, मंगन कहावते।
यो दिन गरीब निवाज, सदाहीं मनावते॥
खलकत भरी किती न, और पोरि जावते।
साखांन साख तेरे, गजवाज पावते॥
आनंदकंद नंद जवैं, हम भी आवते।
परजन्य राज देखि देखि कैं सिहावते॥
जानें सकल जहान अजब अदां दिखावते।
अब आये रूप-रसिक, लाल कौं लडावते॥

पद (१८२)

अभिलाष लाख भाँति भई मन की पूरी।
महाराज गली गोकुल की देखत रूरी॥
आनंद कंद लाला जुग जुग जीवें।
जन पाल रूप-रसिक दूधू अमृत पीवें॥

पद (१८३)

गाऊं महाराज राज घर आज।
हिलि मिलि परम कृपाल लाल जस, पुरवन वंछित काज॥
भांड वंस कूँ ओप चढाऊं, सुनि बृजपति सिरताज।
रूप-रसिक रस रीति प्रीति सौं, रिझऊँ सकल समाज॥

पद (१८४)

प्रभु जी मेंडा दिल चीता सोई कीता।
जनम लिया जबतें तब तें हूँ छिन छिन यही विनीता॥
पुरी आस कोटिक जनमन की, मन मान्या सुख दीता।
आनँद कंद नंद अब तौ सब, रूप रसिक जग जीता॥

पद (१८५)

सबन मिलि आनँद मंगल गाये।
तेरे लाल को जनम सुनत ही, बगर बगर ते धाये॥
इनके मन की यही कामनां, देहु नेग मन भाये।
रूप-रसिक या नंद सदन में, दरस करन हित आये॥

पद (१८६)

राजा तेरे भाँड भवन में आये।
कृष्ण कुँवर कौ जनम सुनत फूले अंग न माये॥
मंगल गावत मोद बढावत, धनि धनि भाग मनाये।
रूप-रसिक रसिकन की जीवनि, जनमत सब सुख पाये॥

पद (१८७)

महरानें में सादी भई भली ।
गुनी जन आय आय विरदावैं, गावैं रंग रली ॥
लेहु लेहु बोलैं नर नारी, उमँगे गली गली ।
रूप-रसिक जन मन अभिलाषा, जनमत कुंवर फली ॥

पद (१८८)

सादी हुई महरानें घर-घर मुबारखी ।
खुसवख्तियां अजायब दर-दर मुबारखी ॥
सब कहते हैं परस्पर नारि नर मुबारखी,
जन रूप-रसिक पाई भर भर मुबारखी ॥

रेखता (१८९)

दये गजवाज केते जी । कहे आवे न तेते जी ॥
सुनहरी जीन हौदा धर । सबै मोतियों सों सिंगार ॥
सुहाई पालकी दीनी । सुनहरी साज सों कीनी ॥
जिनों लगि मोतियों झब्बे । तिनों लखि मोहते सब्बे ॥
दिये जामा जरी के जू । दुपट्टे तार-कसी के जू ॥
दई बहु रंग की पगरी । सुहाई रूप की अगरी ॥
दये कानों के जी मोती । भरी तिनमें अमित जोती ॥
दये हाथों के जी चूडे । मनोहर रूप के रूडे ॥
दई बहु रंग की सालैं । बड़े मुक्तानि की मालैं ॥
चुकावो नेग जी मेरे । जीवौ रूप-रसिक जी तेरे ॥

राग लूहरि (१९०)

आज महर के आँगनें माँच्यौ दधि कादौं ।
गोप परस्पर ओप सौं नाचें अरु गावैं ।
दूध दही घृत हरदिरा छिरकें छिरकावैं ॥

डोलत बोलत फिरत हैं चहुँ फेरिनि फेरी।
हो हो हां हां हां हां ह हा हो हे हे हेरी॥
लोटत लपटत हैं कोऊ कोऊ सपटत सींचें।
झपटत दपटत हैं कोऊ कोऊ रपटत नीचें॥
बाजा बाजत बहु भाँतिन जनु घन ज्यों गाजें।
कोलाहल रह्यौ छाय अद्‌भुत छवि आजें॥
चढ़ि विमान दिवि देवता सुख नैन निहारें।
जै जै जै मुख बोलहीं बहु फूल उछारें॥
श्रीवृषभांन नरेस जू संग लै व्रजराजहि।
नांचत प्रेम उमंग सों अति आनँद आजहिं॥
ग्वाल बाल कल किलकही कूदत ही आये।
लै लै दधि घृत हरिदिरा अंग अंग लपटाये॥
भरि भरि करसा ढोरही दधि खार बहाये।
लोटत पोटत सगवगे रँग मोंहि सुहायें॥
व्रज चोरासी कोस को गोरस सब वरस्यो।
गोकल की गलियांन ह्वै सलिताहि सपरस्यो॥
न्योछावरि के वहि चले बहु वसन विभूषनि।
दौरि दौरि सव लेत हैं जे आये मंगन॥
ऐसो उच्छव आजि को जैसो हुवौ न होई।
रूप-रसिक जन को सदा सुख दायक सोई॥

श्री राधा जन्मोत्सव

राग काफी (१६१)

श्री वृषभांन कैं आज सुबाजैं बधाई हे।
हे हां अति अद्‌भुत सिधि रूप कुंवरि निधि पाई हैं॥

परम सुमंगल मोद मुदित सब गोप हैं।
जित तित दिखियत अधिकी ओप हैं॥
अगर वगर में सगर जगर मगराई हैं।
दगर दगर में दिपति सुद्योति सुहाई है॥
सोहत हैं सब ओरन सोरन साजहीं।
प्रति प्रति पौरन तौरन तुंग विराजहीं॥
सरस साथिये करस कनक बनक के।
बन्दन माल बिसाल गुलिक अन गनक के॥
गावत गीत सुरीति सबै मिलि सुंदरी।
श्रवन सुनत जरि जात जिते दुख दुंदरी॥
दुंदुभी भेरि निसांन सुर सहनाई हैं।
बाजत गाजत घन ज्यों घोर मचाई है॥
मागध बंदी सूत सुयश उच्च उच्चरैं।
भाट-ठाट पटु चाट चरित बहु विस्तरैं॥
विपुल पुलक वर विप्र बेद बद बादहीं।
जानि जनम कौ भेद भरे उनमादहीं॥
उर आनंद उछाह उमाह अनूप हैं।
को ऐसो भूपर भूरि भाग जैसो भूप हैं॥
श्री कीरति महारानी सब गुन खांनी हैं।
सुखदांनी जिहिं कूखि न जात बखांनी है॥
जामधि प्रगटी परम धाँम अभिरांम की।
नित्य बिहारनि स्यांमां पुरवनि कांम की॥
रस सरसी वरषी वरसांनैं आंनि कें।
उत गोकुल हरि जनमे जन हित जांनि कें॥

तिहिं सोभा सम करन कौंन तिहुँ भोन में।
अखिल ओक की उपमां गनियतु गौंन में॥
सेष महेस सुरेस गनेसुर गावहीं।
सारद नारद साध अगाध बतावहीं॥
सुक सनकादिक स्वयंभू व्यास विचारहीं।
तौउ लहत नहिं तनकहु ताके पारहीं॥
धनि धनि जुगल स्वरूप सुजीवन जीय के।
सींचि सकल जन किये डहडहे हीय के॥
धनि धनि आठैं आठ अठो अठ चोष्टी।
तिन मधि यह आनंद उदै परि पोष्टी॥

....

धनि धनि हमहूँ आज भये या भूपरे।

माझढार (१६४)

साढा दिल्ल चिंत्या वे कीता आज।
अणी वे साई गरीब निवाज॥
पूरियां कित कंमाइयां नन्दराय वृषभन्ना।
इसदे राधा उपन्नियां होर इसदे उपन्नां कन्नां॥
जीवण दे फल सइयें लध्यां भूपत साढे भग्गां।
अस्सी खुस वखती दी गल्लां भणियां तुसी मुंहूँ अग्गां॥
सानू रूप-रसिक दी रंगी चंगी छप्प कहांवां।
हो रलियां अंखो वेखण दी मिहिर वधाई पांवां॥

राग आसावरी (१६५)

गोप राज वृषभांन भवन आज बजैं निसांन सुहाये री।
मंगल कलस सजैं सब सुन्दरि गावत सरस बधाय री॥

दधि मांखन के मांट सीस धरि सकल गोप जुरि आये री।
हरषत बरषत भादौं भर लौं, गोरस अंबर छाये री॥
प्रगटी रूप निधांन कुँवरि अभिरांम स्यांम की प्यारी री।
ह्वै हैं सब बृज की ठकुरायनि, वल्लभ वंस उज्यारी री॥
नंद कुँवर याके बस ह्वै हैं, सोउ सब जग को नायकरी।
करि हैं रास विलास विविध विधि मुनिजन हियें सुखदायक री॥
दुर्वासा रिषि की असीस तें, अंमृतमय जु सरीरा री।
याके जनमत ही बृजजन की मिटी ताप तन पीरा री॥
याकी चरन धूरि तें होत हैं, कोटि विस्व अस सुनिये री।
विधि सिव सक्र सनक सुक नारद, तिन करि कीरति गुनिये री॥
धन्य भाग अपनो सुनि सजनी, दंपति दरसन पैहैं री।
रूप-रसिक सी कोटि सहचरी, चरन कमल जस गैहैं री॥

राग गौरी (१९६)

रे भैया हेरी रे।

कर ऊँचो करि किलकहीं दै दै लम्बी टेर।
वगदि आहु जिन जाहु रे ल्यावौ गैया घेर॥
वै देखौ सब ओरतें आये गैयन गुच्छ।
नाचत नंदित कूदते करि करि ऊँचे पुच्छ॥
कीरति कीरति कुच्छि की नहिं कोऊ समतूल।
तीन लोक सुख कारिनी जाई जीवनि मूल॥
घर घर अमर पुरी भई सुरपति सम सब गोप।
उदै होत या कुँवरि के बाढी अगनित ओप॥
या भूपति वृषभांन कें नहिं समांन कोउ आज।
ताके पुंन्य प्रताप तें सरे सबनि के काज॥

धन्य घरी पल आज की धन्य मुहूरत मास।
धन्य आज हम सब भये पुरई मन की आस॥
धन्य संयोग सुहावनो धन्य सुसोभन काल।
धन्य सबद जामें बज्यौ धन्य सुहावनो थाल॥
फूली फिरत सवासिनी दाई लेति बलाय।
निरखि लली मुख चंद्रमा, उमंगी अंगन माय॥
नंदीसुरतें नंद जू आये जसुमति साथ।
भीर ग्वाल गोपाल की, कछु वरनी जाति न गाथ॥
रतुवा पतुवा मनसुखा, मधुवा गवधू गंध।
चले चपरि रस में रले धरि धरि कावरि कंध॥
मिरदूला मधुमंगला भृंगा अरु भृंगार।
दरसू दसुवा दरगचा चले साजि शृंगार॥
एक सखा देख्यौ भलौ जाको मोटो पेट।
मगन भयो चल्यो जात है सिर गागर के जेट॥
लै लै भेंट भली भली उमहे व्रज महतोंन।
नाचत गावत गीत सों आये भांन कें भौंन॥
गर्ग परासर गौतमी दुर्वासा रिषिराज।
गोपराय बहु ओप सों पूजत तिनके पाँय॥
भाट ठाठ विरदांवहीं मागध बंदी सूत।
कुँवरि जनम अकिधौ भये घर घर कोटि सपूत॥
लिखत जनम की पत्रिका नाम सुन्यो जब कांन।
जथा जोग्य सनमांनि कैं भान दियो बहु दांन॥
अतिही ओपे अजिर में नाचत गोपी ग्वाल।
दूध दही घृत हरिदरा छिरकत छवि सु उछाल॥

सोभा गोकुल राय की मोपै कही न जाय।
संग लियें वृषभांन कों नाचि उठे उमगाय॥
अति कौलाहल कीच में लोट पोट सब अंग।
आंनंद की मूरति मनों रँगी प्रेम रस रंग॥
ऐसौ दिन आज कौ ऐसो जो नित होय।
रूपरसिक हमहूं बड़े हमरे भायें कोय॥

पद (१९७)

हेलारे आज बधावो वृषभांन कैं भयौ भांवतौ काज।
हेलारे ठौर ठौर ठट देखियें मंगल साज समाज॥
हेलारे दुर्वासा रिषि जू जबै आगम कह्यौ जनाय।
हेलारे सोई श्री राधा औतरी बरसाने में आय॥
हेलारे मात जसोमति नन्द जू चले लाल लियें गोद।
हेलारे कुँवरि जनम कें सुनत हीं बाढ्यौ मन में मोद॥
हेलारे वा आठें ते अठगुनी या आठें की ओप।
हेलारे सबदिस फूले अति फबे गोधन गोपी गोप॥
हेलारे भूप भवन में भोरहीं भई भीर भरपूर।
हेलारे पुगे मनोरथ सबनि के आज उगत हीं सूर॥
हेलारे अंग उमंगन भांवहीं, बरसानें कौ राव।
हेलारे दांन मांन सनमांन सौं राख्यौ सबको भाव॥
हेलारे सब जन कहते कृष्ण के लहते मनमें लाज।
हेलारे रसिक स्वरूपहिं जांनि कें जुगलदास किये आज॥

पद (१९८)

मंदिलरा बाजि बाजि अरे बाजि रे, बाजि बाजि अरेबाजि।
मंदिलरा लली जनम मन की रली लेहु बधाई आजि॥

मंदिलरा कीरति रांनी की सदा कल कीरति विसतारि ।
मंदिलरा बड़े भाग्य अनुराग सों प्रगटी श्रीसुकुँवारि ॥
मंदिलरा तेरी आज भली बनी गनी कौंन पैं जाय ।
मंदिलरा हमहूं पर कीजे कृपा लीजे संग लगाय ॥
मंदिलरा या भूपति वृषभांन कें भई भवन में भीर ।
मंदिलरा तोहीं ते सब पाय हैं सुख अंमृत की सीर ॥
मंदिलरा त्रिभुवन में तोसौ नहीं जो आयो इहिं काज ।
मंदिलरा रूपरसिक धनि धन्य तू तेरौ साज समाज ॥

पद (१६६)

दयो अब आंनंद ऐसो री हूँ तौं विधना की बलि जांऊ ।
रांनी कीरति कंन्या जाई जग जीवनि जाको नांऊ ॥
बहुत दिनन की यह अभिलाषा लगी रहति ही हीं में ।
सो सब आज पुराई री माई आई दया दई में ॥
देख्यो सुन्यो न हूँ कबहूँ कहूँ सुखही सुख सरसायौ ।
भांनभूप कें भूरि भाग सोई बरसानें बरसायो ॥
औंडे पैठि ईस आराध्यौ कै साध्यो पन पीनों ।
भांनमती पूछत भाभी जू सों कौंन पुन्य हम कीनों ॥
बेटी सुनहु पुन्य ऐसौ कहा जा करि यह सुख होई ।
अपनेंई करतवि करि करता भये प्रसन्न अब सोई ॥
साँच कही भाभी जू भू पर आज भई हम [illegible]ां ।
सुखदाई मुखराजु की जाई जिहिं जाई अद्भुत कंन्यां ॥
नेग हमारौ दीजे लीजे जो असीस हम देत ।
अविचल सदा सुहाग तिहारो रहौ बहु विभौ समेत ॥
जो चाहौ सो लीजै बेटी सकल बाप कौ माल ।
भाग तिहारें सबकें पीछें हौं ही भई निहाल ॥

अब हम और कछू नहिं चाहैं यही नेग मन भांवें।
रूपरसिक ह्वै भांन भौंन भाभी जू की कुँवरि लड़ावें॥

राग सोरठ (२००)

आज बृज फूल्यो सोवन फूल।
कुल मंडनि कीरति जू कंन्यां जाई जीवनि मूल॥
महाराज बृषभांन जू सौ जग में आज न कोइ।
नित्यबिहारिनि लाड़िली जाके प्रगटी कंन्या होइ॥
सिवाबिरंचि सनकादिक सुक मुनि नारद सारद सेस।
सुरपति गणपति से जपि जाकौं पावत पद परमेस॥
निगम नेति कहि देत हैं ताको लहत नहिं कोउ भेव।
सो स्यामां सर्वेस्वरी हम पाई करि सुचिसेव॥
अनन्त कोटि बृहमण्ड मंडअरु वयकुण्ठरु गोलोक।
जाकी सहज बिभूति हीं करिके ओपत हैं ये ओक॥
महा महोत्सव भयो भौंन करि सकै कौन समतूल।
रूप-रसिक जनमन सुखदायक बिमुखन के उर सूल॥

राग काफी (२०१)

धन्य धन्य आज की घरी।
रांनी कीरति कंन्या जाई, जनकी जीवनि जरी॥
हियें हुती सो देखी नैंननि, बिधिना ऐसी करी।
रूप-रासक उर आंनँद दैंनी सलिता सुफर फरी॥

राग गौरी (२०२)

परम मंगल भयो प्रगटी कीरति कें कुल दीप।
मास भादौं सुकल आठैं, रवि उदै गुरुवार।
बिसाखा नक्षत्र सुभ संयोग समय सुचार॥
अपनैं अपनैं मेल मिलि मिलि चलहु सकल सहेलि।

भवन श्री वृषभान जू कैं उलही आंनँद वेलि ॥
बहुत बधाये बाजनें सों करत अति कलगान ।
जाय निरखें कुँवरि कौ मुख सोहनो सुखदांन ॥
सुनत रवनी तुरत गवनी साजि सहज सिंगार ।
जाय पहोंची राय आंगन भरी उमग अपार ॥
परी पायन भेटि करि करि भूरि भाग मनाय ।
कहत पूरव पुन्य को फल पुंज प्रगट्यौ आय ॥
लली मुख निरखत मन की रली फली सब आज ।
धन्य भूपति भांनु जा करि सरे हमरे काज ॥
कूखि सुखदा की कलपतरु प्रगटी श्रीवृषभांन ।
दियौ मन वंछित सबनि कौं ऐसो कौंन समान ॥
हमतौ जानत आज कौ सो सुख न सुरपुर मांहि ।
क्योंकें देखो अवनि पर सुर सुमनझर वरषांहि ॥
हेरी दै दै गांवहिं सब गोप गोपी ग्वाल ।
दुध दधि घृत हरिदरा के वहि चले परनाल ॥
भयो ब्रज पति कैं उछव सौ तौ निहारयौ नैंन ।
पुनि दियो करतार यह सुख कहा कहियै वैंन ॥
ठौर ठौरहिं देखिये कछु ओप औरहिं औरि ।
गांनगुन सनमांन दांन बखांन पोरिहि पौरि ॥
मनहुँ उनयो घन सुधा कौ रूप-रसिकन हेत ।
पिवहु जीवहु सब दिना वरसांनैं भांन निकेत ॥

पद (२०३)

आज बधाई हो भांन भवन मन भाई सुंदरि ।
चलौ री सखी मिलि देखन जैये, कीरति कंन्या जाई सुंदरि ॥

पसरि परी जाकी अगर वगर में अंग अंग उजराई सुंदरि ।
दिस विसांनि जगर मगराई सगर नगर छवि छाई सुंदरि ।
भाग वड़ाई वरनि न जाई पाई निधि की अधिकाई सुंदरि ॥
वहु विधि वाजनैं वाजत गाजत जनु घनघोर मचाई सुंदरि ।
कौतुक केलि कुलाहल कल रव, गावति सुघरि सुहाई सुंदरि ॥
भई रँगीली भीरि अजिर में, आंनँद उर न समाई सुंदरि ।
वदन निहारि करत नौछावरि, सुधि बुधि सब विसराई सुंदरि॥
धनि व्रज देस धन्य वरसांनों धन्य पिता धनि माई सुंदरि ।
धनि धनि आज भये हम पुरजन, महिमा परत न गाई सुंदरि॥
आज भयो व्रजवास सफल सवहिन की आस पुराई सुंदरि ।
रूप-रसिक जन जीवनि जनमी सकल लोक सुखदाई सुंदरि ॥

राग काफी (२०५)

वृषभान कें आज वधावों आवौ री मिलि आवौ ।
रांनी कीरति जाई है कन्यां मंगल मोद वढ़ावौ ॥
द्वारन द्वारन वंदन माला कोंरनि केलि रुपावौ ।
सातनि सीक संवारि साथिये मोतिन कौ चौक पुरावौ ॥
आंनँद कोदिन आयौ सुहायो धनि निज भाग मनावौ।
रूप-रसिक जन जीवनि देखत तन मन नैंन सिरावौ ॥

राग कान्हरो ताल चम्पक (२०६)

वधाई माई वाजत भांन नृपति दरवार ।
सुनत ही जनम कुँवरि कौ सजनी लै उपहार चली अति हरषति नर-नारि॥
रावर भीरन मावत गावत अति सचु पावत तन न सँभार ।
प्रेम मगन नन्दादिक मिलि मिलि नांचत पुलकत रूप-रसिक रिझवार ॥

राग मालकोस चलत तिताल (२०७)

रंग झर लागौ ही रहैं बरसांनें सरसांने सुख घर घर।
प्रथमहिं घन घनस्याम प्रगट भये नन्द सदन में,
पुनि रस बरषा प्रकटी रुचिर कुँवरि वर॥
चपलावलि सहचरि सँग प्रगटी, केऊ पीछे केऊ पहलैं,
ता दिन छाय रह्यौ ब्रज अम्बर डम्बर।
रूप-रसिक जन चातक कै हित अद्भुत बरिषा,
सुनी न देखी ऐसी स्वाति बूँद झर धर पर॥

राग परज (२०८)

आज बधावो री हेली रावर राय कैं।
सब मिलि आवौ री हेली मंगल चाय कैं॥

छन्द–चाय कैं मंगल गावौ सब मिलि पावौ मन वंछित सबै।
मन रली सबकी फली सुंदरि लली जनमत ही अबै॥
निति निरखि कीरति कुंवरि को मुख लेहु री सुख नैंन को।
अब आज यह दिन आयो सजनी महा आंनँद दैन कौ॥

अति उनयो री हेली घन रस प्रेम कौ।
उदय भयो री हेली फल निज नेम कौ॥

निज नेम कौ फल लह्यौ कीरति भांन भूपति भागतैं।
पुरई सु साधा सबनि के हिय भरि दिये अनुराग तैं॥
कहुँ कौन सुकृत पुंज प्रगट्यो भयो ब्रज रस रंग-मई।
दिस विदिस जित तित देखियैं यह ओप कछु औरैं भई॥

महारांनी की री हेली जस बेली बढी।
सुखदानी की री हेली सब पुर पर चढी॥

अति चढी सब पुर पर सुबेली सघन वन तन मन भये।
छवि छई अति अनुराग पाग सुहात सब रस डहडये॥
फल फूल पूरन प्रेम प्रगटयो नेम को मग लोपही।
मन मगन डोलत सकल जन गन गोप गोपी ओपही॥

श्री वृषभांन कें री हेली भांन सुभाषियो।
सबन मन मान कें री हेली दान प्रकासियो॥

सु प्रकासियो अरविंद उरनि जू निरखि नैंन सिराइये।
लखि सरस सोभा कुंवरि की उर प्रेम भरि उंमगाइये॥
वृषभांन कीरति कौ परम धन है सबनि सुखदान को।
धनि भाग मांनि लडाय रूप अनूप जीवनि प्रान कौ॥

सब व्रज फूल्योरी हेली अंग अनूप सौं।
रवि लजि भूल्यौ री हेली रंग स्वरूप सौं॥

अंग रंग स्वरूपहिं निरखि पुर तिय हरषि अति आनंद भरी।
मनु मात अंक सुहात मन हर कनक मनि उर पर धरी॥
बलि हारि लै अंग अंग निरखि सु हरषि गुन गन गावही।
अति मुदित मन में मगन नाचत रचत लाड लडावही॥

उडुपति उलह्यो री हेली अति ही आनंद कौ।
रस उमह्यौ री हेली सब सुख कन्द कौ॥

सुखकंद कौ रस चंद प्रगटयो सरस सुखद सुहावनौं।
बहु बढी कीरति अति सुकीरति सुयस सुख उपजावनौं॥
सुलडात मात सुहात सोभित सरस मुख अति रस भरयौ।
बलि रूप-रसिक स्वरूप कुँवरि निहारि नैंननि उर धरयौ॥

राग आसावरी (१०६)

वर पुरदार रहौ तैंडी फरजंदी यां वे ।
खैराफियत खलक दी खुसियां वेसम वखत विलंदी यांवे ॥
ज्यांन जुमलदी जीवनी सवदी व्रजदी खुद खांवन्दियां वे ।
रूप-रसिक गरीव-परवर-दे वंदी पैरों परंदीया वें ॥

राग आशासिन्धु (११०)

सवन मन भायौ री भयो व्रजपुर में मंगल आज ।
कीरति कूख्हि कुँवरि कर प्रगटी भयौ सवन मन भायौ री ॥
घर-घर सौं सुंदरि सव सिमटी भयौ सवन मन भायौ री ।
गावत मंगल जनम लली के, आज भयो सुखअली मिली के॥भयो०।
राय आंगन में नाचत गावत, उमँगि २ विरदें विरदावत ।
धनि-धनि भांन धन्य कीरति अव धनि व्रज धनि वरसांनों हम सव
प्रगटी आज कुँवरि श्रीराधा, पूरी भई सवन की सधा ॥
उमंग्यौ अति आनंद अगाधा, देखत दूरि गई सव वाधा ।
अँग अंग सोभा सरस सुधारी, कोटिक रति दुति छवि पर वारी।
उफल परी उजियारी अति ही, सुंदरि कुँवरि लली जनमत हीं ।
डगर डगर सव वगर वगर में, सगर नगर में जगर मगर में ॥
मनु उमह्यो आनंद उदधि अव, प्रगट करत अपनी समृद्धि सव ।
मोतिन चौक साथिया पूरे, गावत गीत रीति रस रूरे ॥
भादौं सुकल पच्छ सुभ आठें, करत जु विप्र वेद धुनि पाठें ।
गोपी गोप ओप अति चाढे, केउ निरतत केउ निरखत ठाढे॥
हेरी दें दें गावत आवत, मटकी भरि हरदी दधि लावत ।
दधिकांदौं भांदौं कर लाग्यो, डगर वगर सव सुख में पाग्यौ॥

जाचिक जन सब भये अजाची, मन भाई निधि पाई साँची।
ब्रह्मा आदि देव सब आये, सिव सनकादिक नारद धाये॥
कुँवरि कमलपद दरसन काजें, बरषत दिव्य सुमन सुभ आजें।
जसुमति नंद आनन्द सौं आये, लखि २ कुँवरि परम सुखपाये॥
जसुमति कुँवर गोद में किलकत, निरखत कुँवरि कुँवर उर मलकत।
कुँवरि कुँवर लखि मात मुदित मन, नैंनन सैंन करत फूले तन॥
जसुमति गोद उतारि खिलावत, सरकत कीरत पद लपटावत।
कीरति लियौ लाल उमँगि भरि,दियो जसुमति कों दुगुनो करि॥
जसुमति मोद भरी अति मन में, फूली नाहिं समावत मन में।
मन हीं मन में समझि सिहाई, कीरति के जिय की रति पाई॥
मुखरा मगन कुँवरि की नानी, भांनमती हिय में हरषांनी।
ब्रजरांनी सों विनती कीनी, तुम चाहत सोई विधि दीनी॥
जसुमति कहें आज को यह सुख,जलप्यौ जातन अलप एक मुख।
हम तुम ऊपरि कृपा करी हरि, को जानें किहिं पुन्य पुंज करि॥
यह कुल मंडनि कुँवरि कहा हैं, सब ब्रज जन सिरमौरि महा हैं।
जाकी अंग अंग सोभा देखत, जीवन जनम सफल करि लेखत॥
कोटि कुँवर कौ सौ सुख घर घर, फूले मात न गात नगर नर॥
देखहु अचिरज यह जु नयौ है, घन में अंमृत घन उमयो है।
सरसी बरसांनें की घरवर, पूरि रहे सबके हिय सरवर॥
लखि लालन ललन लुनगाई, विधि की कोद गोद पसराई।
गोरी स्यांम निरखि निज नैंननि, लेति बलैया सैंननि सैंननि॥
धनि धनि विधना धनि चतुराई, जोरी सुंदर रुचिर रचाई।
प्रेम छके पुरजन प्रमुदानें, रहसि रिचा कों प्रगट बखांनें॥

भांन भूप कौ भाग सराहत, नित प्रति ऐसौ ही दिन चाहत।
रूप-रसिक जन उमगे उर में, जिनकें हित यह सुख ब्रज पुर में॥

राग सोरठ (२११)

गावत जन्म उछव के गीत।
रंग देव्यादिक चहुं दिसि ठाढी अपनी अपनी रीति॥
कोउ सखी गावत कोऊ बजावत, पहिरें तन पट पीत।
मुदित परस्पर हँसत हँसावत, नृत्य करत अति प्रीति॥
गौर स्यांम अभिरांम मनोहर, सुनि सुनि होत सुचीत।
अति आनंद बढ्यो हिय में तहां, अर्द्ध निसा गई बीति॥
जुगल स्वरूप सखी जन लखि लखि मांनत भाग पुनीत।
रूप-रसिक जब हीं पौढाए, रंग महल दोउ मीत॥

ब्रह्मा जू को आगमन

पद (२१२)

ब्रह्मलोक श्री ब्रह्मा नाद सिव सनकादिक राजें जू।
सुनत बधाई भूप भांन घर प्रगटी कंन्यां आजैं जू॥
नित्य किसोरी गोरी गुन निधि स्वामिनि अपनी आई जू।
अगम अगोचर ध्यांन न आवैं सो प्रगटी सुखदाई जू॥
दरसन हित अति आनँद बाढ्यौ, बरसांनें चलि आये जू।
पहलैं श्री ब्रह्मा जू धाये वेगहि हंस चलाये जू॥
बैठे श्रीवृषभान सभा सजि औचक ही तहाँ धाये जू।
देखत ही द्रिग सन्मुख होकें आरति करि पधराये जू॥
अरघ पाद्य पद वंदन करिकें धनि धनि भाग मनाये जू।
विनती करत अहो करुनामय किये सनाथ सुहाये जू॥

धनि वृषभांन महा वडभागी तो सम और न जग में जू।
जाकौ ध्यांन धरत हम सवहीं ताहू तें अति अगमैं जू॥
सो मम स्वामिनि सब सुख धांमिनि प्रगट भई तो उर में जू।
दरसन के हित आये हैं हम दरस करावौ परमें जू॥
अहो तात यह बात कहा है सो है सो सब तुमतें जू।
तुमरे चरन प्रताप लहत हैं जो वड वस्तु सवनि में जू॥
जात करम अरु नाम धरन विधि कीजे स्वस्ति स्ववंचन जू।
करौ कृपा करि या कंन्या कौ निरभै तन दुति कंचन जू॥
सुनि कैं महा मगन धुनि कीनी सामवेद सुख करता जू।
सोधि महूरत नाम धरयौ श्री राधा सब दुख हरता जू॥
औरहु नाम अनन्त हैं याके वेद पुरानन गाये जू।
या सम तीन लोक में याही पटतर हेरि हराये जू॥
बोले भांन भवन पद धारौ परम कृपा अब करिये जू।
दया द्रिष्टि देखौ दुख मोचन अभय हस्त सिर धरिये जू॥
निज मंदिर भीतर पद धारे कुँवरि दरस तहां कीनौं जू।
अद्भुत रूप अनूप अलौकिक नैननि भरि भरि लीनौं जू॥
कोटिक रवि दुति तन की सोभा मृदु मुसकनि मन भावैं जू।
भाल विसाल रसाल नासिका नैंन अधर छवि पावैं जू॥
चिबुक चारु अरु कंठ कपोलनि करनफूल से सोहैं जू।
कर पद हृदय कमल कल राजत नील वसन मन मोहैं जू॥
यह छवि निरखि निरखि परमेष्टी, परम इष्ट जिय जानी जू।
महा प्रेम आंनंद मगन ह्वै सब सोभा उर आनी जू॥
अवलोकत छवि चरन कमल वर निज मन मांहिं वसाये जू।
रूप-रसिक यह रूप नैंन भरि, तन मन नैंन सिराये जू॥

श्री सनकादिकन को आगमन

पद (२१३)

सनकसनंदन सनत्कुमार सनातन रिषिवर परम सुजांन ।
आदि अनादि सदा सुखदाई विष्णु भक्ति करि विष्णु समान॥
कुँवरि चरन दरसन कैं काजैं आये भांनपुर परम प्रवीन ।
बैठे जहाँ वृषभांन सभा सजि दरस दियौ तहाँ हरि पद लीन ॥
करि नीराजन मांनि भाग बड़ पधराये आसन सुखदाय ।
चरन बंदि सुख कंद रिषिन के करत बीनती अति हुलसाय ॥
अहु कृपाल करुनामय मुनिवर आज भयौ हूं परम सनाथ ।
यह दरसन देवन कों दुर्लभ सो पायौ मैं मिलि सब साथ ॥
अहो भूप बड भाग तुम्हारो तो समान भू पर नहिं कोय ।
तीन लोक की स्वांमिनि जो यह तेरें उर प्रगटी अब सोय ॥
जाकौ ध्यान धरत निति ब्रह्मा सिव नारद हम सब हरिदास ।
भक्त हेत प्रगटित भई जग में, संतन की पुरवन मन आस ॥
दरस करावौ सब सुख पावौ, दरसावौ फल परम उदार ।
भीतर पद धारौ बलिहारी करौ सनाथ सकल परिवार ॥
भूप भवन श्रीसनक आदि मुनि करि प्रवेस दरसी सुकुँवारि ।
निरखि २ छवि कोटिक रवि ससि वारि वारि लीनी बलिहारी
महा मुदित भये रूप निरखि मुनि नित्यं करत उर अति उमगाय।
तांन मांन गति गांनहि भूले फूले नैंन माधुरी पाय ॥
रूप-रसिक रसिकनि की जीवनि श्रीराधा छवि हियें बसाय।
छिन छिन लाड लडावत भावत देखत देखत हू न अघाय ॥

नारद जू को आगमन (२१४)

दोहा–जनम सुनत श्रीकुँवरि कौ, श्रीनारद मुनिराज।
हरिपुर तें आये जु रिषि, दरस करन कौं आज॥
सनमुख ह्वै वृषभांन जू बहुत कियौ सनमांन।
आरति करि अरघोद दै कीनैं मंगल गान॥
करि स्तुति कह्यौ आज हम सफल भये सब गोप।
कृपा करी रिषिराज जू बाढी ब्रज में ओप॥
धन्य धन्य वृषभांन जू, तुम सम और न कोय।
प्रगट भई तिहुँ लोक की स्वांमिनि कहिये सोय॥
नित्य धांम निति वसत श्रीकृष्ण प्रिये उर माल।
कीरति कीरति बिस्तरन नवल किसोरी बाल॥

पद–नवल किसोरी राधा गोरी स्वामिनि मोरी प्रगटी आय।
वरसानें वृषभांन राय घर कीरति कूखि सबै सुखदाय॥
हरिपुर तैं सुनि कैं हम आये दरसन हित अति उर उमगाय।
दरस करावो कुंवरि किसोरी कीरति की कीरति मन भाय॥
सुनि यह वचन श्रवन सुखदायक दीनैं भीतर भवन पठाय।
कृपा करी श्रीभांनसुरांनी दरस करायो अति हरषाय॥
दरसत ही सरसत ह्वै तन मन मगन महा आनंद बढ़ाय।
नाचत आय चौक मधि उचरत मुख तैं मृदु सुर वीन बजाय॥
आज भयौ हूँ नारद साँचो भक्ति नारदी करौं लड़ाय।
कीरति भाँन कुँवरि गुन गाऊँ रूप-रसिक रस रंग रचाय॥

शिव जू कौ आगमन (२१५)

वरसांनैं वृषभांन जू आये शंकर देव।
श्री राधा पद परस हित कहत लहत यह भेव॥

दोहा–सुनत उठे सनमुख भये श्रीवृषभांन नरेस।
करि प्रनाम आरति करी कहत धन्य यह देस॥
महा दुल्लभ दरसन जु यह श्रीसिव सब सुखरास।
सो सुल्लभ हमकौं कियौ किये कृपा करि दास॥
धनि धनि श्रीवृषभांन जू धन श्रीकिरतिमाय।
तिनकैं ग्रह भई प्रगट यह श्रीराधा सुखदाय॥
बहुत कलप हम तप कियौ धरयौ ध्यांन चितलाय।
मन हूँ में दरसी नही सो तुव घर जनमी आय॥
नित्य धांम सर्वेश्वरी कृष्ण वल्लभा बाल।
सो प्रगटी तुव कूखि में तीन लोक प्रतिपाल॥
तो समांन त्रय लोक में नांहिन नर मुनि देव।
हमहूं बरसांनैं जु बसि करैं जु तुम्हरी सेव॥
तुव ग्रह कीरति कूखि में प्रगट भई सुखदाय।
कुंवरि किसोरी राधिके सब की स्वांमिनि आय॥

पद–सबकी स्वांमिनि राधे नामिनि तन दुति दामिनि आई जू॥
धनि कीरति धनि भांन भूप धनि धन्य धन्य यह आई जू॥
धनि बरसांनों सब रस-सांनों मन-मानों सुखदाई जू।
धनि धनि गोप धन्य गोपीजन धनि धनि मंगल गाई जू॥
दरसन हित कैलास सिखर तें हम हूँ आये धाई जू।
कृपा करैं कीरतिदा रानी दरस करैं बलि जाई जू॥
बहुत कलप के जप तप कौ फल आज लहैं मन भाई जू।
पद परसों श्रीकुंवरि लाड़िली जनम करौं सफलाई जू॥

दोहा–नृत्य करत गावत मुदित वृषभांहन गुन रूप।
प्रगटी राधे स्वांमिनी कीरति भांन अनूप॥

तीन लोक पावन किये धनि कीरति धनि भांन।
दरस करावो कुंवरि को पद परमों सुखदांन ॥
तब बोले वृषभांन जू श्री संकर सुखदांन।
कृपा तिहारी कौ जु फल प्रगट्यौ परम सुजांन ॥
करौ कृपा यह लली कैं, धरौ सीस पर हाथ।
अभै करौ अब कुंवरि कौं, अपनी जांनौं नाथ ॥
करी कृपा वृषभांन जू अरु कीरतिदा मात।
बदन दिखायौ कुंवरि कौ सिव देखत गुन गाथ ॥
पद–आज भये हम सकल सिरोमनि राधे दरसन पाई जू।
हरषि हरषि नित नाम रूप गुन गावत रहौं लड़ाई जू ॥
सांचे सिव तुम किये भांन जू अरु कीरतिदा माई जू।
रूप-रसिकनी कुँवरि किसोरी तुव पद वलि दरसाई जू ॥
दोहा–निति निति यह मंगल महा रहौ वरसांनैं छाय।
हम तुम सब मिलि कैं सदा गावत रहैं लड़ाय ॥

गुनीजन आगमन (२१६)

आये सब गुनी दुनी के जेते जी।
अहलादियां सादियाँ गावें, सुख सरसावें केते जी ॥
भांड भाट बंदीजन चारन कहत न आवैं तेते जी।
मंगन भरे उमंगन नाचैं परे प्रेम के खेते जी ॥
हय गय मुक्ता हेम जवाहिर देत दांन नहिं लेते जी।
रूप-रसिक रसिकन की जीवनि कुँवरि दरस के हेते जी ॥

पद (२१७)

लली तेरी जीवै राज महाराजा जी।
कोटि कोटि जनमन के दारिद, नाम लेत ही भाजा जी ॥

रूप-रसिक सुख करन हरन दुख, राखि लई हम लाजाजी ।

पद (२१८)

महाराज वल्लव राज के मंगन कहावते ।
यो दिन गरीब निवाज सदाही मनावते ॥
खलकत भरी केती न और पौरि जावते ।
साखांन साख तेरें गजवाज पावते ॥
आंनंद कंद भांन जवै हम भी आवते ।
मही भांन राज देखि, देखि कैं सिहावते ॥
जानें सकल जिहांन अजव अदाँ दिखावते ।
अब आये रूप-रसिक लली कौं लड़ावते ॥

पद (२१९)

अभिलाष लाख भाँति भई मन की पूरी ।
महाराज गली रावल की देखत रूरी ॥
आनन्द कंद भांन लली जुग जुग जीवें ।
जन पाल रूप-रसिक दूधूं अमृत पीवे ॥

पद (२२०)

गाऊं महाराज राज घर आज ।
हिलि मिलि परम कृपाल लली जस पुरवनि वंछित काज ॥
भांड़ वंश कूं ओप चढाऊँ सुनौ गोप सिरताज ।
रूप-रसिक रस रीति प्रीति सौं रिझऊ सकल समाज ॥

पद (२२१)

साँई जी मेंडा दिल चीता सोही कीता ।
जनम लिया जब तें तब तैं हू छिन छिन यही विनीता ॥
पुरी आस कोटिक जनमन की मन मान्यां सुख दीता ।

आंनँद कंद भांन अब तौ सब रूप-रसिक जग जीता ॥

पद (२२२)

सबन मिलि आंनंद मंगल गाये ।
तेरी लली को जनम सुनत ही, वगरवगर ते ध्याये ॥
इनके मन की यही कामनां, देहु नेग मन भाये ।
रूप-रसिक या भाँन सदन में, दरस करन हित आये ॥

पद (२२३)

राव तेरें भाँड भवन में आये ।
राधे कुँवरि को जनम सुनत ही, फूले अंगन माये ॥
मंगल गावत मोद बढावत, धनि धनि भाग मनाये ।
रूप-रसिक रसिकनि की जीवनि, जनमत सब सुख पाये ॥

पद (२२४)

बरसांनें में सादी भई भली ।
गुनीजन आय आय बिरदांवें गावें रंग रली ॥
लेहु लेहु बोलें नर नारी, उमगे गली गली गली ।
रूप-रसिक जन सब कछु पायो निरखत नैन लली ॥

पद (२२५)

सादी भई बरसांनें घर घर मुबारखी ।
खुस वस्तियाँ अजायब दर दर मुबारखी ॥
सब कहते हैं परसपर नर नर मुबारखी ।
जन रूप-रसिक पाई भर भर मुबारखी ॥

राग सोहनी (२२६)

पालनें हे महारज दुलारी हे ।
झूलें हे महाराज दुलारी प्यारी, श्रीकीरतिदा सुखकारी वारी हे ॥

रतन जटित जम्बूनद झूलौ, लटकनि झलक सुढारी हे।
ऊपर दछिन चीर जगमगें, मधि मंगल उपहारी धारी हे॥
दूध फेन से बसन उपर पौढी प्राँन प्यारी हे।
अंग सुकांति न मावत पलनैं, उझली ग्रह उजियारी भारी हे॥
हुलरावत दुलरावति कीरति, कीरति जग विस्तारी हे।
चकित होत छकि जात निरखि रुचि, इकटक नैंन निहारि निहारी हे॥
रई नौंन उतारत वारति, न्यौछावर किये भारी हे।
श्रीरसिकनि के किंजक हँसनि पर रूप-रसिक तन मन बलिहारी हे॥

पद (२२७)

श्रीराधाजू जूलें पालनें सुख साधा जू झूलें पालनें।
कीरतिजू की प्यारी पालनें, श्रीवृषभांन दुलारी पालनें॥
पालनौं नव रतन रंग कौ, जतन करि विवि विधि रच्यौ।
अगन नगन सुलगन जगमग जोतिं मनि मोतिन खच्यौ॥
पालनौं रंग लालनौं अरु, सेत पीत हीरन जड्यौ।
सोधि कंचन नील मनि कनि मेंन रचि सचि पचि घड्यौ॥
चार डांडी कनक मांडी मोर मरवनि मनि हरे।
वनें नव मखतूल फूल बिछावनें रँग रँग भरे॥
पौढ़ि सुख सुकुँवारि प्यारी कनक तन पट नील में।
झलक अंग सुरंग सोभा भलक लक सु डील में॥
कोटि ससि मुख कमल राजत, नैंन सुखद सुहावनें।
बैंन आउ अरथ बिन के, परम अरथ पुरावनें॥
निरखि मात सिरात नैंन सुहात अँग अँग रस भरे।
धन्य भाग मनात अपनौं हरषि अति आनंद करे॥
कनक कुलही केस लटकें नासिका मोती लसें।

श्रवन लोलक नीलमनि कनक कनि जटित जोती लसें ॥
कंठ कंठी मुकत मनि मधि धुक धुकी बहु रँग रँगी ।
उदर कंज सुरंज सोभा कोटि भाँन सु अँग अँगी ॥
बाहु बाजू बनिक पहौंची रतन पहुँचिन में बनी ।
कर कवल अमल सु लाल सोहें मुद्रिका अँगुरिन मंनी ॥
चरन सरस सरोज रंजित पदतरी नव रँगररी ।
धन्य सोही लखें जोही, नैंन उर भागनि भरी ॥
पालनों रस ढालनों गति मंद मंद सुचालनों ।
झुनन झुनन सुबाजनों छवि छाजनों रति राजनों ॥
मोर मोरी मधुर घोरी नव किसोरी गांवहीं ।
कोकिला कल कीर नाना रंग सुर उपजांवहीं ॥
किलक किलक सुकुँवरि कर पद हलकि हलकि हलावहीं ।
हँसत कीरति लसत अँग अँग हुलसि हुलसि लडांवहीं ॥
झुलांवही रु मल्हांवही सुख पांवहीं सब कुल बधू ।
नैंन मानों भांन के हैं भाल कीरति को किधो ॥
पलहि पल वृषभांन आय सम्हारि कुँवरि मल्हांवही ।
निरखि निरखि कुँवारि सोभा सुखद उर उमगांवही ॥
कबहु झुनु झुनु झुंमरि धुन घूंघरी धुनकांवही ।
कबहुँ त्या त्या कहत मुख सों मगन सुधि बिसरांवहीं ॥
पालनों राधा कुंवरि को कोटि रवि ससि की प्रभा ।
निरखि निरखत होत लज्जित महा मनमथ की सभा ॥
नंद पुरकी निरखि नायनि हरषि मन हुलसांवही ।
कुँवरि कीरति लेंहि जसुमति कुँवरि दे पलटांवही ॥
कोटि भांनु जु जोति है वह स्याँम रंग सु अंग में ।

कैसें होहिं कहा कहौं इहि बात उरनि उमंग में ॥
कहति कीरति अहो समधनि सोक सौ कहा करि रही।
कहत नांयन कह्यौ मुख सों सोही अब करिये सही ॥
हसनि मुसकाई जु मन में बात दुहु जिय में जनी।
ललक उरकी झलक नैंननि लसत अंग अंग में घनी ॥
उमगि कीरति देत झोटा लेत राधा नामहीं।
इह कुंवरि गोरी नव किसोरी कहाँको री स्यांमही ॥
मनहि भावै मुख न गावै हरषि अति हुलस्यो हियो।
निरखि नांयनि परखि मन में वरषि रस झोटा दियो ॥
कहत गोरे कंठ में यह नील मनि कैसी लस।
मांनौं स्यांम स्वरूप ससि करि कनक गिरवर पर वसैं ॥
पालनौं रँग रूप रस कौ सुखद स्वरूप सुहावनौं।
निरखि रँग भरी हरी अलि प्रिया सुख उपजांवनौं ॥
नैंन करनि सौं देत झोटा रूप मंजरि रस भरी।
कंठ कोकिल सुरहिं गावत सुख स्वरूप प्रिया हरी ॥

पद (२२८)

श्रीराधा जू झूले पालनें कंचन तन दुति ऐंन।
कोमल अँग अँग ललकहीं, मात सिरावत नैंन ॥
कीरति सरवस श्री राधा।
कमल वदन सुख को सदन प्रगट्यौ पूरन चंद।
रावर में रस वरषही भांन सु आनंद कंद ॥
भांन प्रांन धन श्री राधा।
वनज वरन पग पगथरी नखमनि परम अनूप।
झाँझरि चरन बजांवही हरषत सब त्रिय भूप ॥

त्रिय मन मोहनि श्री राधा।
नीलांबर पट सोहहीं झलकत अंग सुवेस।
सजन सवासिन वारनें जीवौ कुँवरि सुकोटि वरेस॥
सजनी सुखदा श्री राधा।
कंठी कंठ विराजहीं नील मनिन वहु मोल।
नासा-धर मोती लसैं मृदु मृदु हँसनि सलोल॥
तन मन मंडित श्री राधा।
सुन्दर भाल सुहावनों राजिव लोचन वाल।
श्रवनन लोलक लालके लटकत रूप रसाल॥
राजिव लोचन श्रीराधा।
कंकन करननि कनक के रतन जटित कटि जाल।
हीरनि की चौकी लसैं झलकत मोतिन माल॥
रतनाभूषण श्री राधा।
मरकत मणि को पालनों डाँडी मानिक लाल।
मधुरें मधुरें झूलहीं सरस सहेली चाल॥
मृदु मृदु झूलनि श्री राधा।
नवल खिलौंनां खेलही झूमरि रंग सुसारि।
घुंघर झुणण वजांवही गांवहि पुरजन नारि॥
पुरत्रिय रंजनि श्री राधा।
अतिही छवीली छवि भरी ललना रूप अपार।
कुंवरि किसोरी लाड़िली रसिकन प्राँन अधार॥
कुंवरि छवीली श्री राधा।
भक्तन हित भू अवतरी नित्य सिरोमनि सेव।
राधा कृष्ण जोरी सदा रूप-रसिक लहें भेव॥
रूप-रसिकनी श्री राधा।

राग ललित (२२६)

लली जू कौं पालनौं झुलावें ।
श्रीकीरति महारांनी प्रफुल्लित मुख अम्बुज सौ फूल्यौ देखि२ हुलरांवें॥
लसत पालनों ललित रतनमय रेसम डोरि सुहांवें ।
चहुँ ओरनि झूंमनि झूंमन की लूंमनि लर लहकावें ॥
कलकनि ललकनि निरखि निरखि छवि नैंननि हियो सिरांवें ।
धनि सुहाग बड़ भागनि मैं या मंगल मनिहि मल्हांवें ॥
अपनों साज समाज संग सजि विमलमती गुन गांवें ।
नितंत अंग उमंगन भरि भरि नव नव रंग बढ़ांवें ॥
जै जै उचरि सुरनि की सुंदरि पुहुप वृष्टि वरषांवें ।
रूप-रसिक जन सरवस वारत मन वंछित धन पांवें ॥

जलपुजनोत्सव

राग गौरी (२३०)

चलौ मिलि देखन जइयै री श्रीवृजराज कें धांम ।
आज लाल जलवा पूजन दिन एकादसि अभिरांम ॥
द्यौरांनी जिठांनी मिलि महरांनें की महतोंनि ।
वरुनदेव सेवा सुख पेखन चली छतीसों पोंनि ॥
चली जसोमति अतिही सोहति संग सखिन की भीर ।
प्रभा पुंज पठयौ पीहर कौ पहिरें पियरो चीर ॥
एक हाथ रोहनि कर पकरें दूजौ जलधर भांम ।
मंद मंद गति धरत धरनि पर चरन भयें गत घांम ॥
वाजदार वहुवाजे वजवत दुंदुभि भेरि निसांन ।
मधुर सुरनि गावत मन भावत मंगल हरि गुन गांन ॥
गुरु रिपि पतनी समूह सवासनि नेगदार नर नारि ।

ब्रज सुंदरि आदिक चंद्रावलि उमंगी उरन मझारि ॥
सकल सौंज भरि भरि थारनि में, धरि कर कंजन माँझ।
चली भली रँग रली रंग सों फबि फूली मनु साँझ ॥
पहुँची जाय तीर जमुना कें रची जथोचित रीति।
धूप दीप नैवेद्य निवेदन अरघ पाद्य कर प्रीति ॥
अहो महा वरदेस्वर वरुन जू सरनि सदा सुचिकार।
सदा प्रसंन होहु हम ऊपर निज करि साँझ सवांर ॥
मन वंछित दीजै अरु लीजै अपनौ जो उपहार।
सुत सूतक तें पूत होनहित कह्यौ तथास्तु उचार ॥
करि जल केलि चले निज पुर कौं सब जन सीस नवाय।
ग्वाल बाल गन वृंद मुदित मन आँनँद उर न समाय॥
पहुँचे आय राय आँगन में दियो द्विजन कौं दान।
ता पाछैं सबही कौ कीनो जथा जोग्य सनमांन ॥
सांगा मची मचाय ललन कौं दियो प्रसाद भरि गोद।
रूप-रसिक पायौ तिहि छिन छवि निरखि महा मन मोद॥

श्री रंगदेवी जू कौ जन्मोत्सव

राग जैतिश्री (२३१)

सारंग गोप घर सुघर ओप सों बाजत आज बधाई हो।
करुना निधि महारानी सुख निधि जाई कुँवरि मन भाई हो ॥
अति आनंद उदार अजिर में फिरत सजन समुदाई हो।
मंगल मोद विविध विसतारत उमँग न अंग समाई हो ॥
वेद अगोचर सुनियत राधे सो कीरति जू जाई हो।
जाकी परम हितू कोउ सहचरि दीनी आनि दिखाई हो ॥
भादो मास सकल सुखरासी पूरनमासी आई हो।

करन कांमनां पूरन मन की तन की ताप नसाई हो ॥
जानि परी जो गुरुजन मुख तें सुनवे बात सुहाई हो।
परिकर सहित प्रगट ब्रज ह्वै हैं दै हैं सुख अधिकाई हो॥
देखौ भूरि भाग हम सब को कहत कह्यो नहिं जाई हो।
अधिक अधिक ही भयो रहत हैं मंगल ब्रज में माई हो॥
श्री रँगदेवी सुदेवी प्रगटी मोद बढ्यौ सुखदाई हो।
भयौ भयानों रंग मई सब रस बरषा बरसाई हो ॥
जनमी जुगल कुंवरि इक जोटहिं अद्भुत रूप निकाई हो।
क्यौंन होय ऐसो मंगल महा कहिये कहा बड़ाई हो ॥
अपनी हीं कोउ आंनि उदै भई पूरबली जु कमाई हो।
रूप-रसिक ह्वै निरखत यह सुख निमिष न अंतर लाई हो॥

पद (२३२)

बधाई बाजत आज सुहाई सारँग गोप कैं द्वारैं।
प्रगटी कुंवरि जुगल मन रंजन सज्जन सुख बिसतारैं ॥
सुनत ही गोप सकल पुरवासी मंगल गावत आये।
भरि भरि मोतिन थाल मनोहर कर कंजनि धरि ल्याये ॥
नचत नचावत अति मन भावत आंनद उर न समात।
दधि घृत दुग्ध हरिद्रा घोरी लै लपटावत गात ॥
देखि देखि मुख मिथुन कुँवरि कौ वारत मोतिन थार।
मागध सूत भाट बंदीजन बिरदावैं दरबार ॥
धनि धनि भादौं मास सुकल पषि धनि पून्यौं गुरुवार।
धन्य धनिष्ठा नषित्र जामैं कुंवरि लियौ अवतार ॥
श्रीहरि प्रिये की प्रिये सहचरी सब सखियनि सिरदारि।
रूप-रसिक अलि अग्रवरतनी कांन्ह प्रांन बलिहारि ॥

पद (२३३)

गोप गन फूले अंग न माई ।
सारँग गोप घरि कंन्यां प्रगटी, भई सबन मन भाई ॥
घर घर तोरन धुजा पताका, बंदन माल बँधाई ।
कनक कलस मधि अछित पुंगीफल मोतियन चौक पुराई ॥
आंगन भीर भई नर नारिन, मंगल आज सुहाई ।
नाचत गावत करत कुतूहल दधिकांदौ झर लाई ॥
बंदीजन गुन गांन करत बहु, नायनि दूब बँदाई ।
विविध भांति भूषन अरु अंबर अपै भंडार लुटाई ॥
बड़े बड़े विप्र वेद उचरत हैं, जात करम करवाई ।
दांन मांन सनमांन जथा जिहिं सब की आस पुराई ॥
जैसौ मंगल भयो भांन घर, ऐसोई सुखदाई ।
रूप रसिक उर आंनद दाता, कान्ह प्रांन बलि जाई ॥

पद (२३४)

आज भई मेरे मन की भाई ।
सारँग गोप घर बजत बधाई रांनी कंन्या जाई ॥
श्री रँगदेवी सुदेवी सुख निधि जोरी परम सुहाई ।
जनमत ही सब ब्रजवासिन कौं टेरहि वेग बुलाई ॥
भादौं मास सुकल पून्यौं दिन सुभ नषित्र सुखदाई ।
घर के विप्र वेद धुनि कीनी अरु कीरति मुख गाई ॥
यह लरकी वृषभांन कुंवरि की अग्रवर्तिनीं आई ।
सहचरि जन में सुखद सिरोमनि ह्वै हैं बड़ी बड़ाई ॥
परम धाम परिकर मधि याकी अति अद्भुत छवि छाई ।
मुख सेवा अधिकार मई सोई, भूरि भाग तैं पाई ॥

जो अब प्रगट भई या भूपर नित लीला दरसाई।
तौ यह लीला नित प्रति देखौं, रूप-रसिक बलिजाई॥

पद (२३५)

धनि धनि आज की घरी।
श्री रंगदेवि सुदेवी प्रगटी, पूरन प्रेम भरी॥
श्री हरिप्रिया की प्रिया सहचरी, अवनि आंनि अवतरी।
रूप-रसिक जन सब सुखदायक, सुख सरिता अनुसरी॥

पद (२३६)

प्रगटी श्रीरंगदेवि सुदेवी जू।
श्री राधे जू की निज प्रिय सहचरि, कलकव्यांदिक सेवी जू॥
नित्य धाँम की नित्य सहेली, परा परम रस भेवी जू।
रूप-रसिक अलि आंनँद दैनी, कान्ह प्राँन हिये धेवी जू॥

पद (२३७)

धनि धनि आज मंगलचार।
रंगदेवि सुदेवी प्रगटी कृपा करी करतार॥
गोप श्रीसारंग धनि धनि ओप अति दरबार।
हरषि नाचत ग्वाल बाला भई भीर अपार॥
दूध दधि घृत हरिदरा छिरकत लहत सुखसार।
छयो अति आनंद डंवर किनहु तन न संभार॥
धुजा पताका कलस तोरन साथीये सिंगार।
केलि अति रचनां कलपतरु दिपति द्वारनि द्वार॥
गांन विविध निसाँन गरजित बधाये विस्तार।
आय मंगन पाय धन सब करत जै जैकार॥

कृष्ण राधा की हृदय सुँदर कला अवतार।
रूप-रसिक अनंददा पोषन सदा परिवार॥

पद (२३८)

प्रगटी ब्रज में प्यारी सखी प्रवीन।
श्रीरँगदेवि सुदेवी नांम सुभ रसिक जननि सुख दीन॥
मास भाद्रपद सुकल पूर्णिमा गोप भये लवलीन।
सुनत चले सारंग गोप घर महा प्रेम रँग भीन॥
नाचत गावत करत कुतूहल, दधिकादौं झरकीन।
कहत सबै हम आज भये धनि बल्लभ कुल आवीन॥
रंग धांम की मुख्य जुथेसुरि श्रीहरिप्रिया नवीन।
रूप-रसिक रस रंग रूप छवि मोपैं जात कहीन॥

राग पंचम (२३९)

चलहु री चलहु मिलि आज सुख देखैं अति ओप सों गोप सारंग की पौरि। महारांनी जनी कुँवरि आंनंद सनी सुनत पुरजन पुलकि आये सब दौरि॥ करन लागे विविध केलि दधि रेलि की हेरी दै दै नचत सकल सिरमौरि। एक तें एक अद्भुत भरे रूप के रसिक समतूल पटतर कोऊ और॥

राग काफी (२४०)

आज अजिर मैं निजर न आवत भूमि हैं।
एहां, अति अद्भुत सारंग गोप घर धांम हैं॥
करुनांनिधि की कूखि लली भई भांवती।
एहां, ब्रजजन रसिक चकोरन सुख सरसांवती॥
इत भई मेरी जू राधा साधा पूरनी।
एहां, उत भई रंग सुदेवी जू भागनि भूरनी॥

ललित विसाखा चंप प्रगट भई आय कैं।
एहां, चित्र तुंग इन्दु लेख सुखैं सरसाय कैं॥
वा आठैं तैं आठ भई इक रूप की।
एहां, खेलत में लगि है ज्यौं रावल भूप की॥
को जांनैं करतार ढरे किहिं बात पैं।
एहां, कै हम कीनौ पुन्य वाहि कछु हाथ पैं॥
महारांनी अब चलहु तौ सब मिलि देखियै।
एहां, व्रजमण्डल के गोप ओप भरे पेखियै॥
तुंग धुजादिक केलि कलपतरु छवि भरे।
एह, ठौर ठौर गलियांन चौंक मुक्तन करे॥
दूधादिक की कीच बीच सब डोलहीं।
एहां, लेहु दांन सनमांन सहित सब बोलहीं॥
गुन गांवन मन भांवन जाचिक जे गये।
एहां, ते सब रूप-रसिक रँगीले करि दये॥
वरुनादिक से उमंग उमंग गुन गांवहीं।
एहां, तन मनसौं जन हरि तिन पैं बलि जांवहीं॥

राग सोरठ (२४१)

आज व्रज बाढ्यौ अति आनंद।
साधा फली लली मुख निरखत सकल सुखन कौ कन्द॥
आवौरी मंगल गावो सब मिलि अबै तिहारौ दाव।
तौंन मौंन बंधान विविधि विधि खोलि हिये कौ भाव॥
लहत नेग जो जो नित प्रति ही नंद सदन वृषभौंन।
सो करुना-निधि पैं अब लैहैं अभिमत उच्यत दौंन॥

साधा राधा जनम समें (में अभिलाषा) रही जोय ।
सो सारंग गोप गुन गावत सहज हीं पूरन होय ॥
देखहु कैसो आज कौ यह जगर मगर दिन होत ।
डगर डगर सब वगर वगर में वाढ़ी अद्भुत जोत ॥
लखि सोभा आंनंद की गोभा भरी उमंग ।
तन मन धन वलिहारी करिये देखि सुदेवी रंग ॥
पायौ सब मन भायौ जो जो बाधा रही न कोय ।
मोहि दांन यह देहु दया करि रूप-रसिकता होय ॥

पद (२४२)

हे हेरी रंग सुदेवी जनमतें भरि भरि उरन उमंग ।
हे हेरी लैंन वधाई सब चलौ लै लै परिकर संग ॥
हे हेरी आज सबै मन की रली पुरई भांति भली जु ।
हे हेरी श्रीराधा सुख दैंन कौं आई अहल अली जु ॥
हे हेरी घर घर मंगल ह्वै रह्यौ कह्यौ जात नहिं बैंन ।
हे हेरी कौंनै पुन्य प्रताप तैं निरखत हैं सुख नैंन ॥
हे हेरी बैठे हैं वृषभान जू व्रजपति सहित समाज ।
हे हेरी सुरपुर की उपमां यहाँ लावत उपजै लाज ॥
हे हेरी धन्य मात करुना निधे धनि सारंग सुगोप ।
हे हेरी धन्य धन्य हरिदास जे वृजवसि पाई ओप ॥

राग अरगजौ (२४३)

आज प्रगटी श्री सुखदाई भलैं राधा मन भाई ।
कहत परस्पर गोप सकल हाँ हाँ श्रीरंगदेवी जनमत वटत वधाई॥
अष्ट सखिन में मुख्य ए श्री करुनानिधि रूप ।
प्रगटी जुगल स्वरूप ह्वै, रसिक जननन गुन भूप ॥

सारंग सारंग में भरे, सरे सबन के काज।
ता रँग की बरषा करी झरी लगाई आज॥
उमंडि उमंडि आये सबै जाचिक जन दरबार।
भाट ठाट मिलि गांवहीं आनँद बढ्यौ अपार॥
भाँड़ भवैया ए नचैं करैं नकल भर पूरि।
लोक लाज की पाज पर डारैं मूठी धूरि॥
साँचौ है इनको नतौ मतौ एक सौ जोय।
बरसानैं नँदगाँव में जब जब मंगल होय॥
बड़े गोप महिभांन ते आवत देखे नैंन।
उनहूँ ते आगें सुनत बड़े बड़न के बैंन॥
घर के ढाढ़ी कहत हैं वंशावली अनूप।
महा मोद मन में भरे गोप सभापति भूप॥
दांन मांन सनमांन करि ढाढ़िन भवन पठाय।
कृपा करी करुना निधे दरसन हित बैठाय॥
दरस करायौ कुँवरि को आनँद बढ्यो अपार।
रूप-रसिक जन जानि कें दयो रंग उर हार॥

राग ऐराक (२४४)

आनँद मोद बधांवनौ पूरन आज छयौ।
दरसत दिसि विदिसांनि में सरसत नेह नयौ॥
करुनानिधि सारंग कौ सुकृत उदै जनु भयो।
रंग सुदेवी रसमई जाकै जनम लयौ॥
सकल विस्व सुखदायिनी लखि दुख दूरि गयौ।
आस पुरावन दास की विधिना ठाट ठयौ॥

मंगल सरस सुहावनो पूरन सब सुख साज।
परम प्रिया सुखदानि की सहचरि प्रगटी आज॥
मंगल रंग सुरंग में सबै रँगे अँग अंग।
तर तरंग अनुराग में उमँगे लसत अभंग॥
सारँग ग्रह सारंग ज्यों सुषमा बढ़ी अपार।
परम प्रभा प्रगटत गई सोभा निधि मनहार॥
परसंसत सब सहचरी करुनानिधि की कूखि।
जुगल चंद सुख कारनी प्रसरत मंजु मयूष॥
रंगदेवी जु सुदेवी जू जनमत हीं जिहिंवार।
सहज मुदित सब जग भयो घर घर मंगलचार॥
सुंदरता माधुर्य्यता रूप रवनता जोय।
लावनि छवि सुकुँमारिता तिन सँग प्रगटी सोय॥
विदित भाद्रपद नाम नभ ब्रह्म रूप हैं सोय।
गवर स्याम द्वै पच्छिकरि मास कहत सब कोय॥
सुभग सुखद राका विषद तहाँ जू पूरन चंद।
जुग्म हेत हरि प्रिया प्रिया, प्रगट भई रसकंद॥
रितु पावस सरसत सरस, सब जीवन रस सार।
जहाँ सुघन आनंद कौ वरसत वारंवार॥
धन्य धनिष्ठा वरनिपत, धन्य जु सुर गुरुवार।
अरुन उदै विरियाँ रुचिर, प्रगट भई श्रुति सार॥
जुग्म सेव्य श्रीहरिप्रिया,जन्म लियो जब आय।
तिहिं छिन आनँद विस्व उर रह्यो उमंग उमंगाय॥
चिंतामनि अवनी छई सुरतरु सम तृन मूल।

काँमधेनु सम सब पसू सुरपुर की समतूल ॥
द्वार द्वार प्रति फबि रही मुक्ता बंदन माल ।
सदन भरे मांनों हास्य रस बिकसत बदन रसाल॥
पौरि पौरि तोरन सुभग लसत पताका तुंग ।
नभ दांमिनिसी लखि रहीं उपमा कौं मति गुंग॥
पौरि पौरि पर साथिये, चित्रित चित्र बिचित्र ।
मनों प्रेम अनुराग के, मंडित चारु चरित्र ॥
पुंगीतरु कदली सुवर, जम्बू श्रीफल आदि ।
दुर्वांकुर कर कलस जुत, गावत मंगलवादि ॥
दही दूध छिरकत सबै, कुंकुम हरदी घोरि ।
हास कुलाहल गोपकुल, बरनत बनै न और ॥
बंदी मागध भाट कुल, ढाढी चारन आदि ।
गोप वंस बिरदांवहीं, दै दै आसीरवाद ॥
नृत्यकारी निर्तत भये, गावत मंगल मोद ।
भई सबन के चित्त की, बढ़ी सुआनंद गोद ॥
भाँड़ गुनीजन करि रहे, भाँति भाँति के रंग ।
सबके मन हुलसत भये, तिनकी देखि उमंग ॥
कबहुँ होत हैं बिप्र जू, गावत बेद सुभाय ।
हासिकेलि रस रहसि की महिमा कहत सुनाय ॥
नटी जटी सब गुनन की छटी छटा सी जांनि ।
लटकि लटकि पग धरत अरु सरस सुदेसी ठांनि॥
किन्नर गन्धर्व अपछरा कन्द्रप रति के संग ।
राग रागनी वपु धरैं उपजत नाना रंग ॥
तार चमर अरु स्वास के बाजे हैं जे कोय ।

छवि सों ते वाजत भये वरनें जात न सोय ॥
रिद्धि सिद्धि पुनि निद्धि जे दई सबै करि भूरि ।
प्रचुर दये बरचारि कैं जनमत मंगल मूरि ॥
भीर भई रनिवास में गावत गीत सुनारि ।
कल कंठी ससिकला सी कमला सी सुकुंवारि ॥
मधुर सुंदरी रूप मई कंदर्पा सी सोय ।
कामलता सी रस भरी रूप मंजरी जोय ॥
मंजुल केसी तन प्रभा कबरी चारु बनाय ।
सुभग हार हीरा धरैं हीरा कंठ लगाय ॥
परम मनहरा छवि सहित सोभित सुखद अनूप ।
भूषन कौं भूषित भई, कहा कहिये सुठि रूप ॥
मोतिन चौक पुरांवहीं, कनक थार कर धारि ।
आरति जुत आरति करत, पीवत पानी वारि ॥
इंहि औसर जो सुख भयो, वरन्यों कापैं जाय ।
चंद रूप-रसिक जू कुमुद कैसैं कहैं बनाय ॥

संभयापूजनोत्सव

राग गौरी (२४५)

मिलि पूजौ री साँझी आज मिलि पूजौ री ।
मृगमद चंदन लीपौ भीत । गोमय रचि विचि फूलन चीत ॥
अरघ पाद धूप दीप संजोय । भोग धरौ मन सुकतें होय ॥
दै अचवन अरपौ मुखवास । करौ आरत्यौ होय हुलास ॥
जैं जैं कहि मुख करौ प्रनाम । अहो देवी पुरवो मन काम ॥
हम ऊपरि चितवो सुभ दृष्टि । तुमतें और कौन उतकृष्टि ॥
सबके जिय की जांननि हार । धरि उर इष्ट भई अनुचारि ॥

इहिं विधि पूजौ साँझी साँझ । वर पावौ जो जो उर माँझ ॥
रूप-रसिक ह्वै गावैं जोय । सहजहि सब सुख पावै सोय ॥

पद (२४६)

साँझी हो मिलि खेलन जइयें, श्री वृन्दावन माँझ ।
आवैंगी फल फूलनि लै लै, अप अपने घर साँझ ॥
सकल गोप रायन की कंन्यां, श्रीमति धन्यां आदि ।
चलौ रली रंग अली संग सब, गावति गुन उनमादि ॥
वरन वरन आभरन सजौ मन, हरन सुभग सिंगार ।
पुरवन काज सकल मन वंछित, आज बड़ौ त्यौहार ॥
सुनि सुनि वचन चली छवि छजि २ तजि २ अपने धाँम।
मधि मनि श्रीस्यामा मन मोहत सोहत अति अभिरांम॥
कोउ गावत कोउ विहँसि बढ़ावत, कोऊ करकमल फिरात।
कोउ जू रंग उपजावत नव नव उमंगी अंग न समात ॥
वितन विनोद विविध विसतारत, धारत चरन सरोज ।
पहुँची जाय आज वृन्दावन, चाय चौगुनै चोज ॥
जहाँ कूल जमुनां अनुकूल सु फूले फूल सुरंग ।
अरुन पीत सित असिय परम सुचि, सरस सुगंध सुगंध ॥
झुकि झुकि डार रही भरि भाजु, भ्रमर भ्रमत मधु लोभ ।
निरखत ही मन हरषित ह्वै ह्वै ,लगी चुनन चित चोभ ॥
मदनबांन मोतिया मालती, मल्ली वल्ली राय ।
बहुरि मोतिया राय बेलि, माधुरी सुवरनी जाय ॥
सदा गुलाल गुलाब मोलसरि सेवति सदा सुहाग ।
राय सुगंध चमेली चंपक, चूँटति अति अनुराग ॥
पाडर रूपमंजरी कुंदी, कुंदक मोद कनीर ।

नागर चंप निवारी नवला, बहु सौरभ बिसतीर ॥
नाना भाँति फूल अनगिनती, बीनति फिरें बनवाल ।
तिहिं औसर उपज्यौ इक अलि यह अद्भुत चरित रसाल॥
चूँटत सुमन सुमन की अलि इक, आगें निकिसी जाय।
अति सुजाँन घनस्याम सजन सँग, पाय भयो मन भाय॥
पूछत को हो हम हम सजनी, स्वामिनि की सहचारि ।
साँझी पूजन सुमन लेन हित आईं वन मंझारि ॥
तुम पूछत सु कहा काज हित, कहौ हिये की बात ।
मेरौ मन तिहरी ठकुरायनि, देखन कौं ललचात ॥
योंही देखन पैहौ जू कहा दीजै कछु अकोर ।
जो कछु है सु तिहारोई लीजै कीजै बंछित मोर ॥
चली लाल सँग लेय लली जहाँ देखि निछपली कुंज।
दिये मिलाय दोउन कौं बाढ्यौ अति रति रस कौ पुंज॥
विविध विलास आस उर जो जो, पुजय परस्पर लाल ।
तृपति न मांनी जांनी जिय जब परम प्रवीना बाल ॥
बोली चलौ उहांहीं रहियौ, गांउ कहाँ हैं दोय ।
सुख निधि श्रीस्यांमाजू सँगहिं, सखी साँवरी होय ॥
लई साँवरी सखी लालकरि, चली बाल बनतें जु ।
फूलन सो भरि भरि जु गोद करि मोद महा मन में जु॥
देखि सुरूप सबै विपमें मई, यह को अई नई जु ।
जांनति जे जु देति भई उत्तर, भूली संग भई जु ॥
नंदीसुर की नवल नागरी, सखी साँवरी नाँउ ।
रैंन चैंन सुख देखि सकारें, जेहैं अपने गांउं ॥
कहत प्रिया जू चलहु वेगि दै, भई जाति है वेरि ।

बहुत फूल फूल लिये आज कूँ कल्हि जनियेंगी फेरि ॥
प्रिया वचन सुनि सखी सिमिटि सब चली आय तन ओर।
करत अनेक चरित मारग में, उमंगी अंगन थोर ॥
मन वंछित फल फूलन लै लै, सजत गोप सुकुँवारि।
पहुँची आय सु अतिहिं ओप सो, बरसानैं मंझारि ॥
माय धाय उरलाय हरष सों लीन्ही अरघ बढाय।
पुनि आरती उतारि कुँवरि की दोउ कर लेति बलाय ॥
पूछति कौन साँवरी सी यह, नई तिहारे साथ।
बन मूली नन्दी सुर की सोई, बरन सुनाई गाथ ॥
विविध सौंज साँझी पूजन, की आय धरी भरि थार।
परम प्रीति सों पूजि आरती कीनी श्री सुकुँवारि ॥
पुनि कर जोरि परी पायनि में,करि अस्तुति परिनाम।
विनवति अहु देवी यह दीजे, कीजे वंछित कांम ॥
खेलि चली अप अपनें घर, प्यारी प्यारी संग।
श्री स्यांमा अरु सखी साँवरी,सब निसि विलस्यो रंग ॥
इहिं विधि यह साँझी को सुख मुख करि कछु कह्यौ न जाय।
रूप-रसिकजन धन्य हैं जे नित लेति हैं लाल लड़ाय ॥

विजयोत्सव

राग सारंग (२४८)

रतन सिंहासन बैठे दम्पति सुख सम्पति सजि सजि सिंगार।
आज दशहरा दिवस बड़ो महा मृग नैंनिन कौ लेन जुहार ॥
चलहु सखी मिलि जैंये बनि बनि सनि सनि उरन उमंग अपार।
रहसि रीति रस गीत गवावति उपजावति अति मंगलचार ॥
बहुँ मेवा पकवान मिठाई भरि भरि ल्यौ कर कंचन थार।

औरहु नग मनि गन अनमोलक जाय धरौ आगैं उपचार ॥
वरनत याहि विजै को वासर विजय विविन कौ विजय विहार।
रूपरसिक जनके मनकौ यह मोद विनोद बढांवन हार ॥

पद (२४६)

आज विजय दसमी दिन नीको।
विजय गोपाल वाल विजयी मिलि रच्योहै खेल ही पीको ॥
विजय सखी सँग रंग बढावत, विजय चढाव चढी को।
विजय साज रस राजत उमगत, उपजावत हित ही कौ ॥
विजय विसद वृंदावन विजयी, आँगन कुंज कुटी को।
विजय विनोद सदा सुखदायक, रूपरसिक जन जी कौ ॥

शरदोत्सव

राग बिहागरौ (२५०)

सरद फूली मालिका लखि नैंन मदन मन मोहन सब सुख दैंन।
बैंन बजाय बुलाय विपिन में लई मृगनैंननि सैंन ॥
वृंदावन वंसीवट जमुनां, पुलिन पवित्र सुदेस।
सकल कला संयुक्त मुदित मन, उदित भयो राकेस ॥
लाल कुँवर आज्ञा अनुवर्तिनि, जोग मया मन रंजु।
देखि देवा सेवा अभिलाषी, राखी सजि सब संजु ॥
रच्यो रासमंडल मधि द्वै द्वै, सच्यो स्वरूप सु एक।
बीच विसद विवि चंद विराजत, छाजत छवि जु अनेक ॥
गांन नृत्य सनमांन सहित, सुर तांन मांन बंधांन।
मूरति वंत प्रगट दिखरावत, सब गुनकला निधांन ॥
मुरझि परयौ जहाँ मैंन निरखि छवि, लियें पंच सर हाथ।
पति की गति अति जांनि विकल जब, रति भरि लै गई बाथ ॥

रीझि भींजि रस रजनी न जनी, किती इक बढी बिसाल।
बिलसत सजनी स्यांम जिती रुचि, भई तिती तिहिं काल ॥
सुर बिमान सुमन सु बरसावैं, जै जै करि भरि मोद।
उड उडपति चकि थकित रहि गये, तकि वर बिमल बिनोद ॥
रमत रास रस रंग रह्यो जो कह्यौ कौंन पैं जाय।
रूपरसिक हारें सेसहु से, अति असेस जस गाय ॥

पद (२५१)

रास में रसिक नव रंग नागर नचत।

प्रांन प्यारी कें संग सरस गति अति सुधंग अलग लग दाट के-थाट कोउ न बचत ॥ चरन बिन्यास बहु भास हस्तक निपुन हुर्मई— धरि जु ध्रुव भ्रु व बिलासहिं सचत। सुघर संगीत अवघर जु बिद्या बिदित बिपुलवर उर्प अरु तिर्प रस मय रचत !! मुकुट मंजुल अलक ख्लक कुंडल झलक ललक लखि बिमल गंडस्थलनि दृग चलत। मधुर रस ऐंन कल वैंन थेई-थेई कहनि दैंन मन नैंन को चैंन हिय में खचत ॥ रुनित नूपुर कुनित किंकिनी कलित कल ललित बन-माल मधु जाल मधुकर मचत। मंद मुख हास परकास दसनावली अधर आरक्त फल बिंब कह को पचत ॥ देखि दुति बिसद दसना-वली की उरसि अमित चपला चमक इंदु कोटिक कचत। बसहु अद्भुत अनूप रूपरसिक सुखद हीय मन भाँवते मन वचन यहि जचत ॥

पद (२५२)

राजत रास रसिक मन रंजन।

अति सुंदर गुनरूप मनोहर, दियें ग्रीवां कर कंजन ॥
गउर स्यांम अनुरूप अंग रति काम कोटि भ्रव गंजन।
चलवनि चपल नैंन में मिलवनि, मांन सहज सुख संजन ॥

मधुर वचन मुख रचन थेई थेई सचन सुगति मति मंजन ।
भृकुटि विलास विभेदन वितपन, मिथुन विथा जु विभंजन ॥
कलित केलि कमनीय कुँवरकी, निरखि थकित भये खंजन ।
रूपरसिक अद्भुत अनूपरस, बढ्यो विपुल पुल-पुंजन ॥

पद (२५३)

रसिक कुँवर वर दोउ विराजत रास में रसभींनि ।
कनक मनी मर्कत तें नीकी, बनी बनक अति बींनि ॥
उदित चंद आनँद कँद मन, मुदित अंग भुज दीनि ।
कोटि कोटि कुलकला धरनि की, लई कला सब छीनि ॥
उपमां दैंन हैंन त्रिभुवन में, भविहु भई भवि हीन ।
रूपरसिक उर वसौ लसौ, दंपति की दिपनि नवीन ॥

राग बंगाल (२५४)

निर्तत रास कमलदल नैंन । सरद सुरैंन अति सुख दैंन ॥
श्रीवृंदावन वंसीवट तट, जमुना पुलिन पवित्र ।
पूरनचंद अमंद किरनि करि, रंजित रुचिर विचित्र ॥
नवल फूल फूले अनुकूले, नाना रंग सुरंग ।
मधुकर पुंज लुब्ध मधुगुंजत, लियें संग अरधंग ॥
त्रिविध पवन मन रवन सुहायक, सुखदायक सब काल ।
परसत अंग अंग सचुपावत, उपजावत रस जाल ॥
द्वै द्वै बीचि सचि एक एक तन, विहरत स्यांम सुदेस ।
कनककनी विचि मनहुँ नीलमनि, सोहत सुभग सुवेस ॥
मध्य युगल मन हरन विराजत, छाजत छवि जु अपार ।
राग रंग बहुभाँति भेद भर, तरत रंग विस्तार ॥
नूपुर कंकन किंकिनि की धुनि, सुनि लज्जित कलहंस ।

भुज फरकनि तरकनि कंचुकि कच, छुरि जु रहे दुरि ग्रंस ॥
कुंडल झलक ढलक सीसनि की, भलक भाल छवि देत ।
पलक ललक नग चलक कलक मुख, वलक संगीत सहेत ॥
पग पटकनि पटझटकनि खटकनि, भूषन नख चटकानि ।
लटकनि हार मुखन की मटकनि, अंग अंग अटकानि ॥
मंद हँसनि मोहन की लसनि सुखुननि कसनि तन फूल ।
रसन वसन तन सिथिल सु श्रमकन, किरनि सिरनते फूल ॥
पांवनि धांवनि धरनि सुहांवनि, चांवनि नृत्य करंति ।
गांवनि सुरहिं मिलावनि पियहिं, रिझावनि वच उचरंति ॥
वंसी वजावें ग्राम जमावें, कल सुर अधिक चढाय ।
निकट आय परसावें उरवर, अद्भुत तान वढाय ॥
डोलनि मुकुट सु कुंडल लोलनि, थेई थेई बोलनि बोल ।
पटझट झोलनि ओप अतोलनि, ढरि ढरि देंन तँवोल ॥
परसत मरसत सरसत तन मन, मधुर सुधा रस पाय ।
श्रमित जानि श्रमकन पिय पोंछत, कहि रस बैंन सुहाय ॥
क्रीड़त वहु गत रास विलासहित, थकित भये उडचंद ।
रूपरसिक यह सोभा निरखत, वाढत अति आनंद ॥

राग केदारौ (२५५)

नृत्यत नागरी नगधरन ।

मंजुल रासमंडल मध्य, करसों करजोर किसोरकुँवर गौर साँवर वरन ॥
उरप तिरप लाग दाट नाट्य थाट में सुचाट थेई थेई रट वदन मदन मांन भंग करन । अरस परस सरस पुलक छलकि रही सुछवि छलक ढलक मुकट अलक रलक झलक कुंडल लरक लरन ॥
तांन मांन वर वँधांन गांनगति सु अति सुजांन सकल कला गुन-

निधांन ढरनि सुढर ढरन। रीझि रीझि रहसि रँग भीजि भीजि अंग अंग बाढ़ति उर अति उमंग रति रस विसतरन॥ रूपरसिक सहचरि जन निरखि थकित भई भूप भाँवते अनूप की सुकेलि हिय की हरन॥

पद (२५६)

आली री रास में श्रीराधा माधव नित्य करत।
परसपर गवर साँवर भाँवर भरत॥
मुकुट लटक कल कुंडल ढरत। कलित कपोल अलकनि सों अरत॥
अंग-अंग फबि फबि छबि छहरत। नीलांबर पीतांबर फहरत॥
मृदु पद विसद विन्यास वितरत। हस्तक सुभेद भव्य कहि न परत॥
वचन रचन थेई थेई उचरत। भृकुटि विलास हास हियकों हरत॥
श्रम वन कन गनतन कौं धरत। रूपरसिक लखि नैंन ढरत॥

पद (२५७)

निर्तत रास में नवरंग।
नवल जोर किसोर मूरति, गवर साँवर अंग॥
सर समाजनि सरस सुंदर, वजत मधुर मृदंग।
अमृत श्री कुंडली मंडल, वीन वरन मुखचंग॥
भेद नव नव परसपर वरसत सु सरस सुधंग।
चरन करन अचरन भृकुटी न टरनि ढरन सुढंग॥
तांन मांन बंधांन गांन, सुजांन सुंदर संग।
विविध हास विलास वितपन उरन उमंग उमंग॥
निरखि विबुध नववृंद वनितनि सहित बुधि भई पंग।
वमहु अद्भुत रूपरसिक सुहियें केलि अभंग॥

चांदनी

राग बिहागरौ (२५८)

चांदनी बिछाई औ पिछाई चार चांदनी की चांदनी तनाई तैसी रही चांदनी चटकि। चांदनी सिंहासन कै आस पास चांदिनी सी सोहति सुरूप सबैं रूपलतासी लटकि॥ तैसेई जुवनि कें विराजे विवि चंदलाल छाजे छवि जाल चहुँ ओरनि छई छटकि। अद्भुत अनूप रूपरसिक निहारि नैंन पावत हैं चैंन दुधा सुधारस कौं गटकि॥

राग केदारौ (२५९)

सरस सुखदाई री आई उजियारी मन भाई निसि आज।
सेत सेत छवि देत सकल वन, संपति सहित समाज॥
सेत सिंघासन पर वनि बैठे, सजि दंपति सित साज।
सेत सिंगार कियें सहचरि जन, सेय रहीं सिरताज॥
सेतहिं सेत निरखि दृग सोभा, चकित भयौ द्विजराज।
रूपरसिक जन के मन की यह, पुरवनि वंछित काज॥

अथ कार्तिकोत्सव

राग बिलावल (२६०)

कार्तिक मास सम न कोउ दूजा। श्री राधा दामोदर पूजा॥
जामधि निरवधि सुख जन पावैं। प्रेम प्रमोद भरे गुन गावैं॥
जामधि संत सुचित्त ह्वै नित प्रति जु उत्सव विस्तरैं।
श्रद्धा सहित अनुसरहिंते संसार सर नर निस्तरैं॥
आनँद कंद किसोर वर विवि चंद हित हिय में धरैं।
विधि वही जो विधि कही सो सब सही अनुक्रम तें करैं॥
प्रथम करें निज तन कौ साधन। ता पाछै प्रभुकौ आराधन॥
सेवा सच सिंगार सचावैं। मंगलादि रचि भोग लगावैं॥

जु लगावें भोग सुमंगलादिक आरती हित सों करैं।
महा मंजु मूरति मिथुन वरकी निरखि उर आनँद भरैं॥
दिन-दिन जु प्रति इंहिं भाँति निसि दीपावली प्रजुलांवहीं।
वहु नित्यवादि कथादि हियें, उनमादि हरि गुन गांवहीं॥
करि सुश्रूषा संत संतोषें। प्रीति सहित सब ही परिपोषें॥
इंहिं विधि जो या व्रतकौं साधें। मनवांछित फल लाधें हिं लाधें॥
लाधेंहिं लाधें मन इच्छा फल, सकल साखि वषांनहीं।
श्रुतिस्मृति आगम नारदादिक अविक गुनगन गांवहीं॥
नरनारिवित अनुसार धरि चित करहिं कृति कार्तिक कोऊ।
नित रूप-रसिक स्वरूप ह्वै सद्जुगल पद पावें सोऊ॥

दीपदानोत्सव

राग कल्यान (२६१)

आज कुहू की महा निसा री।
जगमम जगमग जोति जगमगैं दीपदान की दिसि औ विदिसा री॥
तैसेई वरवांनिक पिय प्यारी वनि वैठे सिंघासन भारी।
रूप-रसिक छवि ऊपर वारी कोटि कोटि छवि की छविता री॥

पद (२६२)

आज कुहू की सोभा भवनी।
तिहिं छवि ऊपरि वारों, कोटिऊ चपला चमक चंद्र छवि कवनी॥
भाखूं कहा हिये की सजनी री, जो सुख होत धन्य यह रजनी।
जगमग भवन गगन लखि आवत, पूरनचंद्र केरि मति लजनी॥
गावति हीर हिली मिलि सब करि, विविध भांति वाजन की वजनी।
रूपरसिक जनमन सुखदायक, मंगल मूल अमंगल तजनी॥

राग बिहागरो (२६३)

आज सुभ दिन सखी निरखत रीझि रही,
भवन वन्यों हें मांनों दुति देवसाला की।
गोरी गोरी थोरी वय मंद गति पायन की,
चाहत चकोर जैसें हेर नंदलाला की॥
भूषन की जोति तन जोति औ उमंग रंग,
वढ़त अनंग नभ पर सिवि साला की।
वारी वारी गई भई आनँद मगन रूपरसिक,
उदोति मांनों जोति दीप-माला की॥

राग जैजैवंती (२६४)

आज दीपन की माला इत राजें वृजवाला री।
जमुनां कें कूल जल जोति प्रतिबिंव होत दूनी छवि वाढ़ी महा आनँद विसाला री॥ गावत मधुर सुर गोधन सुभेटि करि मांनों यह किंनरी सी नागन की आलारी। वाजत मृदंग झाँझ आंनक मधुर सुर वांसुरी सु वेन शृंग सवैं वृज लाला री॥ देखि सुर मुनि मोहें एसौ जड़ कौंन जो हैं द्रवि नहिं चलें गिरि झरत रसाला री। सुवस सदा ही रहौ नित प्रति सोभा लहौ चिर जीवौ सदा रूप-रसिक गुपाला री॥

राग कालिंगरो (२६५)

आज म्हारें दीवालें दीवाल रे।
ज्योरे म्हारे घरे घृत दीपक तैसी हि ज्योति लसै मणि जाल रे॥
आवत जात विलोकन पुरजन उर आनंद उमगि रही रे।
मोटा भाग सू वाला जी आव्या सजि घणां रूडा साज रे॥
वधांवणां करि वहु वाजिंतर छढ़िर गीत गवाडौ मीतनां रे।

म्हारे साथडिल्याँ सहुतेड़ि रे। सूखड़ली सजि साजनी रे ल्याये न लगाड़ो भोग रे। वाल्हौ जी आव्या उमंग थी रे रूडूं मिलियौ जोग रे॥ धन्य दिहाडूं आजनों रे धन्य आजनीं रेंण रे। रूपरसिक रलियाँ थई रे म्हारें साँवलिया सासेंण रे॥

हटरी पूजन

राग कल्याण (२६६)

दीपदान करि बैंठ हटरी।
विविध मिठाई भरि भरि भाजन आनि धरी सहचरि थट थटरी॥
कहत मोहनी करहु बोहनी देहु लेहु पूरें पुरवटरी।
घट तोलें ह्वै है भकझोलें जो सोलें जहाँ चलें कपट री॥
घट तोलें तौ निकट रहति हौ, नवनागरि फिरि अइयो भटरी।
रूपरसिक महली बतरांवनि, समझि समझि सुख सच्यो सुघटरी॥

जुवा खेलन

राग कल्याण (२६७)

खेलत जुवा जुगल मिलि मंजुल।
नोकें चौकें छकें रु तीकें दाव लगावत भरि भरि अंजुल॥
आवत नहीं तब खात रुकटि कहि जात बचन करि झंझट झंजुल।
रूपरसिक सुख निरखति सहचरि, इकटक दियें पियें रस रंजुल॥

श्री गोवर्द्धन-पूजनोत्सव

राग बिलावल (२६८)

कहत कान्ह ब्रजराज सौं यह आज कहा जू।
घर घर मंगल होत हैं ब्रजमाझि महा जू॥
कौंन काज ए करत हैं नाना विधि साजू।
कहौ मोहिं समझाय कें ब्रजपति बाबा जू॥

बोले मृदु मुसुक्याय कें सुनि के सिसु बानी।
सुरपति पूजा करत हैं जो बरसैं पानी॥
जाकरि उपजैं तृन तबै गोधन सुख पावै।
बरस बरस प्रति प्रीति सों सुरपति हि मनावै॥
सुनि बोले बांनी जबैं, मधुरें मुख बालक।
हमरे ब्रज कौ है सदा गोवरद्धन पालक॥
सुरपति करि कें कहा हमें याकी परछाहीं।
सदा रहैं सुख सों सबै, पूजौ गिर नांहीं॥
भली भली कहि सब उठे, नंदादिक जोई।
मतौ सुनायौ स्यांम कौ, सब ही सों सोई॥
करि प्रतीति बोले सबै, या सम को दूजौ।
रूपरसिक साँची कही, गोवर्द्धन पूजौ॥

पद (२६६)

गिरि पूजा गोपाल बताई।
सुनत ही बात सराहि कहत सब, भली कही यह कुँवर कन्हाई॥
विविध भाँति सांमग्री सजि सजि, चले सकल जन उर उमगाई।
नाचत गावत करत कुलाहल, प्रमुदित पहुँचे लोग लुगाई॥
धरि सब सौंज सजावत पूजन, बर द्विज बोलि बोलि ब्रजराई।
वेद रीति विसतारन सौं करि, सोड्स उपचारें कर बाई॥
धूप दीप अर्घादि भोग बहु, भाँतिन भाँतिन पाँति पुराई।
आरोगत गिरिराज रूप हरि, सब जन देखत सब सुखदाई॥
धनि धनि कहत सकल गोकुल के, लखि ब्रजपति बालक सकलाई।
जिहिं परतछि देवदरसायौ, मुखतें माँगि माँगि जो खाई॥
सुरपति कहा हमारो करिहैं, हम न डरें जाके डर राई।

विघन अनेक निवारन जिनके, सिर ऊपर हैं स्यांम सहाई ॥
भक्त जनन मन भांमन हरि सोई, प्रगट भये हैं व्रज में आई ।
रूपरसिक जाकी अति महिमां, निगमनि अगम अगम कहि गाई ॥

राग सारंग (२७०)

आज्ञी सोभा बनी अंनकोट की ।
नांनां विधि सांमग्री सुंदर, सची सँवारि अटोट की ॥
गिर तन धारि हरी आरोगत, बलि देखत जन बड़ छोट की ।
रूपरसिक कहा बरनि बखानें, महिमा ब्रजपति धोट की ॥

पद (२७१)

जै जै गोवर्द्धन देव जू ।
आंनि आंनि कहि और मँगावत, परतछि भोजन लेव जू ॥
बहुत बरस तौं हम व्रज जन सब, कीनी सुरपति सेव जू ।
ऐसें बलि कबहूँ न आरोगी, परम प्रीति करि एव जू ॥
अहो अपर पर हम अब जांनी, तुव महिमा अपरेव जू ।
रूपरसिक नँदलाल कृपा तें, लह्यौ रावरौ भेव जू ॥

गोवर्द्धनधारनोत्सव (इन्द्र कोप)

राग सारंग (२७२)

मो सुरपति सों बैर बिसायौ ।
नंद मंद मति की मति देखो कृष्ण भरोसें कर्म कमायौ ॥
देखें आज कौंन व्रज राखें, चाखें फर तेसौ तरु बायौ ।
या में कहौ दोस है काकौ, अपनौ कियौ आप ही पायौ ॥
मोकौ तजि पर्वत कौं पूज्यो, बहक्यौ ज्यौं बालक बहकायौ ।
खिन में खोदि बहांऊँ अब सब, जांनें को कब कहाँ बिलायौ ॥
बुरौ होन जब आवत जाको, तब ताको फिरि जात सुभायौ ।

रूपरसिक आगैं कहि आये, सो इनि आँखिन प्रगट दिखायौ ॥

राग सोरठ (२७३)

तबैं बोलि सुरराज लई मेघ माला ।
आज सब जाय बरसौ ब्रज ऊपरैं, देखैं कैसोक हैं नंदलाला ॥
यह आज्ञा दई सकल ब्रज बोरिद्यौ छोरि द्यौ प्रबल जल प्रलयकाला ।
नांम अरुठांम कहुं रहन पावैं कछु, गोप गन गाय गोपाल ग्वाला ॥
मोसों करि बैर किहिं भाँति बचिहैं कहो, हौं सकललोककौ लोकपाला ।
रूपरसिक सु कियौ तुरत निज पायहैं परबतें पूजि पुर घोष बाला ॥

पद (२७४)

श्रवन सुनत ही बचन सब मेघ धाये ।
तर्रात थर्रात दर्रात धर्रात, कर्रात घर्रात अर्रात आये ॥
आवर्त सांवर्त अरु अगिन जल पवनवर्त सकल प्रबल ब्रज पर चढ़ाये ।
सोर कर घोर कर ठोर कर डोर कर जोर कर कोर कर कराये ॥
उलकापात आताप आघातका अवर कैई जात का छूटि आये ।
ढोरते फोरते खोरते खाड़ते तोरते ताड़ते तड़तड़ाये ॥
देखि भै-भीत ह्वै भाजि ब्रज जन सबै आय गोपाल कौं बच सुनाये ।
डरौ जिनि कही जब रूपरसिक सु प्रभु, उचयगिरिराज सबकौं बचाये ॥

राग सारंग (२७५) (इन्द्र खिसानों होय करनि आयौ)

बरसत मेघ अपर बलधारा ।
सात रात दिन बीति गये तउ, पातन लगी फुहारा ॥
महाप्रलय कौ जल हो जितनौं, तितनौं सब बरसायौ ।
तऊ बार बाँको न भयो ब्रज, सुनि सुरपति सरमायौ ॥
कांमधेन कौं आगै करिकैं, आय चरन तर लोट्यौ ।
रूपरसिक प्रभु तुम ऐसेई, मेरौ इतनौंई पोट्यौ ॥

पद (२७६)

हो प्रभु क्षमा करौ मम खोट ।
मैं नहिं जान्यों त्रिभुवन नायक, घोष तिहारें ओट ॥
झूलत हैं संसार समुद्र में, बाँधि कर्म की पोट ।
तिनकौं कहा दोष प्रभु दीजे, महामूढ मति छोट ॥
सुरपति को काँपत मुख आगें, देख्यौ व्रजपति धोट ।
रूपरसिक प्रभु मया करी महा परं दया के कोट ॥

पद (२७७)

धार्यौ गिर धरनी गिरधरलाल ।
निधरक रहौ कही सुरपति सों, कोमल वचन रसाल ॥
दै गोविंद नाम करि पूजा, चले इंद्र भूपाल ।
रूपरसिक प्रभु के पद पंकज, परसि आपने भाल ॥

(मातृ वचन) राग सोरठ (२७८)

अहो मेरे लाड़िले कैसें तेरे कर पर ह्यौ गिर भारी ।
अति सुकुमार कमल हूँ तें ए कोमल बाँह तिहारी ॥
सात रात दिन बीति गये इहिं, अचरिज ही में वारी ।
रूपरसिक कछु हों नहिं समझति, कौन सकति संचारी ॥

अथ प्रबोधनोत्सव

राग कल्यान (२७९)

आज प्रबोधनि परम सुहाई ।
करहु प्रबोध समय सुख सजनी, कातिक सुदि एकादसि आई ॥
रचना रुचिर रचहु दीपन की, मंजुल कुंज महल अँगनाई ।
नाना मणि गण मंडप छावौ, छवि सों धुजा पताक बनाई ॥
मुक्ता मंडप पूरि मनोहर, मंगल कलस सचौ बिचि लाई ।

सुंदर चारु सिंघासन ऊपर, पधरावौ दंपति सुखदाई ॥
तर मेवा ईखादि समर्पन, धरौ सँवारि सुमधुर मिठाई ।
चारि जाम की चारि आरती, भोग लगाय करौ मन भाई ॥
सीतकाल को सकल सौंज सजि, नव दुकूल आदिक समुदाई ।
करि तयार आगैं धरि राखौ, या दिन की यह रीति सदाई ॥
निसि जागौ गावौ अनुरागौ, विविध भाँति बाजित्र बजाई ।
रूपरसिक प्रभु कौं प्रसंन करि, पावौ मन वंछित फल माई ॥

राग कालिंगरौ (२८०)

जागौ जागौ हो जगनाथ जी ।
बैठौ आनि सिंघासन ऊपर, प्रान प्रिया लियें साथ जी ॥
तुम जागें जागैं सब ही जग, गावत गुनी गुन गाथ जी ।
उर आनंद भये सब ही जन, पांन करां पद पाथ जी ॥
जथासक्ति सचि राखी हैं सब, सौंज आपनैं हाथ जी ।
रूपरसिक प्रभु निद्रा तजिये, सेवक होय सनाथ जी ॥

पद (२८१)

भलें जागे हो जगदीस जी ।
सकल लोक दुख सोक विभंजन, चरन नमावैं सीस जी ॥
सोयें तें सोवैं सब ही जग, जागें जगें तेतीस जी ।
रूपरसिक प्रभु अखिल विश्व के, परम प्रकासिक ईस जी ॥

राग विहागरौ (२८२)

करत आरती थार सँजोय ।
बहु विधि भोग लगाय जुगल कौं, हिय में अति आंनंदित होय ॥
तैसिय दीपनि की दिवि दीपनि, जगमग जगति सकल दिस सोय ।
रूपरसिक अद्भुत छवि निरखति तन मन में सुधि रही न कोय ॥

तुलसीविवाहोत्सव

राग मारू (२८३)

बनी तुलसी गोपाल जू की व्याह विविधि रसाल। त्रिभुवन में भयौ महा मंगल तिहिंकाल॥ ब्रह्मादिक आये मुनि वृंदारक वृंद। चढ़ि विमान वनितनि जुत उचरत जय छंद॥ भई भीर नगर वीथी वन मांहि। मुदितमन सुर सुर-तिय फिरत ठांहि॥ बाजा बहु बजत गजत मांनहुं घन घोर। सत्य लोक लों सुदेस बढ़्यो सबद सोर॥ गावति सुर तिया विमल मंजुल कलगांन। मंडप-रचि चौंरी मधि वेदी विधि विधांन॥ जथा जोग्य रीति सों रचायौ विधि व्याह। भांवरि फिराये दोउ दुलहिनी दुलाह॥ अद्भुत भूमंडल में भयौ जै जै कार। रूपरसिक निरखि सोभा पायौ सुख सार॥

श्रीराधा-कृष्णविवाहोत्सव

राग बिलावल (२८४)

श्रीराधाकृष्ण विवाह की, लीला अति अलवेलि।
रचन सुमन अनुसारनी, आईं सकल सहेलि॥

मन अनुसारनि सकल सहेली। पिय प्यारी हित वित की बेली॥
नित प्रति नवल नेह रस-रेली। रिझवति लालहिं करि कल केली।
कलकेलि करि रिझवति जु लालहिं बाल अति आनँदभरी।
दोउ दिपत दिनहिं दुलाह तद्यपि व्याह की विधि विस्तरी॥
बैठाय वांन विधांन करि वर सोधि महूरत सुभ घरी।
वर स्वयंवर की रुचि रचना रची विधु कत सहचरी॥

प्रथमहिं अँग उवटि अन्हाये। पोंछि सहांनें पट पहराये॥
रंजन अंजन नैंन अँजाये। मंजुल मोरी मोर बनाये॥

जु बनाये मोरी मोर मंजुल, तिलक रचि रोरी दिये।
अति अमल अंग उद्योत कर, आभरन आभूषित किये॥
जुव जुगल जोर किसोर मूरति, साज सजि सिधि करि लिये।
दृग देखि छवि तृण तोरि सहचरि, सबहिं निज सिरयें हिये॥
फूलन मंडप कुंज छवायौ। धरि मंगल घट खंभ रुपायौ॥
मणिमय चारु चौक पुरवायौ। अति विचित्र सुंदर मन भायौ॥
मन भायौ अति सुंदर सुहायौ, गायौ मंगल गोरियाँ।
बहु विविधि बाजे बजे चहूँ दिसि, गाजे ज्यो घन घोरियाँ॥
अलि फिरति अहली महलि फूली, टहलि टोरन टोरियाँ।
रम रम झमावत चरन भूपर धरति, अति रति बोरियाँ॥
विधि सों चौंरी चारु रचाई। जा मधि वेदी सुभग सचाई॥
अति पवित्र मृदु गदी बिछाई। तापर वर–जोरी पधराई॥
पधराय जोरी स्यांम गोरी, सकल सोभा सुख सनी।
कछु कहत बनत न बैंन मुखतें, अखिल ओक सु अधिपनी॥
सम होंन कों तिहुँ भोंन में अस कोंन उपमा विधि ठनी।
रति कांम अरु न दामिनी की कलाहू कोटिक हनी॥
एक पुरोहित ह्वै अलि आई। व्याह विधोकति विधि बनवाई॥
गणपति कुलदेवी पुजवाई। पुनि नवग्रह पूजा करवाई॥
करवाय पूजा नव सु ग्रह, कर डोरनां धारन करे।
आचार्य्य करि पुनि बाँधि रक्षा, स्थंभ पूजा अनुसरे॥
करि जुगल गठ जोरो सु पुनि कर ग्रहन अँग रँग में ररे।
पुनि पूजि पावक फिरे फेरा, मिथुन तन मन मुद भरे॥
गोत्राचार कियौ मन भायौ। ता पाछै गोदांन दिवायौ॥
मागध वंदी नेग चुकायौ। जूवा खेल जुगहिं खिलवायौ॥

खिलवायौ खेलि सु जुवा, जुगलहि जीती दुलहिनि लाड़िली ।
दियो हार पिय गर डारि सहचरि, हंसी हितचित चाड़िली ॥
पुनि लाय जो मन भाय जो जो दाय जो दै रस-रली ।
पहिरावनी पहिराय अति सुखपाय हरषी सब अली ॥
डोरन छोर कियो सुखकारी । दुग्धभात की विधि विसतारी ॥
अरस परस जेंवत पिय प्यारी । मुदभरि सहचरि गावत गारी ॥
गारी गावत सहचरी मुदभरी अंग न मांवही ।
अचवाय जल मुख वास बीरी, रोरि तिलक रचांवही ॥
करि आरत्यो तृण तोरि अलि, बलि निरखि नैंन सिरांवही ।
यह सदा सुभ सौभाग्य कौ, सुख कहत मुख नहिं आंवही ॥
अरस परस मिलि अति रस रह्यो । सो सुख कापै जात है कह्यौ ॥
मन जानें कें नैंननि चह्यौ । श्रीहरिव्यास कृपा करि लह्यौ ॥
लह्यौ कृपा श्रीहरिव्यास की करि सुलभ तें सुल्लभ सोई ।
जो हैं व जन प्रतिकूल जिनकौं, दरस सुपनें हुँ न होई ॥
निति रूपरसिक निहारहीं जिनकें न बंधन जग कोई ।
तिन सुरस जुगल स्वरूप सरिता, माहिं निज मति लै मोई ॥

महल मंगलोत्सव

राग विलावल (२८५)

रंगरँगीली हितु हरिप्रिया अली अलवेलि ।
रंगमहल में रची मिलि, रंगरँगीली केलि ॥
पद–रंगमहल में मंगल माई । रंगरँगीली रहसि रचाई ॥
रंगरँगीली हितू सहेली । श्रीहरिप्रिया अली अलवेली ॥
अलवेलि हितू सहचरी, श्रीहरिप्रिया हेत सों ।
नवनित्य सुख सेवें सदा, अनुराग जुत चित चेत सों ॥

धनि धन्य धन्य हैं भाग जिनको, जे रँगी या रंग सों।
अनुदिन जु प्रीतम प्यारी जैसैं, न्यारी होत न संग सों॥
सुख आसन दम्पति बैठाये। भाँति भाँति के लाड़ लड़ाये॥
वर उर सों उरजन अरवाये। निपट निशंक अंक भरवाये॥
अब अंक भरवाये निसंकें निपट नवलें नेह सों।
उर उमगि अति अनुराग उमहत चहत एकत देह सों॥
मुख कहत नांहिन बनैं मोपैं, इनिके सहज सुभाय ये।
ए एकही द्वै द्वै जु एक हीं, वैस वरन बनाय ये॥
बहु लाखन अभिलाष पुराये। भये भांवतिन मन के भाये॥
नवल कमलदल सेज बिछाई। विहरत जहाँ रही छवि छाई॥
जहाँ रही अति छवि छाय छवि सों वरन विहारनि विलसहीं।
दोउ प्रथम संग अनंग उन्मत पिलहिं खिलि हिलि मिलिसहीं॥
भृकुटिन जु भंग तरंग तमकनि रमक झमकनि मन हरे।
लच लचनि लंक विरचनि रतिरस चनिस सहरनन करें॥
गरव रोष हूंकारहिं होलें। विच-विच मधुर-मधुर मुख बोलें॥
मधुर-मधुर सुर किंकिनि वाजें। चरनाभरन करन सुख साजें॥
सुख साजें चरन सु करन वर आभरन अनूपम सुरनि के।
धुनि अति सुहावनि श्रवन सुनि तन मन न होत विछरनि के॥
मिलि रहे हैं मिलि रहेंगे मिलि रहे हैं दिन दिन दोऊ।
निज सहचरी की कृपा-विनि, कैसें कहौ समुझैं कोऊ॥
अलक छुटी उर पर अरवरहीं। मुक्तालर तूटी लरवरहीं॥
जुरे जोर जुग हारि न मांनें। पीपी मधुर सुधा रस पांनें॥
मधु सुधारस पांनें हिं पी-पी जुरे जुगल विहार में।
हिय हारि मांनि न रहें कोऊ, रहे ढरि इहिं ढार में॥

महामते मदन मनोज मौजनि चौंज चौगुनि चित्त में ।
हठ सों न हठते हौं न जांनों, कौंन घट ते वित्त में ॥
श्रम बन कनें वदन तन वनें । लखि सन सनें रखिये मन मनें ॥
यह सुख परम सार को सारा । अह सुख अति दुर्ल्लभ संसारा ॥
अति दुर्ल्लभ हैं संसार यह सुख लहैं को जोई लहैं ।
निज नवलवासा सहचरी की, दीन दया जिनि पर रहैं ॥
बलि रूपरसिक अनूप सोभा, निरखि नैंन सिराय हों ।
अब मया मो पर मांनि हों, जो या प्रसादहिं पाय हों ॥

व्यञ्जनद्वादशी उत्सव

राग सारंग (२८६)

बिंजनद्वादसी दिन आज ।
बिंजन बिविध बनावौ रचिपचि प्रभु आरोहन काज ॥
षट्रस लेह्य चोष्य भक्षि भोजन, छपन छतीसों साज ।
अति रुचि सों जेंवैं ज्यों दोऊ, लै सँग सखी समाज ॥
या उत्सव को बड़ो महातम, वरन्यो है रिषिराज ।
रूपरसिक जन अगहन में जिनि बाँधी है पन पाज ॥

पद (२८७)

सुनि सहचरि अति प्रमुदित होई ।
करी सँवारि रसोई जवहीं, परम विचच्छनि जोई ॥
परसी सरसी सकल सौंज सजि उर आनंद समोई ।
रूपरसिक आरोगत दंपति, सब सुख संपति सोई ॥

पद (२८८)

आरोगत व्यंजन दोउ रुचिकर सखिन सहित अतिहिं आनँद भरि ।
चखत चखावत जात परसपर, पुलकि न मावत गात प्रिया हरि ॥

नवल जुगलवर जिय की अटकरि, फिरि पुरसावति चुरुमनि सहचरि।
रूपरसिक रस रह चटि में ररि, छकि रहि जीवति छवि हिय में धरि॥

पद (२८६)

जैंवत जुगलकिसोर किसोरी।
हँसत जात कहि बात परसपर, अति रति रस में बोरी॥
और लेहु बलिजाऊँ तनक तौ सहचरि करत निहोरी।
रूपरसिक यह सोभा निरखत डारत हैं तृन तोरी॥

राग सारंग (२६०) (सिद्धान्त पद)

प्रभु कौ जनम करम अविकार।
ताहि कहत कोउ मायाकृति हैं, ताकौ धरम धिकार॥
जो प्रभु यह लीला नहिं करते, होतो क्यों निसतार।
रूपरसिक जन कें हित कारन, विभु कीनों विसतार॥

॥ इति बृहदोत्सव मणिमाल पूर्वार्द्ध ॥

अथ--

श्री वृहद् उत्सव मणिमाल

उत्तरार्द्ध

श्रीरामजन्मोत्सव

राग काफी (१)

आज सुमंगल साज सदन महाराज कें।
रह्यौ छाय सुख आय सकल सिरताज कें॥
घर घर तें नरनारि निकट वर वेस के।
जुरि आये दरबार दौरि सब देस के॥१॥
जगर मगर वर नगर बगर छवि छाजहीं।
इन्द्र कुबेर दुबेर करैं तौउ लाजहीं॥२॥
भई भीर अधिकात सुजात न है कढ्यौ।
श्रवन परी सुनियें न कुलाहल अति बढ्यौ॥३॥
वृंदारक वर वृंद मगन मन डोलहीं।
चढि विवांन बनितान सहित जय बोलहीं॥४॥
विचि विचि मागध सूत भाट विरदांवहीं।
अनजनमां कौ जांनि जनम जस गांवहीं॥५॥
बोहो विधि बाजे बजैं गजैं घन ज्यों घनें।
आनक दुंदुभि भनक भेरि कहि कों भनें॥६॥
गावति कांमनि दांमनि सी दुति देहकी।
रावर में रस चाव भरी नवनेह की॥७॥
मुनि वशिष्ट दै आदि तपोधन जे जिते।

नृप सनमांन जु लाय बुलाय लिये तिते ॥८॥
जात करम कौ धरम सु परम पुनीत जो।
करवावति रिषराय विधोकति रीति सो ॥९॥
त्रिविध दांन सनमांन जोग्य जिहि जो जथा।
देत भये दशरथ सकै कहि को कथा ॥१०॥
दये कोस मुकलाय रतन मनि माल के।
भये अजाचिक जाचिक जो जिहिं काल के ॥११॥
लेहु लेहु सब कहैं न हैं कोउ लेंन कों।
अनगन दाता रूप लगे धन देंन कों ॥१२॥
पुलकि परस्पर प्रेम नेम निरवारि कें।
निर्त्य करत नरनारि अपनपौ वारि कें ॥१३॥
जो सुख भयौ अवधेस के वेस में महा।
भयौ न आगैं होंहिं अबै कहियै कहा ॥१४॥
उपमां कों अवलोकि रह्यौ चकि चित्त में।
भवन चतुर्दश कवन कवन या वित्त में ॥१५॥
अखिल अंड आधीस अवधि मधि आय कें।
भक्तन हित अवतार भयो मन भाय कें ॥१६॥
निगमागम कौ सार स्वयं भू जो कह्यौ।
परम इष्ट की निज सुदिष्ट तें सो लह्यौ ॥१७॥
राम जन्म आनंद उदधि में जो न्हये।
तिनके तन मन अमल कमल से हो गये ॥१८॥
त्रिविधि ताप की ताप तिन्हें तनक न लगें।
रूपरसिक रस रत सदा जग में जगें ॥

राग परज (२)

प्रगटे राम रघुकुल मंडन ।
कौसल्या की कूखि कल्पतरु सुखदायक दुख खंडन ॥
भक्तन की रक्षचा कैं कारन दुष्टन के दल दंडन ।
रूपरसिक जन प्रान जीवन-धन तनमन ताप विहंडन ॥

पद (३)

आज वधाई परम सुहाई ।
प्रगटे श्री महाराज कुँवर वर सकल लोक सुखदाई ॥
घर घर बंदनमाल साथिया मोतियन चौक पुराई ।
नांचत गावत करत कुलाहल मिलि सब लोग लुगाई ॥
आंनंद सिंधु बढ्यौ निज पुर में फूले अंग न माई ।
रूपरसिक रसिकन की संपति मनवंछित दरसाई ॥

पद (४)

बजत वधाई आज भली री ।
महारानी की कूंखि सिरांनी आनंद बेलि फली री ॥
प्रगटें लाल मनोहर मूरति रसिकन रंगरली री ।
परमधांम की संपति सजनी अवनी आंनि ढली री ॥
धनि धनि मंगल मंगल दिन एहि धनि नौमी नवली री ।
रूपरसिक जनहित ऐसी निधि आई अवधि अली री ॥

राग आसावरी (५)

आज राज दशरथ कें मंदिर मंगल भीर विराजै री ।
सुरविमांन बनितांनि सहित चढि आये मंगल साजै री ॥
इंद्र कुबेर बरुण धर्मादिक अति अपार छवि छाजै री ।
एक एक को तेज निहारत सकल अमंगल भाजै री ॥

ब्रह्मादिक सनकादिक आये सारद संग समाजै री।
सिव नारद आये मन भाये पुरवन मन के काजै री॥
मागध सूत भाट बंदीजन विरदावैं दरवाजै री।
अति सुहावते सुर टकोरसों झनझां नौवति बाजै री॥
गावत गीत पुनीत कांमिनी कल कोकिल कल गाजैं री।
उर आंनंद उदधि यों उमगी नाचत नैंक न लाजै री॥
प्रगट भये श्रीरांम स्यांम अभिरांम कुँवर सिरताजै री।
आजि अवधिकी यह विभूति लखि उपमा कहत पराजैरी॥
पूत कहा परमेसुर ही कौउ आये अवतरि आजै री।
रूपरसिक जन जानि आपने जुग जुग सदा निवाजै री॥

राग बिहागरो (७)

नेति नेति वेद जाकों अगम उचरि कहै,
खेदहूँ किये तें जाकौ भेद नहिं लेपियैं।
सिव हू समाधि कै अराधि कै न लाधि सकै,
अति ही अगाधि हित साधि अवरेपियैं॥
रसिक जनन जिय जीवनि अचल यहै,
जुगल सुरूप निजधांम जहाँ पेपियैं।
जपत हैं जाहि कर माला लै लै रमावाला,
सोई लाला नृप जू तिहारें ग्रह देपियैं॥

पद (८)

आज राज दसरथ जू सौ बड़ भागी कौन,
जाके ग्रह प्रगट्यौ है पूत परमेस आय।
धन्य धनि चैतमास नौमी उजियारी यह,
धन्य हैं अवधिपुरी धन्य कौसल्या माय॥

मंगल ही मंगल छयो है छित मंडल में,
गयो है अमंगल सब दिस तें कहूँ विलाय।
रसिक सुरूप मनवंछित सुफल दाय,
भक्तन कें भाय वपु धारयो है जु विस्वकाय॥

दोहा—प्रथम सुमिरि श्रीगुरु चरन, जिहिं बल लहे जू भेव।*
श्रीरघुवर वंसावली, बरनत हौं सुनि लेव॥

छप्पय—नारायन तें कमल कमल तें ब्रह्मा भनियें,
ब्रह्मा तें जु मरीच मरीच कें कस्यप गनियें।
कस्यप कें विवस्वांन तासकें वैवश्वत गुनि,
वैवश्वत कें भये नृपति इक्ष्वाक नाम सुनि॥
सुत विकुक्षि इक्ष्वाक कें ताकें भये कुकस्थ सुव।
सो सहाय सुरपति कियौ महिमा जानत सकल भुव॥१॥
याकें भये अनेन अनेन कें पृथु जु उदारा,
पृथुकें विश्वकरंधि तास कें चंद्रकुमारा।
चंद्र नृपति कें युवनाश्व याकें सावस्ती,
सावस्ती कें वृहदश्व सुखदियण समस्ती।
वृहदश्व कें सुतभये कुवलयाश्व दृढयाश्व जिहिं।
धर्मरीति मर्याद करि मानत प्रजा प्रजेश तिंहिं॥२॥
दृढयाश्व कें पुत्र भये हरियश्व सुहाये,
हरियश्व कें सुत निकुंभ सबकें मनभाये।
भये निकुंभ कें सुगुण धांम तिंहिं नाम कृसाश्वहि,
भये कृसाश्व कें सेनजिति जाके युवनाश्वहि॥

---

* श्रीब्रह्माजी, सनकादिक, नारद, शिव आदि के आगमन के पद पृष्ठ ७१–७६ में आ चुके हैं कहीं कहीं कोई कोई शब्दों का ही हेर फेर है, अतः वे पद यहां नहीं दिये गये हैं।

युवनाश्व कें सुत भये मांधाता तिंहिं नाम जू।
तिन के सुत पुरुकुत्स जू पुरवन सब के कांम जू ॥३॥

पुरुकुत्स कें तृसदस्यु ताकें अनुरन्य जू,
अनुरन्य जू कें हरियश्व जग में बडगन्य जू।
हरियश्व कें भये अरुन्य याकें जु तृवंधन,
तृवंधन के सुत त्रिसंक जांनत सब ही जन ॥

भये तृसंक कें सुवन तिंहिं नांम धरयौ हरिचंद जू।
सब कों सीतल दृष्टि करि देत महा आनंद जू ॥४॥

हरिश्चन्द कें पुत्र भये तिंहिं नाम जु रोहित,
याकें सुत भये हरित हरित कें चंपचारुचित।
भये चंपकें सुत सुदेव जाकें जु विजय गुनि,
भये विजय कें भरुक भरुक कें वृकवृक कें सुनि ॥

महावीर वाहुक भये जाकें सगर सुजांन जू।
अव लों जाके सुजस कौ तनि रह्यौ जक्त वितांन जू ॥५॥

भये सगर के असमंजस याकें अंशुमान जू,
अंशुमान कें दिलीप तास भागीरथ जान जू।
भागीरथ कें पुत्र भये श्रुत जक्त उजागर,
श्रुत कें सुत भये नाभ नाभ कें सिंधु द्वीपवर ॥

सिंधुद्वीप कें सुत भये अयतायु रितुपर्ण तिंहिं।
सर्व कांम सुत जासकें नांम जथा गुन धरयौ जिहि ॥६॥

सर्व कांम कें भयें सुदास याकें जु मित्रसह,
मित्रसह जु कें अस्मक सुत अस्मक कें मूलह।
मूलह कें दसरथ्थ तास कें ऐडविड सुत,
ऐडविड कें विश्वसहास सब सोभा संजुत ॥

विश्वसहास कें सुत भये नृप खट्वांग उदार जू।
ताके सुजस बखांन कौं पावैं को कवि पार जू ॥७॥

भये खट्वांग कें दीर्घबाहु याकें रघु कहियें,
सकल विश्व विख्यात बात जाकी अवगहियें।
जा रघुकें अजराज भये महाराजधिराजा,
ताकें श्रीदसरथ संवारन सब के काजा॥

इनकें पूरनब्रह्म श्रीरांम आंनि अब अवतरे।
अंसन जुत आंनंदघन रसिकन मनवांछित करे ॥८॥

सकल लोक सुखरूप भूप तेरें ग्रह आये,
हरन भूमि कौ भार करन भक्तन मनभाये।
सेस महेस मुख जपें जाहि तौउ पार न पावैं,
सिव विधि साधि समाधि चरनजिहिं चित्त लगावैं॥

सो सुत करि पायौ व तिहि गायौ वेद पुरांन जू।
श्रीदसरथ महाराज कें कोहें आज समांन जू ॥९॥

तुव प्रताप अठसिद्धि नऊँनिधि मेरें सब कछु,
ऐसौ देहु जु दियो दियौ में जांनौं अब कछु।
बौहौत बरस लौं मैं जप तप करि देव मनायौ,
तब यह क्यौं हूँ कह्यौ आज अवसर अधिकायौ॥

रूपरसिक माँगत यहैं श्रीदसरथ दातार जू।
नित्य निकट निरखत रहौं कुलमणि राजकुमार जू ॥१०॥

दो०—श्रीरघुवर बंसावली, पढ़ें सुनैं चितलाय।
रूपरसिक जिनकें सदा, सुख संपति सरसाय॥

परिशिष्ट

वे मैं वारनें जांवां।

रांनी कवसल्या सुत जायौ भले भाग मनांवां॥
निरखि निरखि ऐसी खुस वखती हरखि हरखि गुन गांवां।
करि आनंद समाज दसरथ महाराजधिराज रिझांवां॥

भूमका—यह मनवंछित आई, सादी परम सुहाई।
प्रगटे श्रीरघुराई, सब दिल आस पुराई॥
जनम जनम दी उनतां भगी मनदी आस पुरांवां।
होय निहाल लाल दे ऊपर तनमन खोलि घुमांवां॥१॥

यह चिरजीवो लाला, सुन्दर परम कृपाला।
गुनिजन भये निहाला, धन्य मनावत ताला॥
दिल दी रली फली यह औसर अंग उमंगन मांवां।
हय गय मुक्ता जरी जवाहिर पूर वधाई पांवां॥२॥

जाचन आये जेते, भये अजाचिक ते-ते।
विभव वधाई लेते, इंद्र कुवेर भये ते॥
विधनां करी घरी यह अद्भुत अभरी होय विरदांवां।
दास विहारनि वरपुरदार सदा दरवार रहांवां॥३॥

असीसां उचरैंजी, अति आनंद भरैं।
कुंवर सुदरस करैंजी, साधा सबै सरैंजी॥

आज दिल वंछित सादी आई।
कुल मंडन गुनरूप अनूपम प्रगटे श्रीरघुराई॥
भये अजाचिक जाचिकजन सब उनतां रहन न पाई।
दे दे जात असीस उमंग अति लै लै जात वधाई॥५॥

झूमका–जुग जुग बरखुरदार लला, दसरथ प्रांन अधारलला।
प्रगटे बषत बिलंद लला, अद्भुत आनंदकंद लला॥
परमप्रभा के धांम लला, सब पुरजन बिश्रांम लला।
पूरन अघट प्रताप लला, जसरस बिरद अमाप लाल॥
फूले श्रीमहाराज बिराजे बरनि न जात निकाई।
वंदीजन बिरदावत गावत श्रीरघुबंस बडाई॥६॥

श्रीरघुवंश प्रकास लला, सब जग अघट उजास लला।
जनमत किये निहाल लला, जुग-जुग प्रतिपाल लला॥
दसरथ नंदन नांम लला, सब जगवंदन नांम लला।
इन सम नांहिन और लला, सबहिन के सिरमौर लला॥
अवधि सुमंगल चाव जहाँतहाँ, सबल भीर सरसाई।
मंगन जूथ कुवेर इंद्र सम, नृत्तत मोद महाई॥७॥

मोद बढावन सरस लला, सब मन भावन दरस लला।
सरबोपरि गुन खांनि लला, दुर्ल्लभ मंगलदानि लला॥
बोपति क्रांति उदार लला, बौहौ लीला बिस्तार लला।
सब जग जीव जिवार लला, श्रीमहाराज कुंवार लला॥
अभरी भये लये धन बंछित, यह मांगा उमगाई।
बसौं अवधिपुर दासविहारी, पावों दरस सदाई॥८॥

नितिप्रति दरसन पांउ लला, नितिप्रति बलिबलि जांउ लला।
नितिप्रति उर उमगांउ लला, नितिप्रति लीला गांउ लला॥
नितिप्रति बिरद बढांउ लला, नितिप्रति हरषि रिझांउ लला।
नितिप्रति निकट रहांउलला, नितिप्रतिदास कहांउ लला॥६॥

पद (१०)

आंनंद अवधि वधाई आज ।
प्रगटे रघुवर कुमर मुकुटमनि धरम धुरंधरपाज ॥
धनि दिन धनि कवसल्या दसरथ वडभागी सिरताज ।
हय गय ग्रांम द्रव्य भर वरषत महारांनी महाराज ॥१॥
वजत निसांन विधांन गांन त्रिय सव सरसांन समाज ।
सदन सदन वर वंदनमाला साथीया तोरन साज ॥२॥
निरमल मंगल डंवर छायो अद्भुत हरष अवाज ।
सव वंछित भये दासविहारी, सुंदर रूप सकाज ॥३॥

श्रीजानकी जू कौ जन्म उत्सव

कवित्त-राग विहागरौ

माधौ सित पक्ष नौमी तिथि कुजवार,
मध्यदिन समैं प्रगटी श्रीसीता सुखकी निधांन ।
सतानंद आदि मुनि मंगल मुदित महा,
सीरध्वज मंदिर में भीर कौ न है प्रमांन ॥
जै जै रव भयौ छयौ मारतंड मंडल में,
वढि ब्रहमंड चढिगयौ कढि आसमांन ।
रसिकरूप कहै आज या अवनि पर,
नांहिंन सुन्यौ है कहूँ भूपति सौ भागवांन ॥१॥

गऊलोक वासनी विलासनी परम व्योंम,
जाकी पद नख आभा रही विश्वपूरि सव ।
जाकें नांम लेत सन होत है प्रसंन मन,
हियें सियरात अरु जात दुख दूरि सव ॥

सनतकुमार सेस सारद सुरेस व्यास,
वाल्मीक भजि भाग मांनत हैं भूरि सब।
सोई आय राय तेरें निलय निवास कियौ,
चाहत हैं जाके पद-पंकज की धूरि सब ॥२॥

इच्छा बपु धारि कें बिहार बैकुंठ रमें,
रमानाथ साथ सोई गाथ कहि देत में।
कादिक न पावैं जाकौ आदिअंत,
बस ह्वै कैं बलि कौं बहुत रहत निति सेत में॥
रसिक जनन जिय जीवनि जुग रूप,
भूपति कें भौंन अवतार कह्यौ हेत में।
कहाँ लौं बखानौं तेरे भाग की बडाई राई,
नेति कहि गाई जोई आई तो निकेत में ॥३॥

निगम न अगम बतायौ जाकौ मरम,
सुपरम परैं तें परैं बरनत सेस जू।
सकल चराचर जाहि तें प्रगट होत,
असत सतादि सह जाकौ अनुलेस जू॥
जांनत हैं जाकों रूपरसिक सुजांन जन,
जिनकैं हैं यैही धन सर्व सुदेस जू।
सुकृत समाज कौ सुफल मनभायौ आज,
पायौ अधिकायौ माहाराज मिथुलेस जू ॥४॥

राग काफी (५)

श्री मिथुलाधिप कैं धांम आज बधांवनों।
अब पुरवन मन कौ कांम आज बधांवनों॥

शुक्ल पक्ष नौमी कुजवासर पुष्य ऋक्ष मध्यांह्न।
जनम लियो श्रीजानकी जगमंगल रूप निधांन ॥१॥
महाराज जनकेस जू सौ जग में आज न कोय।
नित्य विहारनि लाडिली जाकें प्रगटी कन्या होय ॥२॥
सिव विरंचि सनकादिक सुक नारद सारद सेस।
सुरपति गनपति जाहि जपि पावत पद परमेस ॥३॥
निगम नेति कहि देति हैं जिहिं लहत नहीं तिहिं भेव।
सो स्यामां सरवेश्वरी इनि पाई करि सुचि सेव ॥४॥
अनंत कोटि ब्रहमांड अरु बयकुंठरु गोलोक।
जाकी सहज विभूति करि ये ओपत हैं सब ओक ॥५॥
महारानी की मानियें किधौं कृच्छ कलपतरु रूप।
मनवंछित फल दैंन कों भलें ल्याये भूपर भूप ॥६॥
दगर दगर में देखियें माहा जगर-मगर सी होति ।
अमर समर पुर की कहा जो जनक नगर में जोति ॥७॥
चढि विमांन दिवि देवता जै जै कहि बरषहिं फूल।
भल आयौ दिन आज कौ यह मंगल मंगल मूल ॥८॥
जो सुख भयो अवधेस कें मधु नौमी निरमल पाष।
ताहू तें यह आगरौ बौहौ आयौ वर वैसाष ॥९॥
बहु विधि बाजनें बाजहीं बर दुंदुभी भेरि निसांन।
सब्द दिसा विदिसांनि में सुनियें न परी कहुँ कांन ॥१०॥
भये मगन मन प्रेम में पुरजन गन सुधि न सरीर।
नांचत गावत ओपई भई भूप भवन में भीर ॥११॥
अति बरषा भई रंग की ररिराय आँगन कें बीच।
अठसिद्धि नवनिधि देत हैं पुरजन पदतर की कीच ॥१२॥

नारद नृप सों कहि गये हे आगम अगम जनाय।
सोई साँची है भई री कुँवरि जनम लियो आय ॥१३॥
फली रली मन की सबै भई भली भूप कै भाग।
टली विथा उर की सबै लहि लली चरन अनुराग ॥१४॥
बरनत हैं विधि वेद में यह बचन जू विश्वा बीस।
भक्तिभाव जन जो भजै, जाकी आस पुजावैं ईस ॥१५॥
सुनत जु आये आदि तें यह बात विदत संसार।
रूप-रसिक जन हेत तें हरि लेत अमित अवतार ॥१६॥

राग सारंग (६)

आज मिथुला मंगल माई री।
सकल लोक की स्वामिनि सो महारांनी कन्या जाई री॥
जै जै कार जनक मंदिर में भई भीर अधिकाई री।
कोऊ गावत गुन कोउ विरदावत बाजा विविधि बजाई री॥१॥
उमँग्यो उर महाराज देत हैं मनवंछित जु बधाई री।
कोउ ऊनों न रह्यो इहिं औसर सब की आस पुराई री॥२॥
सतानंद आदि मुनि मिलि सब वेद विमल धुनि छाई री।
अति आनंद उदधि में झूलत फूले लोग लुगाई री॥३॥
जनम लियो जानकी किधौं सब सुख की सरित बहाई री।
रूप-रसिक जन कैं हितकारन लीला ललित बनाई री॥४॥

राग सोरठ (७)

मिथलापुर बजत बधाई हो।
चन्द्रभगा महारानी धनि जिनि कुलमनि कन्या जाई हो॥
पुरजन सकल प्रेम उर पुरि पुरि आये अति छवि छाई हो।
भूप भवन में भई भीर सुनि सोभा लगत सुहाई हो॥१॥

धाँम धाँम प्रति धुजा पताका कोंरनि केलि रुपाई हो।
कंचन कलस सँवारि साथिया बंदनमाल बनाई हो ॥२॥
द्विजवर विधि सौं करत वेद धुनि उमँगि भरे अधिकाई हो।
जात करम को धरम परम सो करवावत रिषि राई हो॥३॥
मागद सूत भाट बंदीजन विरदावत समुदाई हों।
बाजदार बाजंत्र बजावत जनु घन घोर मचाई हों ॥४॥
गावत गीत पुनीत जनम के मंगल मोद बढाई हो।
अति आनंद उछाह उदधि में निगमन लोग लुगाई हो॥५॥
बरनी जात न आज बदन तें भूपति भाग बडाई हो।
रूप-रसिक की स्वामिनि प्रगटी सकल लोक सुखदाई हो॥६॥

वंशावली

दोहा—अब बंसावलि कुंवरि की सुनहु सुचित महाराज।
बरनि सुनाऊँ जथामति हूँ आयौ जिहि काज॥

कवित्त

नारायन नाभि तें कमल तातें विधि भयो,
विधि तें मरीच तातें कस्यप बषानियें,
कस्यप तें विवस्वान् वैवस्वत तातें भये,
ताको एक दूजो नाम श्राद्धदेव जांनियें।
नृपति इक्ष्वाक याकें महाराज निमि भये,
निमि कें श्री जनक विदे मन मांनियें,
मैथुल हू नाम अभिराम जाकौ जानौं,
पुनि ताकौ गुन गान लें उरानन में गांनियें ॥१॥
सोई नृप जनक विदेह जाकें उदावसु,
उदावसु सुव नंदिवर्द्धन विसेषियें,

भये हैं सुकेत नंदिवर्द्धन कें जाकें सुव,
देवरात जाकी बात देवन में देषियें ॥
देवरात जू कें सुव भये बृहद्रथ जाकें,
महावीर्य ताकें सुव सुधृति सुलेषियें।
सुधृति कें धृष्टकेत हरियश्व याकें सुव,
हरियश्व जू कें मरुदेवपुत्र पेषियें ॥२॥

मरुदेव जू कें प्रतिरथ कृतरथ ताकें,
कृतरथ जू कें देवमीढ महाराज जू।
देवमीढ जू कें सुत विस्रत वषांनियें व,
विस्रत कें महाधृति धर्म की जिहाज जू ॥
महाधृति जू कें कृतरात कृतरात जू कें,
महारोम सारे जिहिं सव जग काज जू।
महारोम जू कें सुव भये हैं सुवर्ण रोम,
सोम सौ प्रकास जाकौ रह्यौ छित छाज जू ॥३॥

भये हैं सुवर्णरोम जू कें ह्रस्वरोम सुव,
जाकें सीरध्वज अति ओपत अपार जू।
नित्य निजधांम अभिरांम की निवासिनी सो,
जाके आसपदु आय लीयौ अवतार जू ॥
कोटिसुत जाये किंहिं कांम या कुंवरि आगे,
या के गुनगांनत हीं लागैं बहुवार जू।
जन हित करिवे कों जस विसतरिवे कों,
भुव भार हरिवे कों विसद विहार जू ॥४॥

जांनी नहीं जाय जाकी महिमां महाई जोव–
जाई जिहिं जांनकी या जीवनि जिहांन की।
आज तो तिहारे ऐंन कें समांन हैं न कोऊ,
तृभुवन में न दैंन ओप उपमान की॥
जो पै महाराज मन मेरें मनमांन की है,
तो पै मोहि दीजिये वधाई मनमांन की।
रसिक सरूप ह्वै कैं रहों निसदिनां तेरें,
नाहिनें है इच्छया मेरें आन कामनांन की॥५॥
निमि वंश नारायण अव लौं उचारि कह्यौ,
जाकौ विसतार वौ हौ रह्यौ विसतरि जू।
जेजे भये वड़े मेरे जाचिक जनक कुल,
तिन्हौं लिखि राख्यौ है लै पोथिन में भरि जू॥
सुनि कें सुमंगल में ध्यायो अति आतुर ह्वै,
गायो जस जेतौ तेतौ आयौ कंठ करि जू।
माहाराज आज मेरो काज मन वंछित,
सो पूरन करौगे अनुकंपा उर धरि जू॥६॥
मेरौ नांम मेरे पिता धरयौ है रसिकरूप,
सोई सत्य करिवे कौ समैं आज आयो है।
दरस दिखावौ तौव भली मोहि लली जू कौ,
रली मन होंहि यहै अभिलाष छायौ है॥
अपने जो जाचिक कौं अवधिनरेश जू हू,
गोद लाय लालन कौ मुख दिखरायौ है।
सोऊ यह विनती हमारी महाराज ह्र सौं,
गरीवनिवाज देहु नेहु नैग मनभायो है॥७॥

बोले महाराज लेहु नेग हैं तिहारे जोई,
और कछु लेहु जो तिहारे मनभाई है।
ऐसी निधि को है जो व आजि नहीं देऊँ तोहि,
भागन तिहारे ही तें विधिना बनाई है॥
चाहत हौं चित्त निति प्रीति उदोह एक,
तिन कौं जो दीवौ सो सदाई सुखदाई है।
गज लेहु ग्राम लेहु धन लेहु धाम लेहु,
अभरन अन्न आदि उनत न काई है॥८॥

माहाराज आज मेरें तेरेंई प्रताप करि,
सब कछू है पै एक यही अभिलाष जू।
सौउ लैं पुरायौ मन भायौ सरसालौ सुख,
श्रवन सुनायौ मोहि श्रीमुख संभाष जू॥
धन्य निमि बंस परसंस अवतंस मणि,
धन्य दिन घरी पल धन्य यह पाष जू।
चैत में सुचीत्यौ फल पायौ हौं सकल,
परि मेरे भूरि भाग भल आयौ वयसाष जू॥९॥

कलस

निति प्रति मंगल होउ निति प्रति में गाऊँ जस।
निति प्रति यह वैसाष सदा राजो मो वर अस॥
निति प्रति नेंन निहार लली सुख लहौं सदाई।
सादर सहित सुदेस नृपति मोहि देत वधाई॥
निति प्रति मिथुलापुर महाराजत रहौ महाराज जू।
रूपरसिक जन कौ सदा पुरवन वंछित काज जू॥

दोहा—यह वंसावलि कुंवरि की, सुने सुनावै कोय।
रूपरसिक जिन पर कृपा, सही कुंवरि की होय॥

पालनों

महाराज लली पलना महिं झूलत फूल जों मात झुलावति है।
गुन गावति जात सुधा सुर सों मन भावति कों दुलरावति है॥
चपि जोरि चितैं मुख ओरि रही ज्यों चकोरि हिं चंद सुहावति है।
वलि रूप निहारित वारत प्रांन प्रत्यंगन मोद समावति है॥

श्री नृसिंह-जन्म उच्छव

राग सारंग

प्रगटे माधव माधव मासा।
सुकल पच्छ चौदसि मधिवासुर करन असुर कौ नासा॥
पितु हरि विंदु मातु चंदासि, पुर मुलतान निवासा।
लियौ अवतार भक्तजन हित हरि धरि तन तेज प्रकासा॥
मंगलचार भयो रिषि मंदिर हिये अति भरे हुलासा।
सुनि आये सनकादि आदि मुनि बोलत जय मुख भासा॥
असुरन उर अपसुकन जनायो सुरन लह्यौ सुख-रासा।
ब्रह्मादिक सिव नारद आये करि दरसन की आसा॥
अमर तेज गुर दई आसिका सबकी बंधि खुलासा।
करौ हरौ दुख दीन बंधु हरि तिहरौ यहै तमासा॥
असुर हतन आंनी हिय में जब जांनी जिय जन-त्रासा।
विधि कौ वर उर में सुधि करि कैं कियो खंभ में बासा॥
नमो नमो भगवांन नमो नम नम अव्यय अविनासा।
रूपरसिक जन के हित कर्ता तुम तें को अधिकासा॥

पद

हिरनकसिपु पूछें प्रहलादहिं कहाँ तेरो गोपाल बताय ।
अब तेरे अंत समै में जो वह आयरु करैं सहाय ॥
मैं अब ही न्यारो करि डारौं सब देखत सिर तें यह काय ।
ऐसे पूत बिनां हीं ह्वै हों देहों पाँचों भूत मिलाय ॥१॥
आज अरे मेरे तप आगें कालबली हू जात पलाय ।
तू काकें बल रह्यौ भूलि खल मोसर में सों बैर बसाय ॥२॥
विष्णु विचारो दिन काटत है, मेरें डर जल में रह्यौ जाय ।
सो तेरी रच्छा कहा करिहै परी कठिन आपुहि में आय ॥३॥
तें जान्यों न मूढमति मोकों सो अब तोकों देऊँ बताय ।
रूपरसिक निज कियो पाय है या में काको दोष दिखाय ॥४॥

पद

मेरो राखन हार न जान्यों ।
कहैं प्रहलाद सुनो असुराधिप पंडित जाहि प्रवांन्यों ॥
व्यापक है सब ठौर सदा जिहि विधिनां वेद बखांन्यों ।
तुम से भूलि रहत हैं कोई तिन को तन तम सांन्यों ॥१॥
वा बिन कोउ न कछू करि सकै योंही बकत अयांन्यों ।
रूपरसिक जन जांनत हैं जे जिन मन भर्महिं भांन्यों ॥२॥

पद

सुनि जो तू सब ठौर बतावै ।
तौ या खंभ मांहि क्यौं नां ही तोकों आय छुडावै ॥
यूं कहि दई मुष्टि खंभा कें दुष्ट कियौ किनि पावै ।
प्रगट भये नरहरि वपु धरि हरि न्याय निगम गुन गावै ॥१॥
फारि खंभ ललकारि लियो अरि हरि कें ढील खटावै ।
रूपरसिक जनकें हित जुग जुग ऐसेई रूप बनावै ॥२॥

पद

ऐसो को करै हो हरि जो करी जन काज।
धरयौ नरहरिरूप अति आश्चर्यमय महाराज॥
जांनि जिय निज जनहिं दुःखित फारि निकसे खंभ।
निरखि सुरनर असुर सब उर रहे पाय अचंभ॥१॥
मारि असुर पछारि उदर विदारि पहरि आँति।
अरिनदरि संदोह जद्यपि करत कोह न साँति॥२॥
रमा हू लखि रमन की कृति रही चकित होय।
आज लों यह रूप अद्भुत लख्यौ नांहिन कोय॥३॥
भक्तवत्सलता प्रगट जग में जनावन हेत।
रूपरसिक अनूप ये अवतार धरि धरि लेत॥४॥

पद

विधिना ऐसी विधि ना कीजै।
श्री मुख आप कहत श्रीपति जू अहो अटल क्यों दीजे॥
अपराधी महा अधम असुर कौ वर दैके भरमायो।
विन परनाम काम कर ता उर सोच न आयो॥
मेरौ सहूँ भक्त कौ मोपै सह्यो जात नहिं पल को।
रूपरसिकके जन दुःखवत हीं, छिनमें करौं नाश वा खलको॥

पद

ऐसी तुम हीं पैं बनि आवै।
भक्तन हित अवतार धरत हरि कबहुँ न अरस अनावै॥
सावधान सब समें स्वजन के विघन अनेक नसावै।
रूपरसिक ऐसे गुन जाके न्याय भक्त जन गावै॥

श्रीवामन-जन्मोत्सव

राग सारंग

प्रगटे वांवन जन मन भांवन ।
संकंदन कौ सोक सिरावन नृपबलि सुजस बढांवन ॥
मास भाद्रपद सुकल द्वादसी मधि दिन श्रवन सुहांवन ।
कस्यप अदिति आसपद अवतरि कियो तृलोकहिं पावन ॥१॥
भक्तवस्यता जगत जनांवन जनांनंद उपजांवन ।
रूपरसिक त्रयताप नसांवन सुरसरिता दरसावन ॥२॥

पद

पधारे नृप बलि कें दरवार ।
महाराज एक पंडित आयौ जाय कही प्रतिहार ॥
अति अभिरांम स्यांम सुंदर वपु वांवन वेद उचार ।
मोसों कही जाय गुदरावौ आयो भिक्षुक द्वार ॥१॥
सुनत वचन राजा ततछिन हीं कियौ आय सतकार ।
दोउ कर जोरि पुलकि तन पूछत कहौ कृपा-कूपार ॥२॥
कहा नांम किहि ठांम विराजत, किंहिं कारन पग धार ।
मेरे भूरिभाग कोउ जागे दरस दियौ ब्रह्मचार ॥३॥
सुनि बोले बांवन वपुधारी धरि उर बडौ विचार ।
मैं अनाथ कहा नांम ठांम कहाँ सुनो नृपति निरधार ॥४॥
तीन पैंड़ वसुधा मोहि चहियें और न चाह हमार ।
रहों तिहारें द्वार रचि कुटी सो दीजे दातार ॥५॥
राजा कहै कहा तुम माँग्यो मो सौ पाय उदार ।
और कछु जाचौ जो जिय में मेरें भरे भंडार ॥६॥
नां नृप मेरें और कामना याही में सुख सार ।

दियौ जाय तौ देहु दया करि कें करि देहु न कार ॥७॥
सुनि बलिराय विप्र के बैनां लियो हाथ जलझार ।
तबहि सुक्र गुरु पकरि लियौ कर नृपकौ जानि बिगार ॥८॥
अहो भूप भरमों न जियें यह बांवन रूप निहार ।
सुरपति हित करिबे कौं प्रभु आये यह बपु धार ॥६॥
कहें नृपति बलि सुनों सुक्र गुरु जो जग के करतार ।
मेरे गृह आये भिक्षुक ह्वै होंन नटौं इंहि बार ॥१०॥
प्रभु प्रतिकूल कहे जो कोउ तिन की बात असार ।
जांनि नृपति संकल्प करायौ भये बांवन बिस्तार ॥११॥
सब ब्रहमंड कियौ डग द्वै ही रही एक पगवार ।
सो ल्यावौ सतवादी राजा के जावो सत हार ॥१२॥
राजा कहें सुनो प्रभु मेरे मैं ठाढौ अगवांर ।
मेरी पीठि मांपि अब लीजे दीजे दोष निवार ॥१३॥
ब्रह्मा कहें अहो प्रभु अब तौ ढरो दया रस ढार ।
करत सदा आये या कुल पर अति अनुकंप अपार ॥१४॥
पुनि बोली बंझ्यावलि• रांनी मृदुवांनी रुचिकार ।
तुम्हरी लीला तुमहीं जानों तृभवन के भरतार ॥१५॥
धर्यो तीसरो चरन पीठि पर बलि पठयौ पातार ।
रूपरसिक प्रभु कौ पवित्र जस अति सुदेस सुभकार ॥१६॥

पद—प्रभुजी मेरो अंग कठोर ।
तापर चरन धर्‍यौ तुम कोमल कसकत है हिय मोर ॥
इतनों कर (न) पर्यो क्यों स्वांमी तुमते को सर जोर ।
मुख ही तें कहि देते मोकों नहि तजि देतो ठौर ॥१॥

• विंध्यावली ।

यह प्रभु की लीला ही कोऊ ताकौ ओर न छोर।
रूपरसिक भक्तन कें कारन करत नहीं कृत थोर ॥२॥

पद

प्रभु जी अब निज बचन सम्हारौ।
तेरें द्वार रहूँ रचि कुटिया सो पन किन प्रति-पारौ॥
आप अनाथ कह्यौ श्रीमुख तें नांउन ठाँउ हमारौ।
जो जिय जांनि परी सब ही अब अद्भुत चरित तिहारौ॥१॥
सेस सहस मुख गावत हैं तौउ पावत नाहिन पारौ।
रूपरसिक जनकौ हित धरि चित लेत अमित अवतारौ॥२॥

पद

नृप तू साँचौ भक्त हमारौ।
आतम सहित समर्पन कीनों तोतें को अधिकारौ॥
जाऊँ कहाँ तो से कों तजि कें कृत्य कियौ बहु भारौ।
रूपरसिक जन मोहि भजें जे तिन तें तनक न न्यारौ॥

अन्य छापों वाले कुछ पद

रुचिर रंग हिंडोरनां पर स्यांमां स्यांम झूलें।
देखि देखि जुगल रूप रतिपति गति भूलें॥
सुखद भूमि सुहांवनी अति हरित रंग छाई।
तापर डोलत इंदु वधू रंग लगति हैं सुहाई॥
वृन्दावन सघन कुंज नांनां द्रुम फूले।
अलिकुल गन लंपट अति गुंजत अनुकूले॥१॥
चात्रक रव कोकिल सुर मोर मिलत बोलें।
एणि हंस श्रवनन सुनि छंद छंद डोलें॥
जमुनां मंद गरजनि सुनि मोर हास लाजें।

ताकें निकट अमर बिटप तरल सरल राजें ॥२॥
हृदजल संमिलत ललित साखा बिस्तारी।
तातर रंग हिंडोरनां पचि रच्यौ है सुत धारी॥
बरन बरन कुसमन की लूंबनि कर लूंबें।
आस पास सखि समूह झोटनां कों झूबें॥३॥
बैठे दोऊ कुंवरि कुंवर झूलत अनुरागे।
श्रमकन की झलकनि लखि त्रिविध पवन बागे॥
सरस मच्यौ रंग रच्यौ सच्यौ प्रेम भीनों।
स्यांमां के मन की जांनि स्यांम बीन लीनों॥४॥
बज्यौ मलार देत तार प्यारी संग गांवें।
तांन मांन सहित गांन जुवतिन मन भांवें॥
तैसोई सुर मिलित ललित जुवतिनु मिलि गायौ।
सुनि कें आंनंद पाय घुंमडि मेघ आयौ॥५॥
सुलप मंद मंद बूंद परत हैं सुखारी।
चपला अति चपल मांनों देत अंगवारी॥
ऐसौ ध्यांन दासी बिन नेंक न कोउ पावें।
या सुख की वैष्णुदास कहत न बनि आवें॥६॥

हिंडोरें झूलत हैं पिय प्यारी।
पिय घनश्याम पीतांबर ओढें प्यारी पचरंग सारी।
नव कुसुमन को रच्यौ हिंडोरा नव नव लूंब सँवारी॥
नव दुलहनि बृषभांन नन्दनी नव दूलह गिरधारी॥१॥
नव रव राग मलार सुनावें नवल सबै ब्रजनारी।
नवल किसोर जोर छबि ऊपर वैष्णुदास बलिहारी॥२॥

वंसावली

ढाढी ढाढन लीला के पद

बोहा-वंदों संत समूह सब, लीला रस सर मीन।
जिनकें हित रस द्रवत है, रसपति होय अधीन ॥१॥
जे गायक कुल गोप के वात्सल रस रत जोय।
तिनकी पद रज सीस मम, वंदन भूषन होय ॥२॥
वांनी उनके बदन की, हंसारूढ प्रवीन।
तिनके पद वंदन करौं लिये रहत कर वीन ॥३॥
रसिक भक्त रस रमण के विघन निवारत सोय।
वह गणनायक वंदि हों, वुद्धि विमल वर होय ॥४॥
जात करम उत्सव समें ढाढी वरनत वंस।
गोपराज के सुजस कछु करत वंस परसंस ॥५॥

पद-जन्म महोत्सव नंदराय कें जसुमति धोटा जायो हो।
सुनत सुमंगल जहाँ तहाँ तें ढाढी मिलि मिलि आये हो॥
नाचत गावत हुरक वजावत केऊ सुजस सुनांवें हो।
केऊ अवतार जन्म पूरवले विविध भांति दुलरावें हो॥
केउ उत्कंठित वहुत दिनन के श्रुति सम्रृति ल्यौ लागी हो।
जे आये रघुकुल के ढाढी बोलत हैं वडभागी हो॥
अपनी अपनी मति अनुमांनें सवहिनु सुजस सुनायौ हो।
गोप वंस ढाढी को अगुआ इंहि औसर इहाँ आये हो॥६॥

अगुआ का पद

अगुआ कहें सुनो हो ढाढी बोलत हौ मन भाये हौ।
जो जानत हैं कुल परनाली सो ढाढी अव आये हौ॥
नांचे गाये गोप रिझाये, परंपरा कहा जांनें हौ।

जो जाचक पियरे तंदुल कौ सो भला वंस बखांनें हौं॥
इनकों दान बहुत देहु नंद जू ए आसा करि आए हो।
तेरें कुल मंडन कैं जनमत जग पावन जस गाये हो।
विविध भाँति के सुजस बखानें वेद पुरानन गाये हो॥
अब घर की गोंहरि के ढाढी सुकवि सिरोमनि आये हो।

ढाढी आगमन पद

हूँ ढाढी सब गोप वंस कौ, सुकवि सिरोमनि नाम जू।
मेरौ सुकवि सिरोमनि नाँम जू, मेरे विमलमती यह बाँम जू॥
हम ज्ञांन गुनी के जाँम जू, हम आये गोप पति धाँम जू।
इहाँ प्रगटे कुलमनि लाल जू, मिलि गावत मंगल गाल जू॥
हम मुख लखि भये निहाल जू, ये सबहिन के प्रतिपाल जू।
हम उमँगे अंग न माये जू, उर आनंद मोद बढाये जू॥
सुनिलीजे श्रवन सुहाये जू, तेरे बड़ेन कौ जस लाये जू।
तेरे बडे बडे महाराजा जू, पुरवन मन के सब काजा जू॥
भये परम पुंण्य की पाजा जू, ए सबहिन के सिरताजा जू।
हूँ ढाढी सब गोप वंस कौ मेरौ सुकवि सिरोमनि नांम जू॥
विमलमती ढाढनि कौं कहिये ज्ञांनगुनी के जाम जू।
गोवर्धन ढिंग सदा रहत हौं परंपरा चलि आये जू॥
जब जब मंगल भयो घोष में तब तब सुजस सुनाये जू।
नंद महर घर महा महोत्सव सुनि कें धायो वेग जू॥
विमल वंस जस गाय सुनाऊँ बहुरि मांगि हौं नैग जू।
प्रगट भयो महाबाहु नृपति तें वंस अहीर पुनीत जू॥
धरम नेम कुल कौ कृत सब ही चलत वैस्य की नीत जू।
राज वंस मरजादा सागर लीला ललित न ह्वै हैं जू॥

इंहि कुल में सब रसिक सिरोमणि रसमाधुरता च्वै हैं जू ॥
तातें नीच ढरनि जिनि जांनों यह सबोंपरि राजें जू ।
स्वर्ग तें सुरसरि चली रसातल जगपांवन के काजें जू ॥
महाबाहु कें कंजनाभ जू जाके सुजस अपारा जू ।
नारायन सम उपमां जाकी कीरति को विस्तारा जू ॥
कंजनाभ कें लोभचित्र जू जाके गुन को जांनें जू ।
महाधीर धर धरमी धनपति महिमां जगत बखांनें जू ॥
लोभचित्र सुत भये सेन जू जाके सम कोउ नांहीं जू ।
वाकौ कुल पंकज सौ फूल्यौ सुधासिंधु जगमांही जू ॥
सेनराय कें देवमीढ जू परम इष्ट जिहिं धार्यौ जू ।
पूजे श्रीलछमीनारायण प्रीति सहित पन पार्यौ जू ॥
तातें वर पायौ अति नीकौ तीन पुत्र बडभागी जू ।
अरथ धरम कांम तन धार्यौ लीला रस अनुरागी जू ॥
प्रथम पुत्र परजन्य मेघ सम, ताकें बरेयसी रांनी जू ।
ताकी कुक्षि विषें परमांनंद भये नंद बड दानी जू ॥
मध्य पुत्र परजन्य गोप बड, नडी नामनी रांनी जू ।
अति वात्सलिता जसुमति ऊपरि वारि वारि पिवें पांनी जू ॥
राजन्य गोप ल्हौरे दोउन तें पतनी सूरा पांई जू ।
मोद सहित बहुतक धन दीनों जसुमति व्याह बधाई जू ॥
भ्राता तीन सुजन्या भगनी जो व्याही गुर बीर जू ।
सो मांमा वृषभांन राय कौ महाधनी मति धीर जू ॥
परजन्य गोप कें रांनी बरीयसी पाँच नंद जिहिं जाये जू ।
च्यारि नंद भये उपपत्नी कें नंद नांम सब पाये जू ॥
ए नव नंद बंदि तिहुँपुर में महिमां परत न जांनी जू ।

नांम करम लीला बन गहवर भूले सुर मुनि ज्ञांनी जू ।।
श्री उपनंद बड़े सब ही तें जाकें तुंगी रांनी जू ।
प्रेम कृपा वात्सलिता सबपरि अति प्रवीनि मृदु बांनी जू ।।
श्री अभिनंद कंद सब सुख के पिवरी रांनी जाकें जू ।
कामधेन चिंतामनि सुरतरु सदा बसें ग्रह ताकें जू ।।
श्री नंदराय रूप परमांनंद प्रेम पुंज सुख सागर जू ।
जाकें ग्रह रांनी श्री जसुमति मुक्त रूप गुण आगर जू ।।
सुठि सुनंद सब संपति संपन्न तिन कें कुवला नारी जू ।
परम चतुरि जसुमति मन हरनी अनुवरती अधिकारी जू ।।
श्री अतिनंद अमित रिधि जाकें रांनी तुल्या सोहैं जू ।
जसुमति की ल्हौरी द्यौरांनी बहुत विनैं मन मोहैं जू ।।
धरानंद भुवनंद भाग भर इनि की सम कोउ नांही जू ।
करमानंद धरमानंद सुखनिधि अति जस जग बड मांही जू ।।
ए नवनंद नंदिनी भगनी जाकों भरता नील जू ।
बहुत विभो सोभा सुख संपन प्रेमी परम सुसील जू ।।
सर्व सिरोमनि नंदराय जू जसनिधि जसुमति रांनी जू ।
इनि की भाग बडाई महिमां कापैं परत बखांनी जू ।।
जिन कें कुल मंडन सुत जायौ ताकौ नांम लिखावौ जू ।
नेग देहु अभिमत पद दाता लालहिं मोहि दिखावौ जू ।।
रीझि नंद बहुतक धन दीनों ताकी गणनां नांहीं जू ।
रतन बसन मनि भूषन मुक्ता सिमिटि कापैं जांहीं जू ।।
बडे सकट भर तें जो उबर्यौ बाँधि गठरिया लीनी जू ।
वैष्णुदास चेरौ ढाढी कौ ताकें सिर गहि दीनी जू ।।

श्रीवृषभान वंसावली

श्री वृषभांन कौ वंस कहत हैं ढाढी सुकवि सुहायौ जू।
करन सुमंगल हरन दुसह दुख वेद पुरानन गायौ जू॥
प्रथम भये महावाहु भीम जू, जाकी जग में आंण जू।
अति बलवांन सकल गुन संपन सुजसमं बड भाण जू॥१॥
भीम नृपति कें भये जूपजू ज्ञांन जज्ञवर जूप जू।
ताकौ विभौ प्रताप निहारत लज्जित ह्वै वड भूप जू॥२॥
जूपराय कें भये दयानिधि जु बहुत दया हियें ताकें जू।
तिनकें धर्मधीर भये गुणनिधि विभौ न्यूंन कछु ताकें जू॥३॥
गोवर्धन पर करी तपस्या सिवे दीनों वरदांन जू।
धर्मधीर तातें अति पाई संपति धनद समांन जू॥४॥
धर्मधीर कें भये भुव भूषन सुंदर सब मन भाये जू।
तातें भुव सोभित अति नीकी नांम जथा गुन पाये जू॥५॥
भुव भूषन कें महीभांण जू प्रभा भान सम जाकी जू।
सुखदा पतनी अति सुख दाता, कृत्ति कलपतरु ताकी जू॥६॥
तिनकें श्रीवृषभांन प्रगट भये सुजस भांन तें अधिकौ जू।
इन कौ विभौ देखि कें डगरयौ जस रिधि अरु निधि सिधिकौजू॥७॥
तिन कें श्रीकीरतिद्रा रांनी इंदु गोप की जाई जू।
महतारी मुखरा मुख निरखति निकट रहत सुखदाई जू॥८॥
श्रीकीरति कें कंन्या ह्वै हैं अति सुंदरि मन भाई जू।
ताकी महिमां अमित अमित कहि वेद पुरांनन गाई जू॥९॥
सोम वंस में प्रगट भयौ है वड जस वल्लव वंस जू।
तिन के गुन ढाढी वरनत हैं वैष्णुदास अवतंस जू॥१०॥

ढाढी कें संग ढाढनि गावें बोलत दान बखांन जू।
जो जो पायौ नंदराय घर बहुरि दियौ वृषभांन जू॥
श्री नंदराय जसुमति जब ब्याही दीनी बहुत बधाई जू।
कंचन मणि भूषण जुत सुरभी गिनी कौंन पें जाई जू॥१॥
श्रीवृषभांन दांन बहु दीनौ सुबल कुँवर कें जाये जू।
बसन रतन मुक्ता आभूषन सुरपति देखि लजाये जू॥२॥
जसुमति बोल लई ढाढनि कौं रीझि बहुत कछु दीनों जू।
अवलोकिक भूषन मनि मुकता जर तारी पट झीनों जू॥३॥
कीरतिदा दीनों ढाढनि कौं रतन जटित कौ बैनां जू।
ताकें ढिंग मुकता लर सोहें ज्यों उडपति उड सेंना जू॥४॥
द्रव्य अपार दयौ सब गोपन मेरे मन नहिं भावें जू।
जब जानूं गोने गनि बेरयौ लालहिं मोहि दिखावें जू॥५॥
लाल दिखांवन कह्यौ नंद जू जबहि प्रेम में भीज्यौ जू।
वैष्णुदास कौ स्वांमी सुकवी बदन देखि अबरीज्यौ जू॥६॥

हमारे कुछ प्रकाशन—

श्रीयुगल-शतक—यह आदिवाणीकार श्री श्रीभट्टदेवाचार्यजी की सरस एवं माधुर्यपूर्ण कृति है। में श्रीयुगल से सम्बन्धित सेवाओं तथा लीलाओं के एक-सौ पदों के साथ-साथ गम्भीर विवेचन-पूर्ण का भी है। सजिल्द २)

सेवा-सुख—यह श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी की महावाणी का प्रथम सुख है। इसमें श्रीयुगल की कालीन सेवा के बहुत ही सुन्दर एवं सरस पद हैं। भावुक रसिक भक्तों के लिये यह नित्य पाठ करने वस्तु है। न्यौ० १)

सिद्धान्त-सुख—यह भी सेवा-सुख के समान ही श्री हरिव्यासदेवाचार्यजी की महावाणी का तम सुख है। इसमें श्रीवृन्दावन की निभृत निकुञ्जों और योग-पीठ के वर्णन के अतिरिक्त सखियों के , सेवा, कुञ्ज और उनकी तालिका का भी सरस पदों में उल्लेख है। न्यौ० १)

लीलावशति एवं नित्यविहार पदावली—यह श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी के शिष्य श्रीरूपरसिक-ाचार्यजी द्वारा रचित श्रीश्यामा-श्याम की लीलाओं से गुम्फित एक सुन्दर-सरस कृति है। इसमें लीलाओं दों के अतिरिक्त नित्य-विहार के भी माधुर्यपूर्ण अनेक पद हैं। न्यौ० १)

श्री गीतामृत-गङ्गा—श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी द्वारा विरचित चौदह घाटों वाला यह सुन्दर सरस ादेय ग्रन्थ है; इसके पदों में विशेष आकर्षण है। न्यौ० १)

वृन्दावनाङ्क—इस विशेषाङ्क में सभी सम्प्रदाय के आचार्यों की श्रीधाम के प्रति अगाध श्रद्धा, ावनस्थ महापुरुषों के पावन चरित्र, श्रीवृन्दावन के मन्दिरों का परिचय, श्रुति,स्मृति, पुराणादि शास्त्र सन्त-वाणियों द्वारा वर्णित श्रीवृन्दावन का स्वरूप और माहात्म्य आदि वृन्दावन-सम्बन्धी सामग्री ्र है। न्यौ० ३)

धार्मिक-जगत् का अभूतपूर्व, शोधपूर्ण एवं परम उपादेय

श्री सर्वेश्वर का विशेषाङ्क—

भक्तमालाङ्क

★

श्री सर्वेश्वर का यह विशेषांक सुन्दर, सरस और सरल भाषा में मनोहर भक्त-चरित्रों और ाओं से युक्त, विभिन्न प्रकार के अनेकों तिरंगे एवं सादे चित्रों से सुसज्जित, ऐतिहासिक तथा शोधपूर्ण ामग्री से समन्वित एवं ग्लेज कागज पर मुद्रित एक हजार पृष्ठ का बृहत्काय-ग्रंथ है। इस महापुनीत अद्वितीय अङ्क का संग्रह भावुक भगवत्-प्रेमी भक्त-महानुभावों को तो अलौकिक आनन्द प्रदान करेगा ही साथ ही इसके खोज पूर्ण विवेचनों और समीक्षाओं ने इसे विद्वत्समाज के लिए भी परम उपादेय और संग्रहणीय बना दिया है।

न्यौ० लागत मात्र १०) रु० डाक व्यय पृथक्

व्यवस्थापक—

"श्रीसर्वेश्वर"

श्रीनिकुञ्ज प्रताप बाजार, वृन्दावन।